रविदासिया धर्म
एवं
हरि का निशान

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

प्रकाशक :
डेरा संत सरवण दास जी
सच्चखण्ड बल्लां, जालन्धर (पंजाब)

रविदासिया धर्म
एवं
हरि का निशान

समर्पण

जगत्‌गुरु सतगुरु रविदास महाराज जी के
635वें आगमन पर्व
एवं
रविदासिया धर्म के तीसरे स्थापना दिवस को

प्रकाशक :
डेरा संत सरवण दास जी
सच्चखण्ड बल्लां, जालन्धर (पंजाब)

लेखक : राजेश कैंथ भबियाणवी
गांव व डा॰ भबियाणा, ज़िला कपूरथला

हिन्दी अनुवाद : सुखविंदर कौलधार

प्रथम हिन्दी संस्करण, संख्या : 2000

इस पुस्तक की सेवा संत सरवण दास वैल्फेयर सोसाइटी
यूरोप द्वारा की गई।

मूल्य : 30 रु॰

छापक : रवि प्रकाश प्रिंटिंग प्रैस,
मुहल्ला सुन्दर नगर, जालन्धर। फोन : 0181-2611697

(1) हमारा रहबर	:	सतगुरु रविदास महाराज जी
(2) हमारा धर्म	:	रविदासिया
(3) हमारी धार्मिक पुस्तक	:	अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी
(4) हमारा कौमी निशान साहिब	:	
(5) हमारा सम्बोधन	:	जै गुरुदेव
(6) हमारा महान् तीर्थस्थान	:	श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)
(7) हमारा उद्देश्य	:	सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना।
	:	सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना।

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

जगत्गुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य :-

- **प्रकाश दिवस :**
  माघ सुदी पंद्रास 1433 विक्रमी
  सम्वत् सन् 1377 ई०।
- **जन्म स्थान :**
  ग्रामः सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)
- **माता-पिता जी के नाम :**
  पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी
  माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी
- **दादा-दादी जी के नाम :**
  दादा जी- पूजनीय कालू राम जी।
  दादी जी- पूजनीय लखपती जी।
- **सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम :**
  सुपत्नी पूजनीय श्रीमती लोना देवी जी।
  सपुत्र पूजनीय श्रीमान विजय दास जी।
- **ब्रह्मलीन :**
  आषाढ़ की संक्रांति 1584
  विक्रमी सम्वत् (1528 ई०) बनारस में।

TRADE MARKS REGISTRY — REGISTRATION CERTIFICATE

Trade Marks Act 1994 of Great Britain and Northern Ireland

The mark shown below has been registered under No. 2318217 as of the date 09 December 2002.

The mark has been registered in respect of:

Class 35:
Advertising services, provided via the Internet, television and radio; business management, and office functions; public relations services.

Class 41:
Providing educational training, entertainment and cultural activities.

Class 42:
Providing industrial analysis and research services; design and development of computer hardware and software, which includes installation, maintenance and repair of computer software and design, drawing commissioned writing for the compilation of web sites; creating, maintaining and hosting web sites services.

In the name of Sri Guru Ravidass International Organization for Human Rights

The mark on this certificate was filed in colour and is reproduced here in colour. It has been scanned as accurately as our equipment allows but you should refer to the application form, which is available for public inspection, and any colour standard provided by the applicant to determine the exact colour(s).

Signed this day at my direction

ALISON BRIMELOW, REGISTRAR
DATE 14 November 2003

THE COPYRI[illegible] ACT, 1957

(REPRE[illegible]TION)

विषय सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ
1.	आशीर्वाद	8
2.	दो शब्द	9
3.	हरि की अद्भुत महिमा	11
4.	लेखक द्वारा	13
5.	हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे	15
6.	डेरा संत सरवण दास सच्चखण्ड बल्लां का इतिहास	16
7.	डेरा सच्चखण्ड बल्लां द्वारा चलाए जा रहे प्राजैक्ट	26
8.	नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चमारं	37
9.	रविदासिया धर्म और हरि का निशान	53
10.	अमृतवाणी सतगुरु रविदास जी	55
11.	रविदासिया धर्म	58
12.	हरि सो हीरा छाडि कै	61
13.	एक बेनती हरि सिउ	66
14.	चल मन हरि चटसाल पढ़ाऊं	71
15.	सतगुरु रविदास जी की अमृतवाणी में हरि की महिमा	75
16.	शादी उपदेश	82
17.	अमृतवाणी में उच्चारण की आरती में हरि का महत्व	85
18.	महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी के जीवन में हरि की महिमा	90
19.	हरि हरि नाम जपदिया कदे ना आवे हार	91
20.	हरि दुखों का निवारन	95
21.	हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे	97
22.	हरि सिमरै सोई संत विचारो	98
23.	डेरा सच्चखण्ड बल्लां द्वारा प्रकाशत पुस्तकें	103

आशीर्वाद

धन्य-धन्य जगतगुरू रविदास महाराज जी ने भूली-भटकी मानवता को सत्य का मार्ग दिखाया और मानव प्रेम, सद्भावना, हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश बख्शिश किया। कुल लोकाई के कल्याण के लिए बेगमपुरा का संकल्प दिया। उनकी अध्यात्मिक सर्वोच्चता और मानव कल्याण के पावन उपदेशों के कारण सभी वर्गों के लोगों ने उनकी शरण में आकर जीवन सफल किया।

जगतगुरू रविदास महाराज जी के 633 वें प्रकाशपर्व पर संत समाज और लाखों संगतों की उपस्थिति में रविदासिया धर्म का ऐलान हुआ, अमृतवाणी के प्रकाश हुए। रविदासिया कौम को विश्व स्तर पर पहचान मिली। जगतगुरू रविदास महाराज जी ने इस सदी के सबसे विशाल चंद्रमा में प्रकट होकर संगतों को दर्शन दिए। रविदासिया धर्म का प्रसार-प्रचार विश्व स्तर पर हो चुका है। डेरा सच्चखंड बल्लां के महापुरूáों ब्रह्मलीन श्री 108 संत बाबा पिप्पल दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत सरवण दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी ने जगतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाया।

डेरे द्वारा जगतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों वी.सी.डी., फिल्में, पुस्तकें आदि प्रकाशित करके संगतों को भेंट कीं। राजेश भवियाणवी की पुस्तक 'रविदीसया धर्म एवं हरि का निशान' भी इसी श्रृंखला में आती है, जिसमें उन्होंने जगतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी में 'हरि' की महिमा का गुणगान किया है और रविदासिया धर्म के नियमों को ब्यान किया है, संगतें इससे अति लाभ प्राप्त करेंगी। जगतगुरू रविदास महाराज उस पर इसी प्रकार कृपा बनाए रखें।

संत निरंजन दास
चेयरमैन,
श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट (रजि.)
वाराणसी
गद्दी नशीन - डेरा सच्चखंड बल्लां, जालंधर, पंजाब।

दो शब्द

प्रेम पंथ की पाल्की रविदास बैठियो आय।
साचे सामी मिलण को अनन्द कहियो न जाये।।

धन्य-धन्य जगतगुरू रविदास महाराज जी, जिन्होंने इस संसार में आकर सब जीवों को एकता, सद्भावना, भाईचारे, मानव प्रेम, संतो की संगति करने व हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया। जहां जगतगुरू रविदास महाराज जी ने सदियों से प्रताडित समाज में आकर इसके सभी बंधन काटे, वहीं साथ ही मानव विरोधियों को सत्य उपदेश बखशिश कर-

सतसंगति मिल रहिये माधो जैसे मधुप मखीरा।।

विश्व भाईचारे का पावन उपदेश दिया और पूर्ण विश्व को बेगमपुरा वतन बनाने का संकल्प दिया। ऐसे महान् क्रांतिकारी जगतगुरू रविदास महाराज जी का आगमन माघ 1377 ई. 1433 बिक्रमी संवत को सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी (यू.पी.) में आदरणीय पिता संतोख दास जी और आदरणीय माता कल्सी जी के गृह में हुआ। आप जी ने समानता स्थापित करने के लिए चारों युगों के जंजू दिखाने के उपरांत सूत का जनेऊ भी उतार दिया। उन्होंने वैसाखी के ऐतिहासिक पर्व के दिन गंगा घाट पर पत्थर तैराए व राजा कुम्भा और रानी झालां बाई के दरबार में अनेकों रूप धारण कर, संगति-पंगति की प्रथा प्रचलित की। आप जी ने जीवनकाल का अधिकतर समय उदासियां करके, सब जीवों को सत्य के मार्ग पर चलने का पावन उपदेश दिया। आप जी के पावन चरण कमलों में बहुत से राजा-महाराजा व सभी वर्गों के लोगों ने झुककर अपना जीवन सफल किया। आषाढ की संक्रांति 1584 बिक्रमी संवत 1528 ई. को आप जी बनारस में ज्योति-जोत समाए। लगभग 600 वर्ष पश्चात् डेरा श्री 108 संत सरवण दास सचखंड बल्लां के महान महापुरूषों ब्रह्मलीन बाबा पिप्पल दास जी महाराज, ब्रह्मलीन सतगुरू स्वामी सरवण दास जी महाराज, ब्रह्मलीन सतगुरू स्वामी हरी दास जी महाराज, ब्रह्मलीन सतगुरू स्वामी गरीब दास जी महाराज, मौजूदा गददी नशीन सतगुरू स्वामी निरंजन दास जी महाराज और कौम के महान् अमर शहीद संत रामानंद जी महाराज ने जगतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा को पूरे विश्व में पहुँचाया। जगतगुरू रविदास महाराज जी का फरमान है-

रविदास सोई साध भलो, जउ रहइ सदा निरवैर।
सुखदायी समता गहइ सभनह मांगहि खैर।।

ऐसे महान परोपकारी, तपस्वी, ब्रह्मज्ञानी सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी, जिन्होंने श्वास-श्वास ईश्वर का सिमरन किया और सांसारिक जीवों को प्रभु सिमरन करवाया। आप जी सदैव संगतों को विद्या पढने व माता-पिता की सेवा करने, बडों का आदर करने, छोटों संग प्रेम करने, संतों की संगति करने व हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया करते थे। सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने गांव बल्लां में तपोस्थान का निर्माण

करवाया और उस पर 2 फरवरी 1964 को 'डेरा रविदासियां दा' लिखकर समाज की पहचान को अग्रसर किया। सतगुरू सरवण दास महाराज जी ने, सदियों के बाद, अपनी कृपा दृष्टि से जगतगुरू रविदास महाराज जी के पावन जन्म-स्थान की खोज की और आषाढ की संक्रांति को संत हरी दास महाराज जी द्वारा शिलान्यास रखवाये और संत गरीब दास महाराज जी द्वारा निर्माण कार्य करवा कर समाज को एक महान् तीर्थ स्थान बख्शिश किया और उच्चारण किया कि इस महान् पावन स्थान पर संगतें विश्व स्तर पर एकत्रित हुआ करेंगी। संत निरंजन दास महाराज जी और ब्रह्मलीन संत रामानंद महाराज जी ने इस दरबार पर स्वर्ण कलश सजाऐ और इसे सम्पूर्ण रूप से स्वर्णमण्डित करने के कार्य प्रारंम्भ किए।

24 मई 2009 को मानव विरोधियों ने श्री गुरू रविदास मंदिर वियाना में श्री 108 संत निरंजन दास जी और श्री 108 संत रामानंद महाराज जी पर हमला किया। जिसमें 25 मई को प्रातःकाल के समय श्री 108 संत रामानंद महाराज जी रविदासिया कौम के लिए शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए। रविदासिया कौम ने पूरे विश्व में रोष प्रकट करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। 20 करोड से अधिक संख्या में रविदासिया कौम को जगत्गुरू रविदास महाराज जी के 633वें प्रकाशपर्व पर हजारों की संख्या में संत समाज और लाखों की संख्या में श्रद्धालु संगतों की उपस्थिति में महान् तीर्थ स्थान श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर से 'रविदासिया धर्म' के नाम से अलग पहचान मिली और सतगुरू रविदास महाराज जी ने इस सदी के सबसे बडे चंद्रमा में से संगतों को दर्शन देकर आर्शीवाद दिया। 'रविदासिया धर्म' का प्रचार व प्रसार पूरे विश्व में हो चुका है और 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' के प्रकाश पूरे विश्व में हो चुके हैं। डेरा श्री 108 संत सरवण दास सचखंड बल्लां द्वारा रविदासिया धर्म, सतगुरू रविदास महाराज जी की शिक्षाए और डेरा सचखंड बल्लां के महान महापुरूषों के जीवन व अमृतवाणी के गुटके-किताबें, वी.सी.डीज आदि संगतों को भेंट की गईं हैं। डेरे की ओर से 50 विद्वानों को रविदासिया समाज को दिए योगदान के लिए स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया है।

सतगुरू श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज के आशीर्वाद से लेखक राजेश कैंथ ने 'रविदासिया धर्म एवं हरि का निशान' पुस्तक कडे परिश्रम व लगन के साथ लिखकर रविदासिया धर्म के प्रसार व प्रचार में बहुमूल्य योगदान दिया है। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सुखविंदर कौलधार ने किया और इसका वाक्य शुद्धिकरण सरबजीत कौर ने किया। संगतें इससे अहम् लाभ प्राप्त करेंगी। जय गुरूदेव।

गुरू चरणों का दास :

संत सुरिन्दर दास बावा

वाईस चेयरमैनः श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान

पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट(रजि.) वाराणसी

हरि की अद्‌भुत महिमा

हरि सो हीरा छाडि के करहि आन की आस।
ते नर दोजक जाहिंगे सति भाखै रविदास।।

जगतगुरू रविदास महाराज जी ने सभी जीवों को हरि रूपी हीरे की पहचान करके अमूल्य जीवन को सफल करने का पावन उपदेश बख्शिश किया है। सतगुरू जी के कल्याणकारी उपदेश को श्रवण करके सभी वर्गों के लोग सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन चरणों में झुक गए और अपना जीवन सफल किया। डेरा सच्चखंड बल्लां के महान महापुरूषों ब्रह्मलीन श्री 108 बाबा पिपल दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 सतगुरू स्वामी सरवण दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी और मौजूदा गददी नशीन श्री 108 सतगुरू स्वामी निरंजन दास जी और रविदासिया कौम के महान् अमर शहीद ब्रह्मलीन श्री 108 संत रामानंद महाराज जी की अपार कृपा से संगतों तक जगत्‌गुरू रविदास महाराज जी का पावन उपदेश पहुँचा रहा हैं।

डेरा सच्चखंड बल्लां जालंधर, पंजाब दीर्घ काल से सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन जीवन व विमल वाणी के प्रचार व प्रसार में कार्यशील है। 'रविदासिया धर्म' की स्थापना के साथ-साथ धार्मिक ग्रंथ के रूप में 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' की अमूल्य देन भी इस महान् डेरे ने विश्व को प्रदान की है। स्वतंत्र धर्म के लिए निशान साहिब का होना अनिवार्य है, साधू संप्रदाय ने 1957 ई. के एकट में 'हरि' के चिन्ह को प्रवान किया गया था। जिसे देश-विदेश की सरकारों द्वारा मान्यता प्रदान की गई। रविदासिया धर्म के 22 करोड़ से अधिक श्रद्धालूयों को पूरे विश्व में इस निशान से अवगत् कराना एक मुख्य उद्देश्य बन गया है। यह कार्य एक प्रतिभावान लेखक 'राजेश कैंथ भवियाणवी' ने अति दृढ़ता से पूर्ण किया है। उसकी हस्त पुस्तक 'रविदासिया धर्म एवं हरि का निशान' ने हरि की असीम महिमा व हरि के निशान चिन्ह द्वारा पाठकों को इसके प्रति जागरूकता प्रदान की है। सतगुरू रविदास महाराज जी राग धनासरी में उच्चारण करते हैं :-

नाम तेरो आरती मजुन मुरारे।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे।। रहाऊ।।

सतगुरू रविदास महाराज जी इस अमूल्य पावन आरती में अपने इष्ट देव प्रभु हरि को संबोधन करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु आप जी के पवित्र नाम का सिमरन करना मेरे लिए संपूर्ण आरती के समान है और यही मेरे लिए तीर्थ स्नान है क्योंकि उत्कृष्ट नाम के बिना संसार के अन्य सभी बंधन काल्पनिक हैं। झूठे आडम्बरों व दिखावों का खंडन करते हुए गुरू जी अपने प्रभु प्रीतम की आरती करने के उपरांत अनूठे प्रसाद का भोग लगवाते हैं :-

कहि रविदास नाम तेरो आरती ।।
सतनाम है हरि भोग तुहारे।।

सतगुरू रविदास महाराज जी अपने परम पिता परमात्मा को उन्हीं के पावन उत्कृष्ट (सतनाम) नाम का भोग लगवाते हैं। विद्वानों व खोजकारों के लिए यह बात स्पष्ट की जाती है कि सतगुरू नानक देव जी सतगुरू रविदास महाराज जी से आयु में 92 वर्ष कम थे। सोढी मेहरबान ने अपनी पोथी सचखंड में लिखा है कि गुरू नानक देव जी महाराज समय समय पर भाई मरदाना जी से सतगुरू रविदास महाराज जी की वाणी सुना करते थे।

सतगुरू रविदास महाराज जी अपने एक शब्द में फरमाते हैं :-

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे।।
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे।।रहाऊ।।

इस पावन शब्द से और भी स्पष्ट हो जाता है कि सतगुरू रविदास जी प्रभु प्रीतम को 'हरि' के नाम से ही प्रेमपूर्वक पुकारते थे। इस बात को मुख्य मानते हुए साधू संप्रदाय ने हरि के निशान का चुनाव किया। मेरे मतानुसार यह चुनाव एकदम अनुकूल व उचित है। प्रकृति बडी महान् है। ऐसा लग रहा है जैसे पचास वर्ष पूर्व ही हमारे इष्ट देव को यह मालूम हो गया कि मेरे श्रद्धालूयों को एक अलग निशान की आवश्यकता होगी और महान अमर शहीद संत रामानंद जी की शहादत के बाद यह सोच सत्य हो गई है। रविदासिया धर्म की स्थापना के बाद अपने गुरूधामों के लिए हरि का निशान अनिवार्य होकर उभरा है। आज यह निशान जहां-जहां भी झूल रहा है, वहां-वहां पर यह निशान अपने पैरोकारों पर रहिमतें बरसा रहा है। सूर्यादय से लेकर सूर्यास्त तक हरि के निशान की पवित्र छाया जहां-जहां भी घूमती है, वह धरती वरदानों से खिल उठती है और जहां जहां भी खडे श्रद्धालुजनों की नजर हरि के निशान पर पडती है, वहीं पर गुरू रविदास महाराज जी के वरदान की खुशबू बिखर जाती है क्योंकि प्रभु प्रीतम व सृजनहार हरि का स्वरूप है। जैसे मध्यकाल (जिसे इतिहासकार अन्धा युग भी कहते हैं) में जैसे सतगुरू रविदास महाराज जी ने उत्पीडित, पिछडे व मानवीय अधिकारों से वंचित वर्ग के लोगों पर अपनी अमर व अपार शक्ति की रेखा खींची थी, उसी प्रकार आज इक्कीसवीं सदी में हरि का निशान वही कार्य कर रहा है। मौजूदा गद्दी नशीन संत निरंजन दास महाराज जी और संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रेरणा से ही हस्त पुस्तिका 'रविदासिया धर्म व हरि का निशान' में लेखक श्री 'राजेश कैंथ भवियाणवी' ने हरि का व्याख्या सहित वर्णन किया है। व्याख्या भी अति सरल भाषा में की है ताकि हर श्रद्धालु आसानी से पढ व समझ सके। कम शब्दों में बडा कार्य करने के लिए लेखक बधाई का पात्र है। पाठकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक को पढकर अत्यधिक लाभ प्राप्त कर हरि के नाम की महिमा से जीवन सफल व आंनददायक बनाएं।

सिरी राम अरश, मोब. 98884.52204

लेखक द्वारा

राजेश कैंथ भवियाणवी

जगतगुरू रविदास महाराज जी जिन्होंने संसार में आकर सब जीवों को एकता, भाईचारे, प्रभु प्रेम, सदभावना, संतो की संगति करने का पावन उपदेश दिया है और हरि की असीम महिमा को अपनी अमृतवाणी में ब्यान करके हरि के सत्य नाम से जुडकर, अपना जीवन सफल करने का सत्य मार्ग दिया है। सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन उपदेशों को संगतों तक पहुंचाने के लिए डेरा सचखंड बल्लां के महान् परोपकारी संत ब्रह्मलीन बाबा पिप्पल दास जी, ब्रह्मलीन सतगुरू स्वामी सरवण दास जी, ब्रह्मलीन सतगुरू हरी दास जी, ब्रह्मलीन सतगुरू गरीब दास जी, मौजूदा गददी नशीन सतगुरू स्वामी निरंजन दास जी, कौम के महान अमर शहीद ब्रह्मलीन संत रामानंद जी और संत सुरिन्दर दास बावा जी द्वारा किये जा रहे कार्यों से पूरा विश्व परिचित है कि कैसे सतगुरू रविदास महाराज जी के मिश्न को जन-जन तक पहुंचाने के लिए और उनकी विचारधारा को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए दिन-रात एक कर रहे हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन अमृतवाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए डेरा सच्चखंड बल्लां अग्रणीय भूमिका निभा रहा है।

सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी के पावन आर्शीवाद से व संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रेरणा के अनुसार मैं यह पुस्तक 'रविदासिया धर्म एवं हरि का निशान' पूर्ण कर सका हूं।

'रविदासिया धर्म एवं हरि का निशान' पुस्तक के अस्तित्व को देखता हूं तो संत सुरिन्दर दास बावा जी द्वारा दिए प्रोत्साहन, मार्गदर्शन व आर्शीवाद के बिना इसका अस्तित्व नजर नहीं आता। उनकी प्रेरणा से ही मैंने पहले भी दो पुस्तकें 'सतगुरू रविदास प्यारा' और 'रविदासिया धर्म साडा' लिख सका हूं। सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन चरणों में मेरी अरदास-प्रार्थना है कि वे संत निरंजन दास जी महाराज और संत सुरिन्दर दास बावा जी पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें ताकि हमारे समाज का कल्याण हो सके।

इस पुस्तक का खरडा पढने के लिए मैं संत सुरिन्दर दास बावा जी, संत लेखराज जी, सिरी राम अरश जी का अति आभारी हूं। अपने माता-पिता समूह परिवार और दोस्त-मित्रों का आभारी हूं जिन्होंने समय-समय पर सुझाव दिए। प्रिसिंपल जोगी राम जी, बेगमपुरा पत्रिका के सदस्यगण, कुमारी सीमा, श्री परवीन कुमार, श्रीमति नीलम रानी (लेक्चरार), सतपाल साहलों जी का भी अति धन्यवादी हूं। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद सुखविंदर कौलधार ने किया और हिन्दी का वाक्य शुद्धिकरण श्रीमति सरबजीत कौर ने किया।

सतगुरू रविदास महाराज जी के सत्य मिश्न पर कुछ लिख सकूं, यह मेरी तम्मना सदैव बनी रहे। सतगुरू जी सदैव सही मार्ग पर चलाए रखें व अपना आर्शीवाद देकर इस तुच्छ जीवन को मुक्ति प्रदान करें।

'तू दाना साईं साहिब मेरा, खिदमतदार बंदा मैं तेरा।।
कहै रविदास अंदेसा इही, बिन दरसन किउ जीवहि स्नेही।।

(अमृतवाणी)

राजेश कैंथ भवियाणवी
गांव व डाकखाना. भवियाणा
तहि. फगवाडा, जिला कपूरथला, पंजाब 14407
मोब. 094639.67037, 75892.55320

"हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे"

धन्य-धन्य जगतगुरू रविदास महाराज जी ने अपनी पावन अमृतवाणी में अपने प्रभु-प्रीतम को 'हरि' नाम से पुकारा है और पूरे संसार को मानवता, आपसी प्रेम, भाईचारे और एकता का संदेश देते हुए हरि के पवित्र नाम को जपने व संतों की संगति करने का पावन उपदेश बख्शिश किया है। आज पूरा विश्व भली-भांति जानता है कि जगतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए डेरा श्री 108 संत सरवण दास जी सच्चखंड बल्लां, जिला जालंधर, पंजाब के महान् संत-महापुरूषों ब्रह्मलीन श्री 108 संत बाबा पिप्पल दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 सतगुरू स्वामी सरवण दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी, ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी, मौजूदा गददी नशीन श्री 108 संत निरंजन दास जी, रविदासिया कौम के महान् अमर शहीद ब्रह्मलीन श्री 108 संत रामानंद जी और श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी दिन-रात एक करके जगतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन, रविदासिया धर्म व अमृतवाणी के प्रचार-प्रसार को बुलंदियां प्रदान कर रहे हैं। डेरा सच्चखंड बल्लां की असीम कृपा से रविदासिया कौम को उचित मार्ग दर्शन मिल रहा है जिसके फलस्वरूप रविदासिया कौम के कई विद्वान, बुद्धिजीवी, लेखक, गीतकार, कवि, गायक व चिंतक गुरू रविदास महाराज जी के मिशन में अपने-अपने ढंग से योगदान दे रहे हैं। यह सब आदरणीय श्री 108 संत निरंजन दास जी के पावन आर्शीवाद और श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी की प्रेरणा से ही है कि रविदासिया कौम के अति प्रतिभाशाली व प्रभावशाली लेखक श्री राजेश भवियाणवी जी ने जगतगुरू रविदास महाराज जी की प्रिय संगतों की सेवा में यह पुस्तक 'रविदासिया धर्म व हरि का निशान' कडे परिश्रम व लगन से तैयार कर भेंट की है, जिसमें 'हरि' शब्द व रविदासिया धर्म के प्रति संगतों को बहुमूल्य ज्ञान भेंट किया गया है। आशा है कि संगतें इस पुस्तक से आवश्य लाभ प्राप्त करेंगी।

डेरा सच्चखंड बल्लां के महान् महापुरूष श्री 108 संत निरंजन दास महाराज जी और श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी का मैं अति आभारी हूं जिनके पावन आर्शीवाद व असीम कृपा से इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर पाया हूं और साथ ही लेखक द्वारा किये गए इस विशेष कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं। जगतगुरू रविदास महाराज जी के पावन चरणों में प्रार्थना करता हूं कि वे श्री राजेश भवियाणवी जी को अपना आर्शीवाद यूं ही देते रहें ताकि वे अपनी सोच व कलम द्वारा जगतगुरू रविदास जी के मिशन में सदैव अपना योगदान देते रहें। श्रीमति सरबजीत कौर जी ने इस पुस्तक का वाक्य शुद्धिकरण किया है, जिसके लिए में उनका आभारी हूं। दास हिन्दी अनुवाद करते समय हुई किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए क्षमा याचक है।

जय गुरूदेव।

सुखविंदर 'कौलधार'
आदमपुर, जिला जालंधर। 97814-37332

डेरा 108 संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां

यह पवित्र धरती महान् तपस्वी, परोपकारी, दीर्घदर्शी, तत्त्ववेत्ता, ब्रह्मज्ञानी, नाम वाणी के रसिया और दुखियों के हमदर्द महापुरुषों का स्थान है। आज तक निम्नलिखित महापुरुषों ने इस दरबार के गद्दी नशीन होकर सेवा की :

श्री 108 संत बाबा पिप्पल दास जी ज्योति-ज्योत समाए - 1928
श्री 108 संत सरवण दास जी ज्योति-ज्योति समाए - 11 जून 1972
श्री 108 संत हरी दास जी ज्योति-ज्योत समाए - 6 फरवरी 1982
श्री 108 संत गरीब दास जी ज्योति-ज्योत समाए - 23 जुलाई 1994
श्री 108 संत निरंजन दास जी वर्तमान् गद्दी नशीन

बाबा पिप्पल दास जी महाराज

बाबा पिप्पल दास जी महाराज, का जन्म गाँव गिल्ल पट्टी, ज़िला बठिंडा में हुआ। आप बचपन से ही बहुत परमार्थी स्वभाव के थे। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आप अपने पूजनीय गुरुदेव बाबा मोहन दास जी, के शुभ उपदेशों को अपने जीवन में ग्रहण करते हुए परमात्मा के सिमरन में मग्न रहते थे। आप जी की अर्धांगिनी बीबी शोभावंती जी भी बहुत ही पवित्र विचारों वाली स्त्री थी। समयानुसार, आप के गृह में एक पुत्र का जन्म हुआ, जो आगे चल कर संत सरवण दास जी के नाम से प्रसिद्ध हो गए। स्वामी सरवण दास जी बाल्यावस्था में ही थे, जब उनके माता जी परलोक सिधार गए। इसी दौरान ही बाबा पिप्पल दास जी ने अपनी परमार्थी यात्रा प्रारंभ की और गाँव बल्लां, ज़िला जालन्धर में आकर रहने लगे। जहां पर पहला डेरा स्थित है, वहां रहते हुए बाबा पिप्पल दास जी ने संगत् को सेवा, सिमरन और सत्संग से जोड़ा। आप की शरण में रह कर, कई जिज्ञासुओं ने आध्यात्मिक विद्या का अध्ययन किया। बाबा जी ने अपने सुपुत्र को, श्री 108 संत करतानंद जी, जो एक महान् विद्वान थे, की संगत में, शिक्षा प्राप्ति के लिए भेजा और उन्हें नाम की अमूल्य बख्शिश स्वामी हरनाम दास जी से प्राप्त हुई। बाबा पिप्पल दास जी विक्रमी संवत् 1985 (सन् 1928) 26 सितंबर दिन गुरुवार पूर्व नक्षत्र और सुबह के समय, अपनी जीवन यात्रा संपूर्ण करते हुए ज्योति-ज्योत समा गए। बाबा जी का अंगीठा साहिब (अंतिम संस्कार का स्थान) गाँव बल्लां के पूर्व की और सुशोभित है। प्रत्येक वर्ष पहला नवरात्रा बाबा पिपल दास जी की याद में मनाया जाता है और निशान साहिब चढ़ाए जाते हैं।

श्री 108 संत सरवण दास जी महाराज

बाबा पिप्पल दास जी के बाद डेरे की सारा कार्यभार श्री 108 संत सरवण दास जी ने संभाला। आप संगत को बहुत प्यार करते थे। आप जी का आगमन 15 फरवरी 1895 ई. को, सम्माननीय बाबा पिप्पल दास जी और माता शोभावंती जी के पावन गृहि गाँव गिल्लपत्ती, ज़िला बठिण्डा में हुआ। संगत की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी। नाम की दवा से, जहां आप संगत की जन्म-जन्मांतरों की बीमारी का उपचार करते, वहीं उन्होंने आर्युवेदिक जड़ी-बूटियों द्वारा स्थूल शरीर के इलाज का प्रबन्ध किया। इसके साथ-साथ, गुरु जी ने बच्चों की शिक्षा का भी प्रबन्ध किया। महाराज जी खुद बच्चों की क्लास डेरे में लगाते और पढ़ाई के साथ साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का अध्ययन भी करवाते। बाबा पिपल दास जी के समय दौरान ही, आप संगत की सेवा में से समय निकाल कर, एकांत वास में साधना के लिए चले जाते थे। जहाँ बैठकर स्वामी सरवण दास जी भक्ति-साधना करते थे, उसी स्थान पर उनका यादगारी मंदिर, डेरा सच्चखण्ड बल्लां में सुशोभित है। डेरे की यह एक कनाल ज़मीन गाँव बल्लां के निवासी सरदार हज़ारा सिंह ने दान की थी। गर्मी एवं बरसात से बचाव के लिए इस स्थान पर कच्ची ईंटों की एक कुटिया बनाई गई थी। कुटिया के सामने एक थड़ा था, जहाँ बैठकर संत सरवण दास जी संगत को प्रवचन सुनाया करते थे। इस थड़े का निशान, आज भी मंदिर के सामने विद्यमान है। बाबा पिप्पल दास जी की कृपा से संत हरी दास जी संत सरवण दास जी, के सम्पर्क में आए और स्वामी सरवण दास जी ने संत हरी दास जी को, संगत की सेवा में जोड़ा। कुछ समय बाद, संत गरीब दास जी और संत निरंजन दास जी ने भी, अपना जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर दिया और संत सरवण दास जी द्वारा लगाई गई सेवा, कुशल ढंग से निभाने लगे।

श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मंदिर काशी में निर्माण

दुनिया भर में श्री गुरु रविदास जी के जन्म अस्थान पर, कोई ऐतिहासिक मंदिर नहीं था। स्वामी सरवण दास जी, स्वामी हरी दास जी और स्वामी गरीब दास जी ने विचार कर, काशी में गुरु रविदास जी के जन्म स्थान पर, मंदिर के निर्माण की योजना बनाई। संत सरवण दास जी ने, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर का नींव पत्थर 14 जून 1965 (आषाढ़ की सक्रांति) के दिन श्री 108 संत हरी दास जी के कर-कमलों से रखवाया। इसके पश्चात् मंदिर के निर्माण का कार्य, संत हरी दास जी ने, संत गरीब दास जी के साथ, संगत भेज कर करवाया। वर्तमान रूप में, कलश के बगैर इस मंदिर के निर्माण का कार्य तो संत सरवण दास जी के जीवन काल में ही प्रारंभ हो चुका था, परन्तु मंदिर की तैयारी का कार्य, गुरु जी के बाद श्री 108 संत

हरी दास जी और महाराज श्री 108 संत गरीब दास जी ने करवाया। स्वर्ण कलश 1994 में, श्री 108 संत गरीब दास जी ने संगत के सहयोग से चढ़ाया। इस मंदिर में जगत्गुरु रविदास महाराज और स्वामी सरवण दास जी की मूर्ति की स्थापना एक विशाल संत सम्मेलन करवाकर 22 फरवरी 1974 में की गई। इस मंदिर का प्रबन्ध, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट चला रहा है।

इस मंदिर के निर्माण के साथ साथ स्वामी सरवण दास जी ने श्री गुरु रविदास साधू संप्रदाय सोसाईटी, गाँवों की श्री गुरु रविदास सभाएं और शिक्षा केन्द्रों को सहयोग देकर,माज के कल्याण के कार्यों में, महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री 108 संत सरवण दास जी और उनके साथी महापुरुषों, के कठोर परिश्रम के कारण यह डेरा सारे संसार में, परमार्थ का एक विशाल केन्द्र बन गया है। दुनिया भर के श्रद्धालुओं की नज़रें, इस स्थान की ओर आकर्षित हुईं।

सतगुरू जी के चरणों में से, सभी की मनोकामना पूर्ण होने लगीं। प्रतिदिन आश्रम में, संगत की चहल-पहल लगी रहती थी।

परमात्मा की आज्ञा के अनुसार, 11 जून 1972 का वह दिन आ गया, जिस दिन सतगुरु स्वामी सरवण दास जी महाराज

सूरज किरण मिली जल का जल हूआ राम॥
जोति जोत रली संपूर्ण थीआ राम॥

के महा वाक्य के अनुसार, अपनी जीवन यात्रा संपूर्ण करते हुए, परमात्मा में विलीन हो गए। संगत आप जी की कुर्बानी सदा याद रखेगी।

श्री 108 संत हरी दास जी महाराज

सतगुरु स्वामी सरवण दास जी के बाद, श्री 108 संत हरी दास जी महाराज संत समाज द्वारा डेरा संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां के संचालक नियुक्त किये गए। गुरु जी के सहायक के रुप में, श्री 108 संत गरीब दास जी और श्री 108 संत निरंजन दास जी की सेवा लगाई गई। महाराज हरी दास जी के पिता का नाम श्री हुकम चंद और माता का नाम श्रीमती ताबी जी था। स्वामी हरी दास जी का जन्म स्थान गाँव गड़ा, जालन्धर है।

स्वामी सरवण दास जी की याद में (सच्चखण्ड) मंदिर का निर्माण

श्री 108 संत हरी दास महाराज जी ने, पूजनीय गुरुदेव श्री गुरु सरवण दास जी की याद में मंदिर के निर्माण का कार्य, 10 अगस्त 1972 को शुरु किया। मंदिर के निर्माण का कार्य बड़े हर्षोल्लास के साथ शुरु किया गया, जिसमें देश और विदेश की संगत ने बहुत उत्साह से सेवा की। मंदिर का उद्घाटन, 11 जून 1974 को संत सरवण दास जी के बरसी समारोह के दिन किया गया और संत सरवण दास

जी की मूर्ति मंदिर में सुशोभित की गई। यह मंदिर उस स्थान पर बनाया गया है, जहाँ स्वामी सरवण दास जी की कुटिया थी। मंदिर के निर्माण के बाद, यह कुटिया 'डेरा संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां' के नाम से प्रसिद्ध हुई। कई बार मौसम की खराबी के कारण कीर्तन समागम में परेशानी हो जाती थी, इस परेशानी को दूर करने और संगत की सुविधा के लिए, स्वामी हरी दास जी ने एक सत्संग हाल का निर्माण करवाया, जिसका नींव पत्थर तिथि 31 अक्तूबर 1976 को रखा गया। यह सत्संग हाल 'संत हरि दास सत्संग हाल' के नाम से जाना जाता है। स्वामी हरी दास जी ने बच्चों की शिक्षा पर जोर देते हुए, बाल विवाह का पूर्ण विरोध किया। गुरु जी ने नशीली वस्तुओं के सेवन की मनाही करते हुए संगत को गुरबाणी और सत्संग से जोड़ा। आप जी ने डेरे के लिए और जमीन खरीदी। आप के जीवन काल के दौरान, डेरे की सेवाएं निरंतर चलती रहीं। आयुर्वैदिक जड़ी-बूटियों द्वारा लोगों के उपचार का कार्य श्री 108 संत गरीब दास जी करते थे। परमात्मा की आज्ञा के अनुसार लगभग 100 वर्ष की आयु व्यतीत करते हुए, संत हरी दास जी 6 फरवरी 1982 को अखण्ड ज्योत में विलीन हो गये।

श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज

संत हरी दास जी के पश्चात्, महाराज गरीब दास जी डेरे के गद्दी नशीन हुए। आप जी का आगमन 1925 ई० को सम्मानीय श्री नानक चंद और माता श्रीमती हर कौर के घर में हुआ। गाँव जलभेयां, ज़िला जालन्धर आप जी का जन्म स्थान है। आप जी के सहायक के रूप में, श्री 108 संत निरंजन दास जी को नियुक्त किया।

संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल का निर्माण

संत गरीब दास जी, दुखियों के दर्द को पहले ही बहुत अच्छी तरह से अनुभव करते थे, इस लिए आप जी ने, सबसे पहला महान कार्य, सतगुरु जी के नाम पर, दुखियों की सेवा के लिए, अस्पताल के निर्माण का किया, जिसका शुभांरभ, 22 अक्तूबर 1982 को गाँव ढेपुर-कूपुर, जिला जालन्धर में किया गया। इस अतिव्यय वाले कार्य को आप जी ने सतगुरु सरवण दास जी के भरोसे पर आरंभ किया। जब भी कोई व्यक्ति यह शंका प्रकट करता कि अस्पताल का कार्य कैसे चलेगा? तो गुरु जी उसे कहते कि यह कार्य तो, संत सरवण दास जी का है और मुझे पूर्ण विश्वास है, यह कार्य संत सरवण दास जी की कृपा से, सदैव ऊँचाईयों को छूएगा। गुरु जी के मुखारविंद से निकले हुए यह वचन अटल सिद्ध हुए। इस अस्पताल का नाम, 'संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल' रखा गया। इसका प्रबन्ध अब तक 'संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल ट्रस्ट' चला रहा है, जिसके

संचालक सदैव ही डेरा सच्च खण्ड बल्लां के संचालक होंगे। इस अस्पताल में, अनुभवी डाक्टरों की सेवाएं और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

साप्ताहिक बेग़मपुरा शहर पत्रिका

साप्ताहिक बेग़मपुरा शहर पत्रिका, जिस द्वारा समाज की बहुत सेवा हो रही है, सतगुरु स्वामी गरीब दास जी की, समाज को एक महान् देन है। आप इस पत्रिका के संस्थापक थे।

श्री गुरु रविदास आई. टी. आई. कॉलेज फगवाड़ा में, 'संत सरवण दास मैमोरियल टीचिंग ब्लाक' का नींव पत्थर रखा गया। हाल कमरे के निर्माण के कार्य की सेवा भी डेरे द्वारा निभाई गई। गुरु जी ने डेरे में संगत के रहने का प्रबन्ध करने के लिए, एक विशाल बिल्डिंग के निर्माण की शुरुआत की, जो गुरु जी की कृपा से संपूर्ण हुई। इस बिल्डिंग में चार बड़े हाल और 26 कमरे बाथरुम सहित, यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए गये। डेरे में पानी की सप्लाई के लिए एक टयूब्वैल और पानी की टंकी का, प्रबन्ध किया गया। संगत की सुविधा और समागम के लिए आप ने और ज़मीन खरीदी जिसकी बहुत आवश्यकता थी। जालन्धर पठानकोट मार्ग से डेरे को जाने वाले मार्ग, जिसका नाम 'संत सरवण दास मार्ग' है, पर सतगुरु स्वामी सरवण दास जी की याद में, अति सुन्दर गेट का निर्माण किया गया। इस गेट के निर्माण में, गाँव बल्लां और इस गाँव के विदेश में रह रहे श्रद्धालुओं ने योगदान दिया और इसका उद्घाटन इंग्लैंड, अमेरिका और कैनेडा से आई हुई संगत और संत महापुरुषों की उपस्थिति में, 11 जून 1994 को किया गया।

बर्मिंघम (यू. के.) गुरु घर का नींवपत्थर और उदघाटन् संत गरीब दास जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। बुल्वरहैंप्टन, स्टरुड कैंट, साऊथैप्टन और विदेशों के अन्य कई शहरों में गुरु-घरों का नींव पत्थर और उद्घाटन का कार्य, आप जी के कर-कमलों द्वारा हुआ। महाराज गरीब दास जी 1985 से लेकर 1994 तक छः बार इंग्लैंड, तीन बार अमेरिका और एक बार कैनेडा गये। आपने विदेश जाकर वहां रह रही संगत को अपने दर्शन और नाम सिमरन का आशीर्वाद देकर उनके जीवन में खुशियाँ भर दी।

जुलाई 1994 को बनारस में एक बहुत बड़ा समागम किया गया। जिसमें देश विदेश से बड़ी संख्या में संगत शामिल हुई। श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर में, यह इस प्रकार का पहला समागम था, जिसको संगत सदैव याद रखेगी। सतगुरु स्वामी गरीब दास महाराज इंग्लैंड की संगत को विदा कर 23 जुलाई 1994 को, सदा के लिए बेग़मपुरा शहर में निवास कर गये।

गुरु साहिबान की समाधियां

सतगुरु बाबा पिप्पल दास महाराज जी –

अंगीठा – गाँव बल्लां से पूर्व की ओर।

समाधि – डेरे में गुंबद वाला कमरा यहाँ बाबा जी की मूर्ति सुशोभित है।

सतगुरु संत सरवण दास महाराज जी –

अंगीठा और समाधि–महाराज पिप्पल दास जी की समाधि के साथ।

सतगुरु संत हरी दास महाराज जी –

अंगीठा और समाधि–संत सरवण दास जी की समाधि के पश्चिम की ओर।

सतगुरु संत गरीब दास महाराज जी –

अंगीठा – श्री गुरू रविदास सत्संग भवन के पूर्व की ओर।

समाधि – महाराज हरी दास जी की समाधि के दक्षिण की ओर।

श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज (वर्तमान् गद्दी नशीन)

ब्रह्मलीन संत गरीब दास जी के बाद, श्री 108संत निरंजन दास जी, गद्दीनशीन हुए। आप जी के पिता का नाम श्री साधू राम जी और माता का नाम श्रीमती रुक्मणी जी था। आप का जन्म गाँव रामदासपुर, ज़िला जालन्धर में 6 जनवरी 1942 के दिन हुआ। आप जी के माता पिता, बाबा पिप्पल दास जी महाराज तथा सतगुरु स्वामी सरवण दास जी महाराज के श्रद्धालु थे। उन्हें जब भी घरेलू कार्यों से फुर्सत मिलती, तो सीधे गुरू जी के डेरे में पहुँच जाते, संतों के वचन सुनते, वे उनकी सेवा करते। वे अपने प्रिय सपुत्र निरंजन दास को भी संतों के दर्शन के लिए अपने साथ ले आते थे। संत सरवण दास जी नन्हें बच्चे को देखकर बहुत प्रसन्न होते और उन्हें अपने पास बुलाकर मीठी मीठी बातें करते। एक बार सतगुरु स्वामी सरवण दास महाराज जी ने, आप जी के पिता से पूछा कि बालक का नाम क्या है, तो श्री साधू राम ने कहा कि महाराज जी इस का नाम निरंजन रखा है, परन्तु यह काम में बहुत सुस्त है। गुरु जी ने कहा कि आज से हम इसका नाम हवाईगर रखते हैं, हमें दिखाई दे रहा है कि यह बालक सुस्त नहीं, बल्कि हवा से भी तेज़ होगा। श्री साधू राम जी ने सत वचन कहकर गुरू जी को प्रणाम किया और बालक को संतों के सपुर्द कर अपने नगर वापिस लौट गए। जब संत सरवण दास जी इन्हें (संत निरंजन दास जी को) किसी कार्यहेतु बुलाते तो हवाईगर के नाम से ही सम्बोधित करते थे। वे जहां भी होते थे, दौड़कर संत सरवण दास जी के चरणों मं पहुँचकर पूछते कि क्या आदेश है महाराज जी? संत बहुत प्रसन्न हो जाते थे।

डेरे में सेवा करते हुए, हवाईगर, अब बचपन से जवानी में आ चुके थे।

जिस कार्य का भी गुरू जी ने आदेश दिया कि हवाईगर यह कार्य करना है, वे सदैव यही उत्तर देते थे कि महाराज जी यह कार्य तो पूरा कर दिया है। संत सरवण दास जी इनकी सेवाओं से बहुत प्रसन्न होते थे और कहते कि आपके माता पिता तो आपको सुस्त कहते थे, तो तुमने यह कार्य कैसे पूरा कर दिया? तो हवाईगर जी ने उत्तर दिया कि महाराज जी जैसे आप करवाते हो, करता हूँ, तब संत सरवण दास जी यह वचन सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए और कहने लगे, अब हमने तुम्हारा नाम हवाईगर से, संत निरंजन दास रख दिया है। आप जी ने बचपन से लेकर गद्दीनशीन होने तक, डेरे में महान् सेवायें निभाईं। वे प्रतिदिन नगरों में जाकर संगत के लिए दूध लाया करते थे। लंगर और डेरे की सारी व्यवस्था वे खुद देखते थे।

आप जी ने महान् कार्य किए। डेरा सच्चखण्ड बल्लां में गुरु साहिबान द्वारा लगाई गई सेवा निभाते हुए डेरे के निर्माण, अस्पतालों के निर्माण, श्री गुरु रविदास जन्मोस्थान में संगत की सुविधा के लिए, अन्य निर्माण कार्य, बेग़मपुरा शहर पत्रिका तथा अन्य सामाजिक कल्याण के कार्यों में आप जी का पूर्ण रूप से ध्यान है। आप जी 23 जुलाई 1994 को संत गरीब दास महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के उपरांत डेरा सच्चखण्ड बल्लां के संचालक बने तथा संत रामानंद जी के सहयोग से, आप जी ने महान् कार्य किए। श्री गुरु रविदास जन्मोस्थान मन्दिर में, आप जी ने 31 स्वर्ण कलश सुशोभित किए, संगत की सुविधा हेतु चार मंज़िला इमारत का निर्माण करवाया तथा वहाँ और ज़मीन खरीदी। आप जी के प्रतिनिधित्व में, यूरोप की संगत द्वारा स्वर्ण पालकी भेंट की गई और श्री गुरु रविदास जन्मोस्थान मन्दिर को, स्वर्ण मंड़ित करने का कार्य आरंभ किया गया है। श्री गुरू रविदास मन्दिर और संत सरवण दास मॉडल स्कूल हदियाबाद फगवाड़ा, श्री गुरु रविदास मन्दिर पुणे, श्री गुरु रविदास मन्दिर सिरसगढ़, कर्मस्थली बाबा पिप्पल दास जी एवं जन्म स्थली सतगुरु स्वामी सरवण दास जी गिल्लपत्ती बठिंडा का निर्माण करवाया गया। डेरे में, श्री गुरु रविदास सत्संग भवन और संत सरवण दास चैरिटेबल आँखों के अस्पताल, का निर्माण करवाया गया।

डेरे और डेरे से जुड़ी हुई संस्थाओं के संचालन के लिए, प्रतिदिन के कार्यों से संत निरंजन दास जी की छत्रछाया में, संत रामानंद जी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। बडाला माही में संत गुरबचन दास जी संगत की सेवा निभा रहे हैं। बीबी भजनों, जो महाराज जी के भोजन और गुरु साहिबान के लंगर में, अपनी निष्काम सेवा द्वारा योगदान दे रही है।

डेरा संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां की ओर से जो सेवाएं चल रही है उन में समस्त संगत का, अपार प्रेम झलक रहा है। इस पक्ष को देखते हुए, सारी गुरु प्रेमी संगत धन्यवाद की पात्र है।

कौम के महान शहीद

श्री 108 संत रामानन्द महाराज जी

खुशहाल संसार में कुछ ऐसे अज़ीम शख्स पैदा होते हैं, जो अपने परोपकारी कार्यों से, चिर स्थायी दुनिया तक अपना नाम रौशन कर जाते हैं, परन्तु संतजन समस्त मानवता के लिए, प्रकाश स्रोत बन जाते हैं। सीमायों की सीमित रेखाएं, रंग, नस्ल, मज़हब की व्यर्थ कहानिया, उनके लिए निरर्थक होती हैं। संतजन पीपल की छाया की भांति होते हैं, जो पापों रूपी गर्मी की तपिश झेलती मानवता को, पश्चिम की ठंडी व शीतल वायु का सुख प्रदान करते हैं।

1910-15 के मध्य, संत रामनन्द जी के पिता, श्रीमान महिंगा राम जी व उनके पूर्वज गाँव बल्लां को छोड़कर गांव अलावलपुर, ज़िला जालन्धर में जा बसे। वे डेरा सच्चखण्ड बल्लां के श्रद्धालु थे। जब किसी इतिहास का सृजन करना हो, तो प्रकृति बहुत से नवीन विधियों का सृजन करती है। कुछ ऐसा ही हुआ, इस परिवार के जीवन में। गृहस्थी जीवन बिता रहे श्रीमान् महिंगा राम जी तथा बीबी जीत कौर जी, ने कभी सोचा भी नहीं था कि उनके घर एक ऐसा बालक जन्म लेगा, जो समस्त दलित समुदाय को, मोतियों की भांति, एकता की माला में पिरोकर, संपूर्ण विश्व में, श्री 108 संत सरवण दास जी महाराज डेरा सच्चखण्ड बल्लां, जैसे साधना स्थल को चार-चाँद लगाने में, महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, जिस पर आने वाली पीढ़ियां नाज़ करेगी। आज डेरा सच्चखण्ड बल्लां, सतगुरु स्वामी निरंजन दास महाराज जी और संत रामानन्द महाराज जी के असीम परिश्रम के कारण ही, मानवता, विशेषत: दलितों का मक्का माना जाता है। समय के गद्दीनशीन महापुरुषों की कदम चाल को नापना तथा उनके पदचिह्नों पर चलना, वर्तमान् गद्दीनशीन महापुरुषों का उद्देश्य रहा है।

श्री 108 संत रामानन्द महाराज जी का जन्म 2 फरवरी 1952 को, पिता श्रीमान् महिंगा राम जी के गृह में, माता श्रीमती जीत कौर जी की पावन कोख से हुआ। आप बचपन से ही साधु स्वभाव रखते थे। आप जी का मनमोहक रूप, गली-मोहल्ले के लोगों को मंत्रमुग्ध कर देता था। बी॰ए॰ तक की शिक्षा आप जी ने दोआबा कॉलेज से प्राप्त की। जिस समय आप पढ़ाई के लिए जाया करते थे तो अकसर गुम-सुम रहा करते थे। आप बचपन से ही साधु-संगत के पुजारी थे, अत: वह रंग तो चढ़ना ही था जो प्रवाण होकर (बढ़-फूल कर) और गहरा होता गया। घर के अन्य सदस्यों ने ज़ोरदार विरोध करना शुरू कर दिया कि रामनन्द को साधुओं की संगत से, रोका जाए। घर में सामानयता साधु संगत की बातें होती रहतीं। संत रामानन्द जी घर के घरेलू कार्य करते हुए भी हर समय परमात्मा का नाम सिमरन

करते रहते। अंतत: संत रामा नंद जी को श्री 108 संत हरी दास जी महाराज सच्चखण्ड बल्लां वाले महापुरुषों के चरणों में सौंप दिया गया। आप जी को संत हरी दास जी महाराज द्वारा नाम का आशीर्वाद दिया गया। संत रामानन्द जी 1973 से बाबा पिप्पल दास जी महाराज की याद में, बल्लां गाँव में बने सुन्दर मन्दिर में रहकर प्रभु-सिमरन करते। संत रामानन्द जी ब्रह्मलीन संत हरी दास जी महाराज के समय व महाराज गरीब दास जी के समय में, दिन के समय डेरे में रहकर संगत की सेवा करते और रोज़ाना शब्द कीर्तन तथा कथा करते।

यहां वर्णनीय है कि संत रामानन्द जी को, गुरु ज्ञान सतगुरु हरी दास जी से प्राप्त हुआ और सतगुरु गरीब दास जी ने उन्हें भेष धारण करवाया। उनके साथ ही, संत रामानन्द जी को अलग-अलग देशों में श्री गुरु रविदास मिशन के प्रचार व प्रसार हेतु जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके बाद डेरा सच्चखण्ड बल्लां के वर्तमान् गद्दीनशीन श्री 108 संत निरंजन दास महाराज जी के निर्देशन में विदेशों में जाकर, श्री 108 संत रामानन्द जी ने, अनेक गुरु घरों का निर्माण करवाया तथा विदेशी संगत को, श्री गुरु रविदास महाराज जी की विचारधारा के साथ जोड़ा। आप संगत की आँखों के तारे थे। आप जी की रसना से, वाणी के मीठे बोल श्रवण कर, संगत मंत्र मुग्ध हो जाती थी।

आप एक कुशल प्रशासक थे, जिन्होंने डेरे के प्रबन्ध को अत्यंत कुशल ढंग से चलाया। विश्व भर में, संत सम्मेलनों में श्री गुरु रविदास महाराज जी की वाणी का प्रचार व प्रसार करने के साथ-साथ, आप डेरा सच्चखण्ड बल्लां द्वारा मानव कल्याण हेतु चलाई जा रही, भिन्न-भिन्न परियोजनाओं के कार्यों को चलाने के लिए, बढ़चढ़ कर भाग लेते थे। डेरा सच्चखण्ड बल्लां द्वारा प्रकाशित किए जा रहे 'बेगमपुरा शहर' के संपादक के रूप में, आप जी ने प्रशंसनीय सेवायें निभाई, जिस के लिए आप जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। यह पहली बार था कि आप जी ने यू॰के॰ के संसदीय सदन में, श्री गुरु रविदास महाराज जी से संबंधित भाषण पढ़कर एक नए इतिहास का निर्माण किया। आप वाणी के महान् ज्ञाता थे और अत्यंत सरल उदाहरणों द्वारा गुरुवाणी के जटिल अर्थों की व्याख्या करने में माहिर थे। आप जब संगीतमय कीर्तन करते थे, तो पंडाल में बैठी संगत, पूर्णत: मंत्र मुग्ध हो जाती थी।

डेरा बल्लां द्वारा चलाए जा रहे संस्थानों की इमारतों के निर्माण में संत रामानन्द जी का अति विशेष योगदान रहा है। जब श्री गुरु रविदास जन्मस्थान मन्दिर, सीर गोवर्धनपुर वाराणसी, संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल अड्डा कठार, श्री गुरु रविदास सत्संग भवन बल्लां, श्री गुरु रविदास मन्दिर और संत सरवण दास मॉडल स्कूल हदियाबाद फगवाड़ा, संत सरवण दास आई अस्पताल बल्लां, श्री गुरु रविदास मन्दिर सिरसगढ़ हरियाणा, बाबा पिप्पल दास महाराज जी की कर्मस्थली

और संत सरवण दास महाराज जी की जन्म स्थली गिल्ल पट्टी बठिण्डा, श्री गुरु रविदास मन्दिर कात्रज पुणे की नई बन रही इमारतों का कार्य चल रहा था, तो संत रामानन्द जी स्वयं मेहनतकशों की भांति कार्य में कूद पड़ते थे। संगत द्वारा विश्राम के लिए निवेदन करने के बावजूद, घंटों कार्य करते रहते और सभी साधारण व विशेष लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाते थे।

संत रामानन्द जी एक परिश्रमी, दृढ़निश्चयी योद्धा थे, जो मिशनरी कार्यों को संपूर्ण करने के लिए, दिन रात एक करते हुए न तो थकावट महसूस करते थे और न ही उकताहट। आप अकसर कहा करते थे 'जो समय महाराज जी की सेवा में लग जाए वही अच्छा है, क्या पता फिर समय मिले न मिले।'

जगत्गुरु गुरु रविदास महाराज जी के मिशन का प्रचार व प्रसार करने के लिए गए श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज वर्तमान् गद्दीनशीन डेरा सच्चखण्ड बल्लां और गुरु घर के वज़ीर कीर्तन के धनी, महान् विद्वान, नाम के रसिया, महान् वैद्य श्री गुरु रविदास मिशन के केन्द्रबिन्दु, संत समाज के अमूल्य रत्न, श्री 108 संत रामानन्द जी, मृत्य के समय भी श्री गुरु रविदास महाराज जी का नाम उच्चारण करते रहे, जैसे कह रहे हों कि वे अभी मिशन के प्रचार व प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते है। परन्तु भविष्य को यह मंजूर नहीं हुआ और आप दिनांक 25 मई प्रात: काल रविदासिया कौम के लिए शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए।

संत रामानन्द जी महाराज, अपना पूरा जीवन शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन होने तक गुरु रविदास नाम लेवा संगत को, जगत् गुरु रविदास महाराज जी का पावन उपदेश ''सतिसंगति मिलि रहीयै माधऊ, जैसे मधुप मखीरा॥'' देते हुए विश्व स्तर पर एकत्रित होने का उपदेश दे गए।

वियाना में घटित दुर्भाग्यपूर्ण घटना में, संत रामानन्द जी हम से शारीरिक रूप से बिछुड़ अवश्य गए हैं, परन्तु उनकी सोच सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहेगी।

कौम की, संत रामानंद जी की शहादत से रविदासीया धर्म के नाम से विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान बन गई है, जिसका प्रचार व प्रसार पूरे विश्व में हो चुका है और अमृतवाणी के प्रकाश हज़ारों की संख्या में पूरे विश्व में हो चुके हैं।

अंगीठा साहिब और समाधि :

श्री 108 संत रामानंद जी महाराज का पावन अंगीठा साहिब और समाधि श्री 108 संत गरीब दास जी के अंगीठा साहिब के पश्चिम की ओर उपस्थित है।

❖❖❖

डेरा सच्च खण्ड बल्लां द्वारा चलाए जा रहे प्रोजैक्ट

श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीर गोवर्धनपुर वाराणसी : श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी के निर्माण का कार्य, संत सरवण दास जी महाराज डेरा सच्च खण्ड बल्लां द्वारा करवाया गया। संत सरवण दास जी की आज्ञा के अनुसार, इस मंदिर का नींव पत्थर 14 जून 1965 ई० (आषाढ़ की संक्रांति) के दिन संत हरी दास जी के कर-कमलों द्वारा रखा गया। मंदिर के निर्माण की ज़िम्मेदारी संत गरीब दास जी महाराज को सौंपी गई, जो उन्होंने बाखूबी निभाई। इस मन्दिर में 22 फरवरी 1974 ई० को एक महान् संत सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें श्री गुरु रविदास सम्प्रदाय के अनेकों महापुरुष पधारे। इसी दिन, मन्दिर में, जगत्गुरु रविदास महाराज जी की पावन मूर्ति तथा स्वामी सरवण दास महाराज जी की पावन मूर्ति स्थापित की गई। इस सात मंज़िले मंदिर के ऊपरी बड़े गुंबद और सात फुट सोने के कलश का उद्घाटन, तिथि 7 अप्रैल 1994 को बाबू कांशी राम जी (राष्ट्रीय प्रधान बसपा) के कर-कमलों द्वारा किया गया।

मंदिर में हर समय लंगर की व्यवस्था है। यात्रियों के ठहरने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया है। बनारस शहर में, तीर्थस्थानों के दर्शनों के लिए, एक मिन्नी बस का प्रबन्ध किया गया है। दुनिया भर के श्रद्धालु, जिज्ञासु, खोजकर्ता और सैलानी, इस मंदिर की यात्रा करने के लिए आते हैं। मंदिर का प्रबन्ध श्री गुरु रविदास जन्म स्थान चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा किया जाता है। श्री 108 संत सरवण दास चैरिटेबल ट्रस्ट यू. के., के योगदान से, लंका चौराहा वाराणसी में श्री गुरु रविदास गेट का निर्माण भी करवाया गया, जिसका उद्घाटन, तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय कोर्चिल रमन नारायणन जी के कर-कमलों द्वारा, 16 जुलाई 1998 को किया गया। गेट के उद्घाटन के बाद राष्ट्रपति जी श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर में पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए गये। यहां श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज, ट्रस्ट के बाकी मैंबरों और उपस्थित लोगों द्वारा, राष्ट्रपति जी का हार्दिक स्वागत किया गया। मंदिर में पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद, उन्होंने मंदिर के निर्माण, इतिहास और प्रबन्ध के बारे में चर्चा की।

रिवायती शानोशौकत के साथ हर साल श्री गुरु रविदास जी का आगमन् पर्व, ट्रस्ट की देख-रेख में, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर में मनाया जाता है। इस पावन पर्व के अवसर पर विभिन्न राज्यों से और विदेशों से संगत आती है। ट्रस्ट

द्वारा सन् 2000, 2001, 2002, 16 फरवरी 2003, 6 फरवरी 2004, 2006, 2007, 2008 और 2009, 2010 और 2011 को श्री गुरु रविदास पर्व पर, पंजाब से हज़ारो श्रद्धालुओं को गुरुधाम के दर्शनों के लिए रेलवे विभाग, भारत सरकार के सहयोग द्वारा जालन्धर से वाराणसी तक स्पैशल 'बेगमपुरा एक्सप्रैस' की सुविधा प्रदान की गई, जो निरंतर जारी रहेगी।

625 वें गुरु रविदास जयंती पर्व के अवसर पर, मंदिर की आगे वाली दीवार के ऊपर, ट्रस्ट के पुरुषार्थ द्वारा करीब 25 लाख रुपये की लागत से मार्बल लगाया गया और मंदिर के सभी छोटे-बड़े गुंबदों पर 31 स्वर्ण कलश सुशोभित किये गये, जिनका उद्‌घाटन, भिन्न-भिन्न राज्यों से आए हुए महापुरुषों द्वारा, किया गया।

विशाल इमारत का निर्माण:

आश्रम में संगत् की सुविधा के लिए एक विशाल इमारत का निर्माण किया गया है। इसमें बेसमेंट (6500 वर्ग फुट) के साथ-साथ, चार मंजिलें तैयार की गई। इस सारी बिल्डिंग में 44 कमरे हैं। इस विशाल बिल्डिंग का उद्‌घाटन, जगत्‌गुरु रविदास महाराज के 629वें आगमन पर्व पर 13 फरवरी 2006 को, संत निरंजन दास जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। बाहर वाले प्लाट में संगत की सुविधा के लिए एक बड़ी शैड (140 X 40 वर्ग) की तैयारी पूरी हो चुकी है।

स्वर्ण पालकी भेंट:- श्री गुरु रविदास नामलेवा यूरोप निवासी संगत की ओर से 23 फरवरी 2008 ई. को, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर बनारस के लिए स्वर्ण पालकी भेंट की गई, जो 16 फरवरी को जालन्धर से बनारस एक शोभा यात्रा के रुप में पहुंची।

संत रामानंद जी का सपना था कि श्री गुरु रविदास जन्म-स्थान मन्दिर को भी अन्य धर्म स्थानों की तरह सोने से मढ़ाया जाए। संत निरंजन दास जी महाराज से आशीर्वाद लेकर सबसे पहले यू॰एस॰ए॰ की संगत की तरफ से दिये सहयोग से यह शुभ कार्य गुरु जी के आगमन पर्व के मौके पर 9 फरवरी 2009 को आरम्भ किया गया। इस उपरांत महाराज जी के 2009 के कैनेडा और यूरप की फेरी दौरान इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए वेहद योगदान दिया गया। देश भर की संगतों में भी इस कार्य के लिए वेहद उत्साह पाया जा रहा हैं। जगत्‌गुरु रविदास महाराज जी के 633वें आगमन पर्व पर मन्दिर का गुम्बद सवर्ण मढ़त किया गया और साथ ही रविदासिया धर्म का ऐलान संत समाज और लाखों की संख्या में संगत की हाज़री में किया गया।

श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा विशाल लंगर हाल का निर्माण:

श्री गुरु रविदास महाराज जी की विचारधारा और वाणी के प्रचार के कारण, डेरा सच्च खण्ड बल्लां विश्वविख्यात है। यह आश्रम सेवा, सत्संग और सिमरन के माध्यम से 'बेगमपुरा संकल्प' और 'जो हम सहरी सो मीत हमारा' की अवस्था की प्रप्ति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर का निर्माण कर यहां गुरु जी की पावन याद में एक शानदार स्मृति चिन्ह स्थापित किया गया है वहीं यह स्थान श्री गुरु रविदास जी के प्रेमियों के लिए, एवं आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए, एक पवित्र तीर्थ स्थान बनकर साकार हुआ है। यह डेरा सतगुरू रविदास जी की विचारधारा का संदेश, देश-विदेश और जन-जन (प्रत्येक प्राणी) तक पहुँचाने के लिए, प्रयत्नशील है। इस तीर्थ स्थान की सेवाओं का अधिक प्रचार होने के फलस्वरूप संगत का आवागमन बहुत बढ़ गया है। गुरू जी के पावन जन्म दिवस पर लाखों की संख्या में, श्रद्धालु आने लगे हैं। वैसे भी भिन्न-भिन्न राज्यों से इस गुरू धाम के दर्शनों के लिए, रेलगाडी, मोटर-कारों, ट्रकों और ट्राली इत्यादि में श्रद्धालु निरंतर आते रहते हैं। इस तेज़ी से बढ़ रही संगत के लिए अलग लंगर हाल की आवश्यकता महसूस (अनुभव) की गई। इस लिए यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, 100 फुट लम्बे और 65 फुट चौड़े लंगर हाल का नींव पत्थर 18 नवम्बर, 1998 को रखा गया। संत निरंजन दास जी महाराज के आशीर्वाद से नींव खोदने का कार्य प्रारम्भ किया गया, अंत: 1999 तक लंगर हाल की सुन्दर इमारत का निर्माण पूरा हो गया, यह प्लाट संत गरीब दास जी ने खरीदा था। करीब 55 लाख रुपए की लागत से बनाए गए इस लंगर हाल का उद्‌घाटन श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज गद्दी नशीन डेरा सच्च खण्ड बल्लां और अध्यक्ष श्री गुरू रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के कर-कमलों द्वारा तिथि 8 फरवरी 2000 को सुबह 11 बजकर 30 मिनट पर, श्री गुरू रविदास जयंती पर्व के अवसर पर लाखों श्रद्धालुओं और संत समाज की उपस्थिति में किया गया।

तिथि 28 मार्च, 2001 की श्री गुरू रविदास चैरिटेबल ट्रस्ट की मीटिंग में श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीर गोवर्धनपुर वाराणसी में संगत की निरंतर बढ़ रही संख्या और संगत की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंदिर कम्पलैक्स में बनाए गए, विशाल लंगर हाल की दूसरी मंजिल के निर्माण का फैसला लिया गया। इस लंगर हाल के निर्माण का कार्य, मई 2001 में शुरू किया गया, जिसमें सेवा करने के लिये पंजाब से बड़ी संख्या में सेवादार मंदिर पहुँचे। जिला जालन्धर के

गाँव डींगरियां, दोलीके, सुन्दर नगर, आबादपुरा, मन्नणा, जण्डुसिंघा, शेखे, लिदड़ां, ज़िला अमृतसर और ज़िला गुरदासपुर से भी सेवादार गए। इस विशाल हाल के निर्माण का कार्य तिथि 22 मई 2001 से 30 मई 2001 तक दिन रात चलता रहा। सारी गुरू प्रेमी संगत ने बहुत श्रद्धा-सत्कार एवं बहादुरी के साथ काम किया। पंजाब से आए सेवादारों को सेवा करते देखकर बनारस के निवासी बहुत हैरान होते और कहते '' ये पंजाबी सेवादार किस मिट्टी के बने हुए हैं, जो दिन रात इतनी कठिन सेवा करते हैं और थकते नहीं'' ऐसा लगता था कि इतना बड़ा कार्य बहुत लंबे समय में पूरा होगा परन्तु सतगुरु जी की ऐसी कृपा हुई कि सिर्फ 10 दिन में ही हाल कमरे पर लैंटर डाल दिया गया। लंगर हाल की दूसरी मंज़िल का निर्माण, संत रामानंद जी की देख-रेख में हुआ। लंगर हाल की दूसरी मंज़िल का उद्घाटन श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज द्वारा 26 फरवरी 2002 को किया गया। आज श्रद्धालु इस विशाल हाल की दोनों मंजिलों की सुविधा का आनन्द प्राप्त कर रहें हैं।

यह विशेष वर्णनीय है कि लंगर हाल की पहली मंज़िल का कुल व्यय श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज, डेरा सच्च खण्ड बल्लां द्वारा किया गया। लंगर हाल की दूसरी मंजिल के निर्माण के कार्य में, बुल्वरहैंप्टन की संगत द्वारा, 8 लाख और बर्मिंघम की संगत् द्वारा 14 लाख रुपए, का योगदान दिया गया।

संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल कूपुर -ढेपुर (कठार)

डेरा संत सरवण दास जी सच्चखण्ड बल्लां जालन्धर, संत सरवण दास जी से लेकर वर्तमान गद्दी नशीन श्री 108 संत निरंजन दास जी की देख रेख में समाज सेवा, जन-कल्याण, दुखियों और गरीबों की सेवा में जुटा हुआ है, जिनमें से संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल कठार, की सेवाएं, एक मील पत्थर के रूप में जानी जाती हैं। अस्पताल का नींव पत्थर ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी के कर-कमलों द्वारा 22 अक्तूबर 1982 को रखा गया। इस महान् कार्य के लिए, सेठ बेली राम जी, बीबी पूरो जी, बीबी भजनो जी, सेठ राजमल्ल जी और कूपुर की पंचायत की ओर से, ज़मीन दान की गई। इस हस्पताल का उद्घाटन, 1 जनवरी 1984 को किया गया। यहां लाखों रोगी नाममात्र व्यय पर बढ़िया सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। 200 बैड वाले इस विशाल अस्पताल में सर्जरी, गाईनी, आंखों, दांतों, E.N.T., हड्डियों और बच्चों के विभाग द्वारा भिन्न-भिन्न बीमारियों का सस्ता एवं बढ़िया इलाज किया जा रहा है। इस हस्पताल में हड्डियों के आप्रेशन के लिए, आप्रेशन थिएटर करीब 20 लाख की लागत से तैयार किया गया है। इस पवित्र कार्य के लिए, अनुभवी डॉक्टरों और स्टाफ मैंबरों के द्वारा मानवता की सेवा के लिए अमूल्य योगदान दिया जा रहा है। इस अस्पताल में हर महीने लगभग

6000 लोगों का ओ.पी.डी, इलाज किया जाता है। इसके अलावा इनडोर वार्ड में बहुत अच्छी सुविधाएं हैं और बहुत ही कम किराए (100 रुपए प्रतिदिन) पर कमरा दिया जाता है। अस्पताल में, हर महीने लगभग 200 जनरल सर्जरी,के आपरेशन किये जाते हैं। इस के इलावा नई तकनीक लैप्रोस्कोपिक सर्जरी, आंखों की सर्जरी, E.N.T. दांतों और औरथोपैडिक सर्जरी भी शुरू की गई है। अैक्स-रे और स्कैनिंग का भी प्रबन्ध है। जो लोग महँगा इलाज नहीं करवा सकते, वे इस अस्पताल की सेवाओं का लाभ उठाते हैं। इसके साथ-साथ अब मध्यम वर्ग के लोग भी अस्पताल में हो रहे बढ़िया इलाज को देखते हुए, बड़ी संख्या में आने लगे हैं।

समाज को अच्छी सेवा देने के लिए, इस अस्पताल में लगभग 75,00,000/ रुपए की लागत से, एक नया ब्लाक तैयार किया गया है। जिसमें अैमरजेन्सी विभाग, आई.सी.यू. जर्नल विभाग और 10 प्राईवेट कमरे और दूसरी मंजिल के 10 प्राईवेट कमरे और 2 वार्डों के निर्माण का कार्य संपूर्ण किया गया। जिससे अस्पताल का क्षेत्र और विशाल हो गया है। इस बिल्डिंग का उद्घाटन श्री 108 संत निरंजन दास जी के पावन कर-कमलों द्वारा हज़ारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में तिथि 7 फरवरी 2003 को किया गया। यह सभी सेवाए,श्री 108 संत निरंजन दास जी की देख-रेख में देश और विदेश की संगत के सहयोग से, निभाई जा रही हैं। इस अस्पताल का प्रबन्ध संत सरवण दास चैरिटेबल अस्पताल ट्रस्ट द्वारा चलाया जाता है। श्री 108 संत निरंजन दास जी इस ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। अस्पताल में 22000 सकेयर फुट कम्पलैकस का लैंटर पड़ चुका है।

संत सरवण दास मैमोरियल आई अस्पताल

आंखें शरीर का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है, इनकी सुरक्षा भी बहुत आवश्यक है। आंखों के रोगियों के इलाज के लिए, यह अस्पताल डेरा सच्च खण्ड बल्लां के पास से गुज़रती नहर के किनारे स्थित है। इसकी सेवा महान् सेवादार श्री स्वर्ण दास जी बंगड़, बीबी रेशम कौर बंगड़ और उनके परिवार गांव बल्ल UK ने एक करोड़, एक हज़ार, एक सौ ग्यारह रूपए दान के रूप में की। इस अस्पताल का नींव पत्थर, श्री 108 संत निरंजन दास जी के कर-कमलों द्वारा, तिथि 10 नवंम्बर 2004, दिन बुधवार को, संत समाज और संगत की उपस्थिति में रखा गया। यह बात वर्णनीय है कि यह महान् परिवार 1977 से लेकर प्रत्येक वर्ष ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मलीन संत सरवण दास जी की पवित्र याद में आखों का मुफ्त कैम्प लगवा रहा है। इस परिवार ने श्री गुरू रविदास सत्संग भवन के लिए अढाई एकड़ जमीन और एक लाख रुपए दान के रूप में दिये हैं। इस अस्पताल के लिए गुरू घर के कई

प्रेमियों ने तन, मन और धन के साथ सेवा की। इस अस्पताल में 2 मंज़िलों पर 28000 स्कवेयर फुट तक लैंटर पड़ चुका है। इस अस्पताल में, आँखों की जांच एवं आप्रेशन के लिए, आधुनिक मशीनों की व्यवस्था की जाएगी।

संत सरवण दास मॉडल स्कूल (संत सरवण दास नगर) फगवाड़ा

अज्ञानता अपने आप में ही एक बहुत बड़ा अभिशाप है। इस अभिशाप से मुक्त होकर, मानव जीवन के विकास के द्वार स्वत: ही खुल जाते हैं। अज्ञानता के कारण मनुष्य का विकास नहीं होता। साहिबे कमाल श्री गुरू रविदास महाराज जी इस बात की पुष्टि अपनी बाणी में करते हैं:

माधउ अबिदिआ हित कीन बिबेक दीप मलीन॥

सतगुरु स्वामी सरवण दास जी से लेकर, डेरा सच्च खण्ड बल्लां के समय-समय हुए गद्दी नशीन महापुरूषों ने इस विचारधारा का अनुसरण करते हुए, समाज के लोगों को, न केवल शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा दी बल्कि शिक्षक संस्थाएं शुरू करने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसी क्रम में तिथि 16 अप्रैल, 2002 को संत सरवण दास नगर, फगवाड़ा में श्री गुरू रविदास मंदिर कम्पलैक्स स्थित '**संत सरवण दास मॉडल स्कूल**' का नींव पत्थर रख कर, संत निरंजन दास महाराज जी ने उनकी विचारधारा को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए, शिक्षा के क्षेत्र में, एक मील पत्थर स्थापित किया है। संत सरवण दास मॉडल स्कूल, का उद्घाटन, तिथि 19 फरवरी 2004 को संत निरंजन दास जी, के कर-कमलों द्वारा किया गया। शिक्षा सत्र (2004-05) से शिक्षा का आरंभ हो चुका है। स्कूल के पास लगभग 26 कनाल ज़मीन है। स्कूल में कुल 38 कमरे हैं। यह सारी जमीन गुरू घर के महान् सेवादार श्री ब्रिज लाल और श्रीमती गुरदेव कौर के परिवार की ओर से दान की गई है। 22 क्लास रूम 20X22 फुट के हैं। चार कमरे 32X20 फुट, दो हाल कमरे 32X45 फुट, 4 कमरे 12X14 फुट, एक प्रबन्धकीय ब्लाक 40X40 फुट, डब्ल कॉरी डोर और बच्चों की सुविधा के लिए 12 बसें है। यह स्कूल सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रमाणित है। यह पूर्ण इंग्लिश मीडियम स्कूल है। दो करोड़ रुपये से अधिक की लागत से यह स्कूल तैयार किया गया है।

श्री गुरू रविदास धर्म अस्थान (संत सरवण दास नगर)

मंदिर कम्पलैक्स के लिए ज़मीन अनन्य सेवादार श्री ब्रिज लाल और उनकी सुपत्नी बीबी देबो निवासी बर्मिंघम (यू.के.) और श्री देस राज और उनकी सुपत्नी कमलेश कौर निवासी मॉडल हाऊस फगवाड़ा की ओर से, 108 संत निरंजन दास जी को दान की गई। इस धर्म अस्थान में एक सत्संग हाल, एक लंगर

हाल और 11 कमरे हैं। धर्म अस्थान निर्माण पर, लगभग डेढ़ करोड़ रुपए व्यय हो चुके हैं। इस मंदिर के ऊपर चार स्वर्ण कलश सुशोभित हैं। इसका उद्घाटन श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज के कर-कमलों द्वारा 19 फरवरी 2004 को किया गया। उद्घाटन समारोह के समय आप जी को सांकतिक रूप से, एक किलो सोने की चाबी भेंट की गई। इस अवसर पर श्री 108 संत निरंजन दास जी को, टाटा सफारी गाड़ी भी भेंट की गई। दोनो परिवारों श्री ब्रिज लाल जी और उनकी पत्नी देबो, श्री देस राज जी और उनकी पत्नी कमलेश जी को, गुरू घर द्वारा 'हरि' के चिह्न वाली सोने की चेनों से सम्मानित किया गया। इस मंदिर में हर समय गुरू रविदास जी की बाणी का प्रचार होता है।

तपोस्थान बाबा पिप्पल दास महाराज जी तथा जन्म अस्थान सतगुरू स्वामी सरवण दास जी (गिल्लपत्ती, बठिण्डा)

सतगुरु स्वामी सरवण दास महाराज जी का आगमन 15 फरवरी 1895 ई. को गाँव गिल्लपत्ती, ज़िला बठिण्डा में हुआ। इसी स्थान पर बाबा पिप्पल दास जी महाराज ने तप किया। गिल्लपत्ती गाँव से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर गाँव नाईयांवा मार्ग पर नहर के किनारे बाबा जी की ज़मीन थी, जहाँ बाबा जी खेतीबाड़ी का कार्य, करते थे। यह ज़मीन स्वर्गवासी चरन सिंह तथा उन की सुपत्नी बीबी धर्म कौर जी एवं उनके परिवार द्वारा, डेरा सच्चखण्ड बल्लां को, भेंट कर दी गई। अब यहाँ एक आश्रम का निर्माण किया गया है। 30X30 का कमरा, जिसमें बाबा पिप्पल दास जी की पावन मूर्ति स्थापित की गई है। तीन अन्य और 100 फुट लम्बी शैडु निर्मित की गई है। यह स्थान "बेरी साहिब" के नाम से प्रसिद्ध है।

श्री गुरू रविदास धर्म अस्थान सिरसगढ़ (हरियाणा)

जगत् गुरू रविदास जी की पावन अमृतवाणी के प्रचार के लिए तन, मन, धन से समर्पित डेरा संत सरवण दास जी सच्च खण्ड बल्लां, एक ऐसा आध्यत्मिक और परमार्थी केन्द्र है, जिसकी सेवा से, समस्त संसार भली-भांति परिचित है। डेरे के महापुरूष, संत बाबा पिप्पल दास जी, संत सरवण दास जी महाराज, संत हरी दास जी महाराज, संत गरीब दास जी महाराज जी, निष्काम भावना से संगत् की सेवा में मग्न रहे हैं। इस लिए समस्त भारत तो क्या, सारे संसार की संगत डेरा सच्च खण्ड बल्लां के महापुरूषों को निवेदन करती है कि महाराज जी, हमारे क्षेत्र में भी, श्री गुरू रविदास मिश्न, केन्द्र, स्थापित करें। संगत के निवेदन को ध्यान में रखते हुए, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल और पंजाब के साथ साथ हरियाणा में, अंबाला से जगाधरी जी.टी. रोड पर, 28 किलोमीटर की दूरी पर, सिरसगढ़ (निकट दुसड़का)में, श्री गुरू रविदास मंदिर का निर्माण चल रहा है। इस कार्य के

लिए माननीय श्री गुरबख्श सिंह (रिटा. आई. एफ. एस.), और बीबी राज राणी के परिवार ने 4 एकड़ और 17 मर्ले जमीन दान की है। इस मंदिर का नींव पत्थर श्री 108 संत निरंजन दास जी ने अपने कर-कमलों द्वारा 31 अगस्त 2004 को रखा। अब तक 40X114 फुट की, दो मंज़िलों का निर्माण हो चुका है। मंदिर में 100X80 फुट का एक बड़ा हाल भी निर्माणाधीन है।

श्री गुरू रविदास धर्म अस्थान कात्रज पूना (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र की धरती पर, साहिब श्री गुरू रविदास जी के, पावन मिशन के प्रचार और प्रसार के लिए एक बहुत ही विशाल मंदिर कात्रज कुंडवा, शोलापुर रोड (पूना) में एक पहाड़ी पर निर्माणाधीन है। इस पवित्र कार्य के लिए श्री सुखदेव बाघमारे और बीबी राधा के परिवार की ओर से, एक एकड़ जमीन दान की गई है। इस मंदिर का नींव पत्थर, श्री 108 संत निरंजन दास जी ने, समस्त संगत की उपस्थिति में 17 दिसम्बर, 2003 को रखा गया। स्मर्णीय है कि सेठ बाघमारे परिवार ने, पहले ही अपने विशाल घर में श्री गुरू रविदास मंदिर बनाया हुआ है। श्री सुखदेव बाघमारे जी, ने कई गाँवों में, श्री गुरू रविदास जी की मूर्तियों की स्थापना करवाई है। श्री गुरू रविदास मंदिर, कटरास पूना के इस परमार्थी कार्य के लिए, श्री चमन लाल जी क्रोटाणे, मोहन लाल क्रोटाणे, मदन लाल क्रोटाणे और सुरजीत सिंह जी बहुत प्रयत्नशील हैं। इस मंदिर में 85X35 फुट का विशाल दो मंज़िली गुरु रविदास मन्दिर बन चुका है। इसके साथ ही श्री सुखदेव बाघमारे जी द्वारा, श्री गुरु रविदास गेट और श्री गुरु रविदास स्तंभ का निर्माण किया गया है।

'बेगमपुरा शहर' (साप्ताहिक पत्रिका) त्रैभाषिक

'बेगमपुरा शहर' पत्रिका, ब्रह्मलीन श्री 108 संत गरीब दास जी द्वारा 1991 में आरंभ की गई थी। ब्रह्मलीन संत गरीब दास जी, बड़े दूरदर्शी महापुरूष थे। आप इस बात से, भली-भाति परिचित थे कि समाज में चेतना पैदा करने में अखबार की बहुत बड़ी भूमिका है। गुरू जी के पुरुषार्थ के कारण ही, पिछले 18 वर्षों से यह अखबार निर्विघन छप रही है। आज यह अखबार वर्तमान् गद्दी नशीन श्री 108 संत निरंजन दास जी की देख-रेख और श्री 108 संत रामानंद जी, जो अखबार के मुख्य संपादक थे, के नेतृत्व में और समस्त बेगमपुरा स्टाफ की लगन से, समाज के लोगों में अपनी विलक्षण पहचान स्थापित कर चुकी है। इस पत्रिका की प्राप्तियों को देखते हुए इसके मुख्य संपादक श्री 108 संत रामानंद जी को, भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा 10 दिसम्बर 2004 को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में 'नैशनल अवार्ड' से सम्मानित किया गया। अब यह पत्रिका तीन भाषाओं, पंजाबी के साथ साथ हिन्दी और अंग्रेज़ी में भी छपने लगी है। अब

बेगमपुरा शहर पत्रिका के मुख्य संपादक संत सुरिन्दर दास बावा जी हैं, बावा जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा श्री गुरु रविदास 'नैश्नल अवार्ड 2006' से सम्मानित किया गया।

श्री गुरू रविदास सत्संग भवन, डेरा सच्च खण्ड बल्लां

डेरा सच्च खण्ड बल्लां के महापुरुषों, ब्रह्मलीन सतगुरु बाबा पिप्पल दास जी महाराज, ब्रह्मलीन 108 संत सरवण दास जी महाराज, ब्रह्मलीन 108 संत हरी दास जी महाराज, ब्रह्मलीन 108 संत गरीब दास जी महाराज और वर्तमान् गद्दी नशीन 108 संत निरंजन दास जी महाराज द्वारा, श्री गुरू रविदास जी की विचारधारा का, पहले से ही भरपूर प्रचार किया जाता रहा है। उनकी आध्यात्मिक शक्ति, पवित्रता, सच्चाई और समाज कल्याण के दृष्टिकोण को मुख्य रखते हुए, उनके श्रद्धालुओं की संख्या, बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। इसीलिए श्री 108 संत सरवण दास चैरिटेबल ट्रस्ट यू. के. के निर्णय तथा विदेशी संगत के निवेदन करने पर, श्री 108 संत निरजंन दास जी द्वारा, एक विशाल 'श्री गुरू रविदास सत्संग भवन' का नींव पत्थर 12 मार्च 2000 को हज़ारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रखा गया। यह सत्संग भवन 220 फुट लंबा और 180 फुट चौड़ा है। हज़ारों श्रद्धालुओं में, इस सत्संग भवन के प्रति इतना उत्साह, जोश और लगन थी कि उन्होंने इस विशाल भवन की नींव एक दिन में ही खोद ली। इस भवन के लिए अढ़ाई एकड़ ज़मीन स्वर्ण दास बंगड़ उनकी धर्म पत्नी बीबी रेशम कौर जी (यू.के.) और उनके परिवार द्वारा डेरे को दान की गई है।

सत्संग भवन का निर्माण कार्य बड़ी तेज़ी से किया गया। लगभग 300 गाँवों में से चार पाँच गाँवों के डेढ़ दो सौ श्रद्धालु, भवन के निर्माण की सेवा के लिए हर रोज़ डेरे में आते तथा निर्माण कार्य में सेवा करते, श्रद्धालुओं की सेवा भावना को देखकर संत निरंजन दास जी उनकी प्रंशसा करते और उनको आर्शीवाद देते। संत रामानंद जी कई बार संगत की श्रद्धा और उत्साह देखकर, खुद भी उनके साथ भवन के निर्माण की सेवा में, लग जाते, जिस से संगत को और उत्साह मिलता। फलस्वरूप थोड़े समय में ही इस विशाल सत्संग भवन के निर्माण का कार्य संपूर्ण हो गया। चारों कोनों पर 16 फुट ऊँचे गुंबद और मुख्य द्वार पर 20 फुट ऊँचे और एक बड़ा गुंबद सत्संग भवन की शोभा को बढ़ा रहे हैं। इतने बड़े भवन की छत के आर्कनुमा पाँच भाग हैं। सत्संग भवन में 80 फुट लंबी, एक मजबूत स्टेज भी बना दी गई है। इस स्टेज के नीचे बेसमैंट में टी. वी. स्टूडियो बनाया गया है। मुख्य द्वार के नीचे 134 फुट लंबा और 30 फुट चौड़ा 'जोड़ा घर' बेसमेंट में तैयार किया गया है। श्री गुरु रविदास सत्संग भवन का प्रचार देश-विदेशों में हो चुका है। इस

सत्संग भवन के दर्शनों के लिए देश-विदेश से संगत आती रहती है। दर्शनी डियोड़ी पर मुख्य गुंबदों के अतिरिक्त, चारों कोनों में गुंबदों पर सात स्वर्ण कलश चढ़ाए गए हैं। इन गुंबदों से पर्दा उठाने की रस्म माघी के पवित्र अवसर पर, तिथि 14 जनवरी 2004 को की गई। 14 फरवरी 2007 को, सतगुरु रविदास नामलेवा बर्मिंघम संगत द्वारा स्वर्ण पालकी भेंट की गई, जिसे श्री गुरु रविदास मंदिर फगवाड़ा से, डेरा सच्चखण्ड बल्लां तक एक शोभायात्रा के रूप में लाया गया। इस विशाल भवन पर 7 स्वर्ण कलश सुशोभित हैं। इस भवन का शुभ उद्धघाटन, 15 फरवरी 2007 ई. को ब्रह्मलीन सतगुरु स्वामी सरवण दास जी के आगमन पर्व पर, संत निरंजन दास जी द्वारा किया गया।

श्री गुरु रविदास संगीत अकेडमी

श्रीमान 108 संत निरंजन दास जी महाराज और कौम के महान् शहीद संत रामा नंद जी की प्रेरणा से डेरा सच्चखण्ड बल्लां में संगीत अकेडमी चलाई जा रही है, यहां विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त करते हैं।

श्री गुरु रविदास धर्म अस्थान काटोर

श्री गुरु रविदास मंदिर काटोर, 4 ऐकड़ ज़मीन संत गुरबचन दास जी ने डेरा सच्चखण्ड बल्लां को दान की गई। यहां पर श्री गुरु रविदास जी की प्रतिमा स्थापत की गई।

कौम के अमर शहीद संत रामा नंद जी की याद में धर्म अस्थान

कौम के अमर शहीद संत रामा नंद जी की याद में श्री गुरु रविदास धर्म अस्थान के लिए श्री चैन राम चुंम्बर और क्रिणा ग्राम संघें जगीर वालों ने एक विशाल कोठी रविदासिया कौम के अमर शहीद श्री 108 संत रामा नंद जी की याद में डेरा सच्चखण्ड बल्लां को सौंपी।

दूरदर्शन से 'अमृत वाणी श्री गुरू रविदास जी' प्रोग्राम

डेरा सच्च खण्ड बल्लां के महान् महापुरूषों द्वारा, दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल, जालन्धर से श्री गुरू रविदास जी की अमृत वाणी को, देश-विदेश में, प्रेमियों के लिए प्रसारित किया जाता है। इस प्रोग्राम में, श्री 108 संत रामानंद जी, गुरबाणी की व्याख्या करते हैं। प्रसिद्ध कीर्तनी जत्थे गुरबाणी कीर्तन करते हैं। यह प्रोग्राम पहले डी. डी. पंजाबी पर, आधे घंटे के लिए प्रसारित किया जाता था, परन्तु अब यह प्रोग्राम डी.डी. नैशनल जालन्धर से, हर मंगलवार डी. डी. पंजाबी पर प्रसारित किया जाता है।

डेरे के प्रमुख समागम

माघ की सक्रान्ति का समागम, जगत्गुरु रविदास महाराज का आगमन पर्व और रविदासिया धर्म का स्थापना दिवस-श्री गुरु रविदास जन्म-स्थान मन्दिर सीरगोवर्धनपुर वाराणसी में माघ पूर्णिमा, ब्रह्मलीन श्री 108 संत हरी दास जी की याद में 6 फरवरी को डेरा बल्लां में संत हरी दास मानव एकता संत सम्मेलन, ब्रह्मलीन संत सरवण दास महाराज जी का प्रकाश पर्व 15 फरवरी, जगत्गुरु रविदास महाराज जी का गंगा घाट पर पत्थर तराये ऐतिहासिक वैसाखी पर्व, संत रामानन्द जी का शहीदी दिवस 25 मई। ब्रह्मलीन संत सरवण दास जी का बरसी समागम 11 जून, जगत्गुरु रविदास महाराज जी की ज्योति जोति समाए पर्व आषाढ़ की सक्रांति को डेरा सच्चखण्ड बल्लां में, संत गरीब दास जी का बरसी समागम 23 जुलाई को। इसके अतिरिक्त पहले नवरात्रे के दिन बाबा पिप्पल दास जी का ज्योति-ज्योत पर्व मनाया जाता है और डेरा सच्च खण्ड बल्लां में 'हरि' के निशान साहिब चढ़ाए जाते हैं।

हर रविवार और सक्रान्ति को, विशेष सत्संग का आयोजन किया जाता है।

डेरा सच्च खण्ड बल्लां उपरोक्त वर्णित धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के कारण विश्व-विख्यात है।

''नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चमारं''

सतगुरू रविदास महाराज जी का जिस जाति समाज में आगमन हुआ, उस जाति का बडा गौरवशाली इतिहास है। यह जाति महान् विकसित सभ्यता को जन्म देने का श्रेय लिए बैठी है। यह अमीर सभ्यता और संस्कृति के स्वामी महान् 'चमार' जाति इतिहास के पन्नों में अपनी महानता समाए बैठी है। सतगुरू रविदास महाराज जी अपनी अमृतवाणी में अति स्वाभिमान के साथ कहते हैं,'कहि रविदास खलास चमारा'। जिस समय चमार जाति के लोग साधारण मार्ग पर आने से संकोच करते थे, उस समय गुरू रविदास महाराज जी राजा नागर मल के दरबार में कह रहे हैं ''नागर जना मेरी जाति बिखिआत चमारा''। हे नागर मल व नगर वासियो मेरी जाति चमार है। इस की ख्याति को संसार जानता है। डा. सोहन पाल सुमनाक्षर जी अपनी कलम से महान् चमार जाति का जिक्र करते हुए लिखते हैं कि 'चमार जाति किसी युग में स्वर्ण जाति के समान ही नहीं बल्कि उससे भी अधिक दृढ़, बलशाली, विकसित व आत्म निर्भर थी'। चवर पुराण में इस वंश के कई साल धरती पर शासन करने का वर्णन मिलता है। कई वर्षों तक धरती के राजा चमार जाति के रहे हैं। चमार जाति अति विकसित व सुदृढ जाति थी। विश्व की महान् सभ्यता सिंधू घाटी के सृजक ये लोग थे। लेखक श्री दोली राम जी ने अपनी कलम से लिखा है कि 'जब भारत में आर्य वंश के विदेशी आए तो उन्होंने भारत के मूल निवासियों की नजदीकियों का नाजायज लाभ उठाया और छल कपट व साम, दंड, भेद-भाव की कूट नीतियों द्वारा उन्हे पराजित करने के बाद कपटी वर्ण-व्यवस्था की रचना की। भारत के मूल निवासियों को कार्य के आधार पर न चलते हुए वर्ण प्रथा के अनुसार विभाजित कर दिया। धीरे-धीरे चमार जाति के लोग मानवीय अधिकारों से वंचित होते गए और उन्हें अछूत व पतित करार दिया गया। जब हम इतिहास के पन्नों को देखते हैं तो चमार जाति के महान राजा-महाराजाओं की वीरता के किस्से मिलते हैं। बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी ने अपनी महान पुस्तक **'The Untouchable'** में राजा सुदास जी की वीरता व युद्ध का वर्णन किया है। इसमें कोई शक नहीं कि सिंधू घाटी की सभ्यता हमारे पूर्वजों की विकसित सभ्यता का नाम था, जो आज भी विश्व को हैरान कर रही है। इतिहास में सिंधू घाटी की सभ्यता के अंतिम शासक में राजा चमर (चमार सम्राट) का जिक्र मिलता है, जिसने अपने मूल निवासी अस्तित्व को जिंदा रखने के लिए आर्यों संग युद्ध लडे और अंत में वीरगति को प्राप्त हो गया। उसकी सारी सेना देश के अन्य भागों में फैल गई। इनमें से महाराजा बली और महाराजा सुदास जैसे योद्धा पैदा हुए। डा. विजय किशोर लिखते हैं कि ऋगवेद में दशरथ युद्ध का वर्णन है, जहां दस

राजाओं के समक्ष राजा सुदास पराजित हो जाते हैं। राजा सुदास की हार के बाद, उनके जो वंश हुए, वे चमार हुए। इस राजा सुदास की याद में 'दास' जाति की जो उपाधी लगाई जाती थी, वह उपाधि भारत की 90 प्रतिशत चमार जाति के लोगों की उपाधि थी। इतिहास में जिक्र मिलता है कि 600 ईसा पूर्व चमार जाति ने एक 'आजीविका संघ' बनाया था, जिसका उदेश्य आर्य लोगों के कर्मकांड व अत्याचारों के विरूद्ध आवाज बुलंद करना था। राजा सुदास का पुत्र युवराज भारत भी एक वीर योद्धा राजा हुआ, जिसके नाम से ही 'भारत' देश का नाम रखा गया था। छत्रपति शिवा जी महाराज की सेना में चमार जाति के लोगों की संख्या बहुत अधिक थी। अंग्रेजी पुस्तक 'द चमार' में लेखक जी. डबलयू. ब्रिगश लिखते हैं कि यह जाति मार्शल जाति थी। एक लेखक अपने समय की चमार बटालियन के हैरतअंगेज कारनामों से अति प्रभावित हुआ। अंग्रेजों ने चमार रैजीमेंट की स्थापना की थी। चमार रैजीमेंट की कई बटालियन भी आईं, जो एन. ए. के मुकाबले के लिए सिंघापुर भेजी गई थीं। चमार रेजीमेंट अंग्रजों ने अवश्य बनाई थी परन्तु जब चमार जाति के लोगों ने देखा कि अंग्रेज हमारे ही हाथों से हमारे भाई मरवा रहे हैं तो चमार रेजीमेंट के योद्धाओं ने अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। फलस्वरूप अंग्रेजी सरकार ने चमार रेजीमेंट को समाप्त कर दिया। चमार रेजीमेंट की बहादुरी को देखते हुए भारत सरकार द्वारा चमार रेजीमेंट स्थापित करने का निर्णय लिया गया ताकि चमार रेजीमेंट के शहीद सिपाहियों को सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सके। प्रसिद्ध विद्वान वी.टी. राजशेखर लिखते हैं,''चमार जाति आने वाले समय की शासक है।'' पहले भी आदि काल से एक जाति का शासन रहा है, जिसने ऐसे राजा-महाराजाओं को जन्म दिया है जिन पर विश्व को गर्व है। इतिहास में एक घटना दर्ज है कि अकबर ने बीरबल से पूछा कि तुम्हें किस के न्याय पर विश्वास है, भरोसा है तो बीरबल ने झट से जवाब देते हुए कहा कि 'चमारों की पंचायतों पर' क्योंकि उनका फैसला बहुत सोच विचार कर के बाद न्याय पर आधारित होता है। इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता कि चमार जाति भारत की मूल निवासी लोगों की सभ्यता है जिसने सिंधू घाटी की विश्व प्रसिद्ध सभ्यता का निर्माण किया है। आदि काल से लेकर आज तक के इस जाति के इतिहास पर नजर डालें तो यह बडी कठिनाईयों में से निकल कर आया है, क्योंकि हमारा इतिहास नष्ट किया गया था परन्तु सतगुरू रविदास महाराज जी ने अपनी अमृतवाणी की रचना करके साहित्य सृजक क्रांति का शुभांरभ किया है, जो निरंतर उनके बाद भी चला आ रहा है। चमार जाति में पैदा हुए महापुरूष, जिन के पावन वचन सदैव हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे, उन पर हमें सदैव गर्व रहेगा।

चमार जाति में जन्में जगत प्रसिद्ध महापुरूष व महान हस्तियां जो अपने कर्मों

से विश्व विख्यात हुए, आईए उन महान् हस्तियों के विष्य में कुछ ज्ञान प्राप्त करें-

सतगुरू बाबा पिप्पल दास महाराज जी - धन्य-धन्य बाबा पिप्पल दास जी के दर्शाये मार्ग पर चलकर जगतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन को चार चांद लगाने वाले महान रहिबर सतगुरू सरवण दास महाराज जी का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। सतगुरू स्वामी सरवण दास जी ने अपने पिता बाबा पिप्पल दास महाराज जी के साथ गिल्ल पट्टी भटिंडा से चल कर जन-जन को प्रभु के साथ जोडते हुए अंत दोआबा की धरती जालंधर शहर के गांव बल्लां में डेरा लगा लिया। सतगुरू बाबा पिप्पल दास जी ने जीवन भर प्रभु प्रेम, भाईचारे, सद्भावना का पावन उपदेश संगतों को श्रवण कराया और सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन अमृतवाणी के साथ संगतों को जोडा। सतगुरू स्वामी बाबा पिप्पल दास महाराज जी बिक्रमी संवत 1985 सन 1928 ई. 26 अस्सू दिन गुरूवार पूर्वा नक्षतर व प्रातः अपनी जीवन यात्रा संपूर्ण करते हुए ब्रह्मलीन हो गए।

सतगुरू स्वामी सरवण दास जी - बाबा पिपल दास जी के सपुत्र सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने उनके दर्शाये मार्ग पर चलते हुए, गरीबों के कल्याण के लिए अनेकों कार्य किये। उन्होंने गरीब वर्ग के शिक्षा से वंचित बच्चों को, डेरा बल्लां में ही पढ़ाने के लिए स्वयं शिक्षा देनी प्रारंभ की। वे गरीब बच्चों को पढाई के साथ-साथ खाना भी देते थे। सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने श्री गुरू रविदास महाराज जी के जन्म स्थान की खोज करवा के रविदासिया धर्म के लोगों को उनका महान तीर्थ अस्थान दिया। इस पावन तीर्थ स्थान का नींव पत्थर उन्होंने 11 जून 1965 को संत हरी दास जी से रखवाया। आप जी संगतों के दुख निवारण के लिए डेरा सचखंड बल्लां में आर्युवैदिक दवाईयां भी बना कर देते थे। संत सरवण दास ने परम पूजनीय बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी से भी विशेष मुलाकात की और उन्हें उनके गृह पधार कर पावन आर्शीवाद भी दिया। जब डा. अम्बेदकर जी अछूतों के मानवीय अधिकारों की मांग कर रहे थे तो महात्मा गांधी जी ने उनकी मांग का विरोध करते हुए उनके विरूद्ध मरण व्रत रख लिया था। दूसरी ओर बाबू मंगू राम मंगोवालिया जी ने भी डा. अम्बेदकर जी की मांग के पक्ष में मरण व्रत रखा था। अंत में जब बाबू मंगू राम मंगोवालिया ने मरण व्रत खोला तो गरीबों के मसीहा सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने उन्हें जूस पिलाकर उनका अन्नशन तोडा। उस समय डा. अम्बेदकर जी और महात्मा गांधी के बीच पूना पैकेट का समझौता हुआ था। सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी हर पल मानवता के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे। यह उनके तप व

तपस्यिा का ही फल है कि आज रविदासिया धर्म के लोग पूरे विश्व में अलग अस्तित्व कायम कर चुके हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन की बेमिसाल लहर दोआबा पंजाब में उठी और आज पूरे विश्व में इसका रंग देखा जा सकता है। संत सरवण दास महाराज जी ने डेरा बल्लां में 2 फरवरी 1964 को 'डेरा रविदासियां दा' लिखकर आगामी ऐलान कर दिया था कि वह दिन दूर नहीं, जब सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा को समर्पित रविदासिया धर्म बनेगा। संत सरवण दास जी की अपार कृपा से विश्व के कोने-कोने में सतगुरू रविदास धर्म अस्थानों के नींव पत्थर रखे गए। सतगुरू सरवण दास जी की महिमा में उच्चरित कविता -:

''आए कांशी विच तारिया नागर मल जिस
इकदम माया वाली फांसी किन तोडी आ।
फिर फिर सारे जग विच एकता फैलाई किस
डुब्बे जांदे भारत दी जिंद किन मोडी आ।
ऊँच नीच गऊ रंग भाई है न भेद कोई
जाति पाति हिंद विचों आए किन तोडी आ।
दस्सो सतगुरू रविदास जी तों बिना चौहां युगां चों
फटी होई सृष्टि मिलाए किन जोडी आ।''

सतगुरू सरवण दास महाराज जी अमृतवाणी जगतगुरू रविदास जी का प्रचार करते हुए अंत में 11 जून 1972 में ब्रह्मलीन हो गए।

सतगुरू हरी दास महाराज जी - सतगुरू सरवण दास महाराज जी के बाद उनके प्रिय शिष्य सतगुरू हरी दास महाराज जी डेरे के संचालक बने। आप जी के पिता श्री हुक्म चंद जी और माता श्रीमति ताबी जी थे। आप जी का जन्म स्थान गांव गढ़ा जिला जालंधर है। आप जी डेरा सच्चखंड बल्लां के संचालक बनाए गए और आपके सहायक के रूप में संत गरीब दास महाराज जी व संत निरंजन दास महाराज जी की सेवा लगाई गई। संत हरी दास महाराज जी ने संत सरवण दास महाराज जी की पावन याद में 11 जून 1973 को डेरा बल्लां में मंदिर का निर्माण करावाया व संत सरवण दास महाराज जी की मूर्ति की स्थापना भी की गई। बाद में 31 अक्तूबर 1976 को विशाल सत्संग भवन का निर्माण करवाया गया, जिससे संगतों को सत्संग श्रवण करने की सुविधा हुई। संत हरी दास महाराज जी सदैव गरीब बच्चों को विद्या ग्रहण करने की प्रेरणा देते थे। वे सदैव फरमाया करते थे कि जो परिजन अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं, वे अपने बच्चों के दुश्मन होते हैं। आप बच्चों की शिक्षा पर बल देते थे। आप जी बाल विवाह, नशा सेवन आदि कुरीतियों को समाप्त करने के लिए सदैव सत्संग में प्रवचन करते रहते थे। आप जी सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा के प्रचार व प्रसार हेतु अमृतवाणी द्वारा संगतों को

जोडते थे। आप जी प्रभु-प्रेम और गुरू रविदास मिशन के साथ संगतों को जोडते हुए संगतों पर सतसंग द्वारा अमृतवर्षा करते हुए अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए लगभग 100 वर्ष की आयु में 6 फरवरी 1982 में ब्रह्मलीन हो गए। आप जी के परोपकारों को याद करते हुए संगतें सदैव आप जी को मन में बसाए रखेंगी।

संत गरीब दास जी - सतगुरू हरी दास महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के बाद डेरा सच्चखंड बल्लां के संचालक संत गरीब दास महाराज जी बनाये गए। आप जी का आगमन् 1925 ई. को गांव जलभे जिला जालंधर में पिता नानक चंद जी और माता श्रीमति हर कौर जी के गृह में हुआ। गांव जलभे की संगतें अकसर डेरा सचखंड बल्लां आती रहतीं थीं। एक दिन संगतों के आया साथ एक छोटा सा बालक भी डेरा बल्लां आया, जिस से सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने गोद में बिठा कर पूछा,''काका तेरा नाम की है'' तो बालक ने जवाब दिया, 'गरीबू' तो सतगुरू स्वामी सरवण दास जी ने फरमाया, 'तू गरीबू नहीं तू तां गरीब निवाज ऐं'। आप जी की डेरा सचखंड बल्लां के साथ ऐसी प्रीति बन गई कि आप डेरे की सेवा में ही लीन रहते। आप जी ने डेरा सच्चखंड बल्लां के गददी नशीन के रूप में समाज के लिए कई परोपकार किये, जिनमें श्री गुरू रविदास महाराज जी के जन्मोस्थान मंदिर का निर्माण अपने दिशा-निर्देशन में कराया और उस पर स्वर्ण कलश सजाए व मूर्ति की स्थापना की। दीन-दुखियों के रोग मिटाने के लिए ढेपुर-कूपुर अड्डा कठार जिला जालंधर में अस्पताल का निर्माण करवाया, जिसका उद्घाटन 1984 में किया गया था। आप जी ने गरीब व पिछड़े समाज की आवाज बुलंद करने हेतु साप्ताहिक पत्रिका 'बेगमपुरा शहर' प्रारंभ की, जो निरंतर समाज की सेवा में कार्यशील है। आप जी ने देश-विदेश में गुरू रविदास मिशन व धर्म प्रचार हेतु इंगलैंड, अमेरिका, कैनेडा व यूरोप के कई देशों की यात्रा की और इंगलैंड, बर्मिंघम, वुल्वरहैंपटन, स्टूर्यड कैंट, साऊथहाल व कई अन्य स्थानों पर जाकर सतगुरू रविदास महाराज जी का मिशन फैलाया। आप जी 23 जुलाई 1994 को ब्रह्मलीन हो गए। आप जी के बाद डेरा सच्चखंड बल्लां का संचालन सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी को सौंपा गया, जो सतगुरू रविदास महाराज जी के आर्शीवाद से समाज को अपने योग नेतृत्व में लेकर चल रहे हैं।

संत निरंजन दास महाराज जी - संत गरीब दास महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के बाद श्री 108 संत निरंजन दास महाराज जी को डेरा सच्चखंड बल्लां का संचालन सौंपा गया। आप जी का जन्म पिता साधू राम जी और माता रूकमणि जी के गृह में गांव रमदासपुर नजदीक अलावलपुर जिला जालंधर में 06.01.1942 को हुआ। आप जी के माता पिता जी संत बाबा पिप्पल दास महाराज जी व संत सरवण दास महाराज जी के अनन्य भक्त थे।

घर में जब भी समय मिलता आप संतों की सेवा में लग जाते और संतों के प्रवचन श्रवण करते । आप जी निरंतर संतों की सेवा करते थे। आप जी केवल 8 वर्ष की आयु के थे जब आप जी को डेरे की सेवा मिल गई। एक दिन सतगुरू स्वामी सरवण दास महाराज जी ने आप जी के पिता जी से पूछा कि 'काके दा की नां है' आप जी के पिता जी ने कहा कि इसका नाम निरंजन रखा है परन्तु यह काम में सुस्त है। संत सरवण दास महाराज जी ने कहा कि आज से हम इसका नाम 'हवाईगर' रखते हैं। हमें दिखता है कि यह बालक सुस्त नहीं है बल्कि यह हवा से भी अधिक तेज है। आप जी को संत सरवण दास जी सदैव 'हवाईगर' के नाम से पुकारते थे। आप जी को ब्रह्मलीन संत गरीब दास महाराज के बाद डेरे का संचालन सौंपा गया और आप जी के सहायक के रूप में संत रामानंद महाराज जी की सेवा लगाई गई। आप जी ने सतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन को बुलंदियां प्रदान कीं। आप जी के नेतृत्व में डेरा सच्चखंड बल्लां द्वारा समाज की सेवा में अनेकों प्रोजेक्ट चलाऐ जा रहे हैं।

अमर शहीद संत रामानंद जी - सतगुरू गरीब दास जी के ब्रह्मलीन होने के बाद डेरा सच्चखंड बल्लां के गददी नशीन सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी को डेरे की सेवाऐं निभाने हेतु संचालन सौंपा गया। उनके सहायक के रूप में संत रामानंद महाराज जी की सेवा लगाई गई। संत निरंजन दास महाराज जी के सकुशल नेतृत्व और संत रामानंद महाराज जी की तन-मन से किये गए प्रचार से जगतगुरू रविदास महाराज जी का उत्त्कृष्ट व महान मिश्न विश्व भर में प्रचलित हुआ। ईर्ष्या से ग्रस्त मानव विरोधी लोगों से यह सब सहन नहीं हुआ। उन्होंने प्रचार कर रहे संत निरंजन दास महाराज जी और संत रामानंद महाराज जी पर जानलेवा हमला कर दिया। फलस्वरूप सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी गंभीर रूप से घायल हो गए और संत रामानंद महाराज जी शहादत का जाम पी गए। वे शहीद होकर समूह गुरू रविदास जी के पैरोकारों के लिए प्रेरना स्रोत बन गए। वियाना कांड में शहीद हुए संत रामानंद महाराज 24 मई 2009 को आस्ट्रिया शहर में ब्रह्मलीन हो गए। शहीद होते समय आप जी की पवित्र रसना से ''जय सतगुरू रविदास जी की जय'' जयकारा गूँज रहा था। आप जी की अमर शहीदी के बाद समूह समाज में विद्रोह की लहर दौड गई। लोग सडकों पर उतर आए और अपने रोष का भयंकर प्रदर्शन किया। पंजाब में जालंधर, अमृतसर, फगवाडा, होशियारपुर, पटियाला, कपूरथला, गुरदासपुर, पठानकोट, बटाला, फिल्लौर, संगरूर आदि शहरों में अनिशचित काल के लिए र्क्फ्यू लगा दिया गया। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में रविदासिया धर्म के पैरोकारों की ओर से कडा विरोध प्रदर्शन किया गया। कई स्थानों पर पुलिस बल द्वारा निहत्थे

लोगों पर फायरिंग भी की गई और बजुर्ग स्त्रियों को पीटा गया। इस दौरान श्री विजय कुमार पुत्र श्री जसपाल सिंह, गांव ढिलवां, डा. दकोहा जालंधर, श्री तेलू राम पुत्र श्री ढेरू राम गांव हुसैनपुर, डा. कल्याणपुर जालंधर, श्री बलकार सिंह पुत्र श्री गुरदास राम गांव खोखड दवाखडी, डा. खुडडा नजदीक टांडा, श्री राजेंद्र कुमार पुत्र श्री अनंत राम रामगढ फिल्लौर शहीद हो गए, जिन्हें समाज कभी भी भुला न पाएगा।

शहीद संत रामानंद महाराज जी के बाद सतगुरू निरंजन दास महाराज जी के आर्शीवाद से संत सुरिन्दर दास बावा जी डेरे में विशेष सेवायें निभा रहे हैं। आप जी का जन्म 14 मार्च 1973 को पिता श्री गुरदास राम जी और माता श्रीमति गुरबचन कौर जी के गृह में हुआ। जब बीबी गुरबचन कौर जी बीमार हुए तो संत सरवण दास महाराज जी ने वचन किए थे 'बीबी गुरबचनो तूं जीवेंगी पर ऐह बच्चा नहीं पर अग्गे तेरे दो बालक होणगे'। यह शब्द सुन कर बीबी गुरबचन कौर ने संत सरवण दास जी को धीमे स्वर में याचना की, 'ऐ मेरे सतगुरू जीओ बडा बेटा आपका हुआ'। 5 वर्ष की आयु में संत हरी दास महाराज जी आप जी को भगवां भेस धारण करवाकर डेरा सच्चखंड बल्लां ले आए। संत गरीब दास महाराज जी की प्रेरणा से आपने अपनी विद्या संपूर्ण की। आज डेरा सच्चखंड बल्लां में सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी की पावन सरप्रस्ती में डेरे की सेवायें निभा रहे हैं। संत रामानंद महाराज जी के बलिदान के बाद संत सुरिंन्दर दास बावा जी के कंधों पर जिम्मेदारी का भार बढ गया परन्तु जगतगुरू रविदास महाराज जी के पावन आर्शीवाद से उन्हें कभी थकावट तक नहीं हुई। सतगुरू रविदास अमृतवाणी ग्रंथ में उन्होनें सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी के नेतृत्व में संत समाज के साथ अग्रणीय भूमिका निभाई है, जिसे रविदासिया कौम कभी भी विसार नहीं सकती।

चमार जाति के गौरवशाली इतिहास में समय समय पर जिन महापुरूषों ने जन्म लिया, उन महापुरूषों व महान् हस्तियों का संक्षिप्त जीवन -:

तथागत गौतम बुद्ध- 563 बी.सी. में गौतम बुद्ध जी का जन्म हुआ। आप जी के माता का नाम महामाया, जो कोरी जाति से थे। आप जी के पिता साक्य जाति से संबधित थे। कोरी जाति और साक्य वंश चमार जाति की ही शाखायें थीं। तथागत गौतम बुद्ध जी का सम्बंध सीधे रूप से चंद्रवंश के साथ जुडता है। आप जी ने विश्व को सामाजिक न्याय का सिद्धांत दिया। आप जी की शिक्षा 'मानव दुखी क्यों है?' दुखों का कारण समझो और उसे दूर करने का प्रयास करो, दुख समाप्त हो जायेंगे। अपनी इच्छाओं को अपने अधीन रखें न कि खुद इच्छा के अधीन हो जाएं। बुद्ध वाणी स्पष्ट करती है वर्ण, वर्ग, मजहब, धर्म, कर्म, देवी-देव सभी काल्पनिक हैं। बुद्ध की शिक्षा में

पंचशील अष्ट मार्ग की शुद्ध वाणी दया, समानता और सदाचार के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है। आज बुद्ध की शिक्षाओं का सार बुद्ध धर्म के 26 देशों में लोकप्रिय है। महान सम्राट अशोक ने कलिंग (उडीसा) की लड़ाई लड़ी परन्तु विजय के बाद देखा कि इस युद्ध में कितना रक्त बहाव हुआ, तो उसका हृदय तडप उठा और महात्मा बुद्ध की शिक्षायों पर चलते हुए उसने बोधी राजा बनकर शासन व प्रचार किया। आज सम्राट अशोक के राज्य को 'सुनहिरी युग' कहा जाता है। वह मौर्य वंश में से था और उसके पूर्वज चंवर (चमार) थे।

गुरू घासी दास जी- आप जी का जन्म 18 दिसंबर 1756 ई. को गांव गिरदापुरी, छतीसगढ में हुआ। सतगुरू घासी दास जी के पिता एक गरीब परिवार में से थे। आप जी प्रभु प्रेम, मानववादी महापुरूषों के मिश्न का प्रचार किया करते थे। सतगुरू घासी दास जी गरीब झौंपडियों में जाकर प्रचार किया करते थे। आप जी की वाणी आज भी समाज का मार्ग दर्शन करती है। आप जी की 'पत्थी पस्स' नामक एक प्रसिद्ध रचना आज भी छत्तीसगढ में पढी जाती है। 80 वर्ष की जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए आप जी ब्रह्मलीन हो गए। कुछ विद्वानों ने लिखा है एक बेटा बालक दास उनका उत्तराधिकारी बनाया गया, जिसे मानव विरोधियों ने कत्ल कर दिया।

गुरू गोरख नाथ - गुरू गोरख नाथ जी ने जोगियों में अग्रणी होने की भूमिका निभाई। गुरू गोरख नाथ से जुडी अनेकों साखियां सुनते हुए प्रतीत होता है कि वे बहुत पहुंचे हुए महापुरूष व आध्यात्मिक अवस्था के स्वामी थे। आप जी की चलाई मानववादी लहर का मूल रूप आज मूल रूप में नहीं मिलता। गुरू गोरख नाथ जी ने बहुत सी वाणी की रचना की है। इंद्रियों को भोग-विलासता से मुक्त रहने की प्रेरणा दी और सारे विश्व को 'अलक्ख निरंजन' का शब्द दिया। आज भी उनकी साची वाणी जोग का मार्ग दिखाती है।

1- जोगी सो जो राखै जोग, जीभा चंदरी न करै भोग,
अंजन छोड निरंजन रहै, ताको गोरख जोगी कहै।

2- एक में अनंत अनंत में ऐके अनंत पाया,
अंतरि एक सो परचा हुआ तब अनंत एक से समझाया।

बाबा गज्जन शाह जी - संत बाबा गज्जन शाह जी का जन्म चमार जाति में पिता बसवा दास, दिल्ली निवासी के गृह में हुआ। आप जी के आनंदमय प्रभु विचारों के कारण हिन्दू, सिक्ख सभी वर्गों के लोग आपके अनुयायी थे। बाबा गज्जन शाह जी की प्रभु के प्रति दीवानगी के कारण आप के सेवकों का गोत्र ही 'दीवाना' पड गया। महाराजा रणजीत सिंह जी ने बाबा गज्जन शाह की भक्ति भाव को देखते हुए 22000 बीघा जमीन उन्हें दान के रूप में भेंट की।

बाबा हैदर दास – बाबा हैदर दास जी का जन्म चमार जाति में हुआ। सूफी संतों, महापुरूषों की संगति करने व साधना में लगने के कारण आप जी का नाम हैदर शाहे के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आप जी ने सतगुरू रविदास महाराज और सतगुरू कबीर जी की मानववादी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने में अपना जीवन समर्पित किया। आप जी की याद में आप जी का समाधि स्थल बनाया गया जो ईरविन अस्पताल दिल्ली गेट, ज्वाहर लाला नेहरू मार्ग नई दिल्ली में सुशोभित है।

संत हरी दास जी– आप जी का जन्म गांव कुरवा, मुज्जफरपुर, उत्तरप्रदेश में हुआ। शुक्रताल में आज भी आप जी की समाधि मौजूद है, जहां निरंतर विशाल मेले का आयोजन किया जाता है।

बाबा लालगीर जी–संत बाबा लालगीर जी ने 19 वीं शताब्दी के आरंभ में एक पंथ की स्थापना की, जिसे लालगीर पंथ या अलखगीर के नाम से जाना जाता है। उनका घर बीकानेर में था।

भगत चेता चमार – महाभारत काल के दौरान भगत चेता चमार की भक्ति का विशेष विवरण मिलता है। कई बार दोर्णाचार्य की शिकायत पर दुर्योधन ने भक्त चेता जी को अपने दरबार में बुलाया था। भक्त चेता चमार जी की ज्ञान भरी बातों और शिक्षायों को सुनकर दुर्याधन ने भगत चेता चमार को आदर सहित दरबार में सम्मान दिया।

महंत सम्मन दास – महात्मा सम्मन दास जी ने पांच वर्ष की छोटी आयु में ही योग धारण कर लिया था। आप मुज्जफरनगर के रहने वाले थे। आप जी ने अपनी शिक्षा में मांस का सेवन न करना, मदिरा पान न करना, शिक्षित होना, प्रभु भक्ति आदि पर बल दिया, जो आप जी की महानता को दर्शाता है। आप जी ने सतगुरू रविदास महाराज जी के मंदिरों व शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की।

दशनाथ – 1565.70 के बीच दशनाथ का मिलन राजा अकबर से हुआ। दशनाथ एक पाल्की उठाने वाले चमार के सपुत्र थे। वह चित्रकला में निपुण थे। उसने एक स्त्री के सती होने की घटना को दीवार पर चित्र के रूप में अंकित किया था। जब अकबर वहां से गुजरा तो वह उस चित्र से बहुत प्रभावित हुआ और दशनाथ को अपने साथ मथरू ले गया और उसने उसे अपने महल में रखा। इस प्रकार दशनाथ एक प्रसिद्ध चित्रकार बन गया।

बाबा संगत सिंह जी – बाबा संगत सिंह जी की विशेषता यह थी कि उनकी काया गुरू गोबिंद सिंह जी से काफी मिलती थी। आप जी के पिता जी का नाम रणीया और गोत्र अहीर था। वे गुरू गोबिंद सिंह जी को जंग में से सुरक्षित

भेज कर उनके स्थान पर उनकी कल्गी व लिबास पहन कर लडते रहे। गुरू गोबिंद सिंह जी सुरक्षित पटना पहुंच गए और बाबा संगत सिंह जी वहीं शहीद हो गए। धन्य है चमार जाति जिसमें ऐसे शूरवीरों ने जन्म लिया और दुश्मन को दांतों तले चने चबाए।

भाई धर्म दास जी – संवत 1756 में आनंदपुर साहिब की धरती पर जब गुरू गोंबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना के लिए पांच सिरों की मांग की थी, तो सबसे पहले शीश भाई धर्म दास जी ने भेंट किया था। यह निडर, दलेर, शूरवीर व स्वाभिमानी योद्धा चमार जाति में से था।

108 संत बाबा ब्रहम दास जी – माता जीयो जी की गोद व पिता रूलिया राम जी के गृह में गांव टिम्बा, लुधियाना में आप जी का जन्म हुआ। आप जी का विवाह गांव पहीड नजदीक मंडी गोबिंदगढ़, मलेरकोटला में माता घुणी जी के साथ हुआ। आप जी ने प्रभु प्रेम व समाज कल्याण के लिए कई कार्य किए। आप जी दलित भाईचारे की मुश्किलों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और शिक्षा के स्तर पर देखते थे। आप जी संगतों को झूठे भ्रम आदि से मुक्त होकर विचारशील व तर्कशील जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। आप जी कौम के उत्थान के लिए डा. अम्बेदकर जी को डेरे में लुधियाना लेकर आए जहां आप जी ने संगतों को प्रवचन किए, ''बाबा साहिब आप जी की कलम के समक्ष दलित समाज की तकदीर है और आप जी इनकी तकदीर बदल दें।'' इस प्रकार आप जी ने संगतों को धार्मिक, समाजिक, राजनीतिक चेतना प्रदान करते हुए समाज कल्याण हेतु अपना जीवन गुजारा। उन्हें समाज को दिये गए बहुमूल्य योगदान के लिए सदैव याद किया जाऐगा।

भाई महिताब सिंह जी – मस्सा रंगड़ जब दरबार साहिब में हुक्का पीता था, कंजरी नाच देखता था, दरबार साहिब की इस बेअदबी को महिताब सिंह मीर कोटिया सहन नहीं कर सका। वह भाई सुक्खा सिंह को साथ लेकर खच्चरों पर कंकरों से भरी बोरियां लादकर उन्हें उपर से चांदी के सिक्कों से ढक कर मस्सा रंगड को देने के बहाने दरबार साहिब के भीतर चला गया। 6 मई 1740 को भाई महिताब सिंह ने मस्सा रंगड़ का सिर कलम कर दिया और बीकानेर ले जाकर समाज के समक्ष पेश किया। अंत जब भाई महिताब सिंह पकडा गया तो उसे व उसके नन्हें पुत्र को चरखडी पर चडाकर शहीद कर दिया गया।

शहीद बाबा जय सिंह खलकाट – शहीद बाबा जय सिंह खलकट जी को तत्कालीन मुस्लिम शासक द्वारा उल्टी चमड़ी उतार कर शहीद कर दिया गया। बाबा जी को पीपल से उल्टा टांग कर पैर के अंगूठे से लेकर सिर के बालों तक चमडी उतार कर निर्दयता से शहीद कर दिया गया।

संत नंदा नार जी – संत नंदा नार जी का जन्म 425 ई में दक्षिण भारत के जिला थाना जामूर के गांव मैला नालौर में हुआ। आप जी के पिता चमडा व्यापारी थे। बाबा साहिब अम्बेदकर जी ने अपनी पुस्तक **'The Untouchable'** जिन तीन महापुरूषों को भेंट की है उनमें से नंदानार जी, गुरू रविदास जी, संत चोखामल जी मुख्य हैं। डा. ऐ.पदमानबन पूर्व मुख्य सैक्टरी तमिलनाडू ने संत नंदानार जी पर **'The Untouchable Journey'** कविता लिखी है। चौरजा के राजा मुख्यमंत्री व महान् विद्वान सेक्यिार विद्वान गोपाला कृष्णा भार्थीयर ने आप जी के विषय में बहुत कुछ लिखा है।

स्वामी अछूता नंद जी – आप जी का जन्म 1869 ई. में वैसाख पूर्णिमा के दिन उत्तरप्रदेश के फारूखाबाद जिला में हुआ। गरीब परिवार में पैदा होने के कारण आप शिक्षा से वंचित रह गए। संत महापुरूषों की संगति करते हुए आप जी को हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, बंगाली व गुरमुखी भाषा का ज्ञान हो गया। आप जी ने इन बातों पर बल दिया कि हमें आप की दया की आवश्यकता नहीं, हमें अपने अधिकार चाहिए। व्यवस्था इस प्रकार की हो कि पिछडे वर्ग के लोग अपना जीवन प्रतिष्ठा व स्वाभिमान से जी सकें। केन्द्र व राज्यों में उत्तरदायी सरकारों की स्थापना करनी चाहिए। जागीरदारी व्यवस्था समाप्त करने के लिए कानून बनाने चाहिए। ब्रिटिश सरकार को स्थानक राजाओं व नवाबों की गतिविधियों पर नियंत्रण रखना चाहिए। यह बातें 'साईमन कमीशन' के समक्ष भी रखीं गईं। आप जी 1920 ई. में डा. अम्बेदकर जी से भी मिले थे। 20 जुलाई 1933 को आप स्वर्ग सिधार गए।

शहीद उधम सिंह – शहीद उधम सिंह जी का जन्म 26 दिसंबर 1899 को गांव सुनाम जिला संगरूर, पंजाब में श्रीमति नारायणी देवी और पिता श्री चूहड़ राम चमार जी के गृह में हुआ। जलियांवाला बाग के खूनी कांड का उधम सिंह के मन पर बहुत प्रभाव पडा। उधम सिंह माइकल अडवायर को भूखे शेर की भांति ढूंढता रहा और अंत में सात समुद्र पार जाकर माइकल अडवायर के सीने पर गोली दाग कर उसे मार गिराया। शहीद उधम सिंह जी का भगत सिंह जी के साथ बहुत तालमेल था। भगत सिंह जी उधम सिंह जी को बहुत सम्मान देते थे और उन्हें 'गुरू जी' पुकारते थे। भारत की स्वंत्रता का यह परवाना देश की आजादी के लिए संघर्ष करता हुआ 31 जुलाई 1948 को फांसी का रस्सा चूमते हुए शहीद हो गया। आज उनकी बहादुरी के किस्से घर-घर में सुनाए जाते हैं।

शहीद बांके चमार– उत्तरप्रदेश के जैनपुर जिला की तहिसील मछली शहर के गांव कुंवरपुर में शहीद बांके का जन्म हुआ। आप जी का नाम अंग्रेजो की लाल सूची में प्रथम था। जिंदा या मुर्दा पकडने वाले को 50 हजार रूपये इनाम

रखा गया था क्योंकि देश की आजादी के लिए बांके चमार का 1857 की क्रांति में गुट था। अंत अंग्रेज सरकार ने बांके को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया।

उप्पईया चमार – 1857 अलीगढ की क्रांति के पचास साल पूर्व 1804 में अंग्रेजो के विरूद्ध बगावत शुरू हुई। इस वीर योद्धा ने कई अंग्रेजों को मार गिराया था। नवाब रनमस्त खान और रौशन खान ने 1804 में अंग्रेजो के विरूद्ध विद्रोह किया। उप्पईया चमार ने गनौरी के खाली किले में बारूद की सुरंग बिछा दी और सैंकडों अंग्रेज मारे गए। आज भी इस वीर योद्धा की गाथा देश में सुनाई जाती है।

सेनापति भज्जू सिंह चमार – भज्जू सिंह चमार राजस्थान के राजा गुग्गा जाहर वीर का सेनापति था। सेनापति की बहादुरी के किस्से चारों ओर प्रसिद्ध थे। उससे कुछ लोग ईर्ष्या भी करते थे क्योंकि वह चमार जाति से था। युद्ध के दौरान सेनापति भज्जू सिंह के साथ विश्वासघात करके उसके साथी ने उसकी गर्दन शरीर से अलग कर दी परन्तु उसने गंभीर घायल अवस्था में भी उसे मार गिराया और कुछ देर बाद शहीद हो गया। उसकी समाधि राजा जाहिर वीर की समाधि के पास बनाई गई।

हरिया मोची – अंग्रेजी सेना में जूतों की पालिश करता था। मेरठ में क्रांतिकारी मंगल पांडे का प्रेरक बना। मंगल पांडे को हथियार पर लगी गाय और सूअर की चर्बी के बारे में हरिया चमार ने ही सूचना दी थी। जिस के कारण मंगल पांडे ने विद्रोह कर दिया। पता चलने पर अंग्रेजों ने हरिया मोची को शहीद कर दिया।

शहीद चेता राम – अंग्रेजों के विरूद्ध 24 मई 1857 को बैरकपुर में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के वीर योद्धा चेताराम और बल्लू मेहतर को जिंदा पकड़ कर पेड़ से उल्टा लटका कर गोली मार दी गई। ये दोनों वीर योद्धा सैरो जिला की चमार जाति से संबधित थे।

मंगू राम मूगोवालिया– आदि धर्म की नींव रखने वाले मंगू राम मूगोवालिया जी का जन्म 14 फरवरी 1886 को पिता हर रामदास जी के गृह में हुआ। आप जी चमड़ा व्यापारी थे। आप जी गदरी बाबा सोहन लाल भक्णा और लाला हरदयाल जैसे देश भक्तों के साथ चलकर देश की स्वतंत्रता के लिए लडे। आप जी बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी की गतिविधियों में अहम् भूमिका निभाते थे। आप जी ने बाद में आदि-धर्म मंडल बनाया।

गुरदास राम आलम – गुरदास राम आलम जी का जन्म 1912 को गांव बुडाला, जिला जालंधर में माता जीऊणी और पिता उमरा राम जी के गृह में हुआ। गरीबी होने के कारण आलम जी पढ नहीं पाए। पढने-लिखने की लालसा ने आलम को महान कवि बना दिया। आलम आम लोगों का कवि था।

आप की 'जे मैं मर गया , अल्ले फट, उडदीयां धूडां, आपना घास और आलम काव्य' रचनाऐं विश्व प्रसिद्ध हैं। मानववादी रचना मंच की ओर से आज भी गुरदास राम आलम नामक अवार्ड प्रदान किया जाता है।

ज्ञानी दित्त सिंह – 21 अप्रैल 1850 को पटियाला रियासत के गांव नंदपुर कलौर में भाई दीवान सिंह के घर चमार जाति में हुआ। उन्होंने आर्य समाजी दयानंद से 1889 में विचारात्मक टक्कर ली। आप जी ने 52 साल की आयु में 53 पुस्तकों की रचना की। आप 6 दिसंबर 1901 को इस दुनिया को अलविदा कह गए परन्तु अपनी रचनाओं से लोगों के दिलों में सदैव जिंदा रहेंगे।

चरण दास निधडक – आप जी का जन्म जिला कपूरथला के गांव चैडा में हुआ। आप जी के नेतृत्व में 101 साईकिलों का जत्था दिल्ली गया और प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को मैमोरंडम दिया जिसमें दलितों को जमीनें, बैंको का राष्ट्रीयकरण करने, बाबा साहिब का धारणी, मेहटां में बुत लगवाने, गरीबों को रोजगार के लिए बैंकों से ऋण देने, आई.ए.एस. ट्रेनिंग सेंटर खोलने की मांगों को रखा गया था। आप जी ने कई जेल यात्राएं भी कीं और कई पुस्तकें भी लिखीं। आप जी की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'जे मैं रब्ब हुंदा तू चमार' आज भी लोगों के दिलों में बसती है।

चरण दास सफरी – चरण दास सफरी जी का जन्म गांव बोकला, गरना साहिब में 1919 को पिता श्री लाभ सिंह जी और माता श्रीमति ईदी जी के गृह में हुआ। बचपन से ही सफरी जी को लिखने का काफी शौक था। इसी शौक ने समाज को उनकी कई पुस्तकें दिलाईं। उनकी सेवाओं से प्रभावित होकर एम.के. चौधरी गर्वनर पंजाब, शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी अमृतसर, खालसा एसटोरियो दरबार कैनेडा, श्री गुरू रविदास सेवक सभा साउथहाल, बेअंत सिंह पूर्व मुख्यमंत्री, पंजाब, प्रो. मोहन सिंह यादगार कमेटी लुधियाना, पंजाबी साहित्य सभा जीरा, रजब अली अवार्ड, और डेरा संत सरवण दास सच्चखंड बल्लां द्वारा आप जी को सम्मानित किया गया। आज आप बेशक शारीरिक रूप से संसार में नहीं हैं, परन्तु अपनी साहित्यिक रचनाओं के रूप में आप सदैव जीवित रहेंगे।

लाल सिंह दिल – 11 अप्रैल 1943 को लाल सिंह दिल का जन्म अपने ननिहाल गांव घुंघराली में पिता रौणकी राम जी और माता चिंती जी के गृह में हुआ। आप जी ने मेहनत मजदूरी करते हुए बेशुमार साहित्य की रचना की। सतलुज की हवा, बहुत सारे सूरज पत्थर, नागलोक, आत्म कथा, दासतान आदि कई किताबों की रचना द्वारा अपनी शायरी का लोहा मनवाया। आप जी को कई मानसिक व शारीरिक सदमों ने बेमिसाल शायर बनाया।

कवि मंगू राम बाहडोवालिया – आप जी का जन्म 1872 ई. को गांव

बाहड़ोवाल, नवांशहर में हुआ। कवि मंगू राम जी ने बडे जोर शोर से गुरू रविदास महाराज जी का प्रचार किया। आप जी ने सतगुरू रविदास महाराज जी का जीवन किस्सा-काव्य में लिखा था और यह सिद्ध कर दिया कि वे अपने समय के महान् किस्साकार थे।

स्वर्गीय मोहन बंगड़ जी –

मैं हर वेले सदा ऐही मंगदा हां मेरी कौम ते सदा बहार रहे।
मेरे शेर जवानां दा सिर उच्चा विच संसार रहे।

गांव शाम चौरासी जिला होशियारपुर के गांव रायपुर के निवासी गायक मोहन बंगड मिश्नरी गीतों से इस क्षेत्र में आए। बुलंद आवाज में अपनी गायकी का लोहा मनवाया। मोहन बंगड जी गुरू रविदास महाराज जी और बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी का मिशन लेकर चले। उन्होंने साहिब श्री कांशी राम जी के दर्शाये हुए मार्ग पर चलकर इस मिशन का प्रचार किया। मोहन बंगड जी को डेरा संत सरवण दास सच्चखंड बल्लां की ओर से आर्शीवाद दिया गया और स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। एक दिन अचानक दिल का दौरा पडने से आप सांसारिक यात्रा पूर्ण करके गुरू चरणों में चले गए। शेरों जैसी गर्ज जिसने भी सुनी होगी उसका खून तो खौलता ही रहेगा और सतगुरू रविदास महाराज जी और बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी के मिश्न पर पहरा देता रहेगा।

बाबू जगजीवन राम – आन जी का जन्म 5 अप्रैल 1908 में हुआ। आप जी ने कोलकाता विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. की डिग्री ली। 1936 में बिहार विधान सभा के लिए चुने गये। आप उप प्रधानमंत्री, रेल मंत्री, कृषि मंत्री, रक्षा मंत्री माननीय पदों पर रहे। आप जी 6 जुलाई 1986 को संसार त्याग गए।

साहिब श्री कांशी राम जी – आप जी का जन्म रोपड जिला के गांव ख्वासपुरा में 15 मार्च 1934 को पिता हरी सिंह जी और माता बिशन कौर जर के गृह चमार जाति में हुआ। 1956 ई. में आप बी.एस.सी. करने के उपरांत 1957 में 'सर्वे आफ इंडिया' में नौकरी करने लगे। उन्होनें रक्षक विज्ञान व रिसर्च विकास संगठन की प्रतियोगिता भी पास की। बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी के जन्म दिन के अवकाश को लेकर आप जी ने नौकरी को त्याग दिया और बाबा साहिब के मिशन पर चल पडे। आप आर.पी.आई. में भी कार्यरत रहे। परन्तु आप अम्बेदकर मिश्न को गहराई से समझने के कारण अपने ढंग से चलाना चाहते थे। 6 दिसंबर 1973 को बामसेफ कर्मचारी संगठन बनाया। बामसेफ के माध्यम से 6 दिसंबर 1981 को डी.एस. फोर्स बनाकर देश भर में क्रांतिकारी जन चेतना मार्च निकाले। अंत आप ने

राजनीतिक गतिविधियां बेहद आवश्यक समझते हुए 'बहुजन समाज पार्टी' 14 अप्रैल 1984 को बनाई। 'चमार युगां' और 'बामसेफ' नामक दो किताबें भी लिखीं। आप जी के भाषणों की जिल्दें भी प्रकाशित हुईं। अंत आप अपना राजनीतिक वारिस बहन मायावती जी को बनाकर, घोर तपस्या करते हुए 9 अक्तूबर 2006 को शारीरिक रूप से संसार को अलविदा कह गए। आप जी के विचार सदैव हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

बहन कुमारी मायावती जी – 15 जनवरी 1956 को आप का जन्म चमार जाति में पिता प्रभु दयाल जी और माता श्रीमति विद्यावती के गृह में हुआ। बी.ए. पास करने के उपरांत कानून की डिग्री एल.एल.बी. 1980 में पास की। साहिब श्री कांशी राम जी के संपर्क में आने के बाद आप जी ने पूरा जीवन पारिवारिक रिश्तों से दूर रहकर, बहुजन समाज की सेवा करने की कसम खाई। आज आप जी बाबू कांशी राम जी के दर्शाये मार्ग पर चलते हुए बहुजन समाज पार्टी के विकास के लिए हर पल अग्रणीय भूमिका निभा रहीं हैं। स्मरण रहे कि बाबू कांशी राम जी ने आपको अपना राजनीतिक वारिस घोषित किया था। आज आप भारत के सबसे बडे प्रांत उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री के पद पर बिराजमान हैं और सार्वजनिक कल्याण हेतु नीतियां व सरकार चला रही हैं। आप जी की सरकार द्वारा दलित समुदाय के विकास, गरीबों के कल्याण हेतु, महापुरूषों के सम्मान हेतु समय-समय पर योजनाएं चलाई जा रहीं हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी, डा. अम्बेदकर जी, सतगुरू कबीर जी, साहिब कांशी राम जी, महात्मा ज्योति राव फूले, तथागत गौतम जी के यादगार स्मारकों का निर्माण करवाया। आज वह अपनी सरकार की नीतियों से अनेक समाज कल्याण के कार्य कर रही है। मायावती जी ने 'बहुजन समाज व उसकी राजनीति' और कई अन्य रचनाएं लिखी हैं, जिसमें उनकी दूर अंदेशी सोच झलक रही है। आप अपने दलित समाज को और भी उपर ले जाने के लिए सदैव तत्पर है।

पाल बलकार बालू – पी. बालू का जन्म 1875 ई. धडवाड, कर्नाटक में चमार जाति में हुआ। पी. बालू भारतीय क्रिकेट का होनहार खिलाडी था। उसका खेल चारों ओर प्रसिद्ध था। पहले पहल क्रिकेट टीम में आप जी को चमार होने के कारण उपेक्षित किया जाता था परन्तु पी. बालू एक बहुत बढिया गेंदबाज था। कई उच्च जाति के खिलाडी आप से अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। मेहनत व योग्यता के आधार पर आप जी का कप्तान बनना निश्चित था, परन्तु जाति आधारित सोच पर ब्राहमण डी.वी. दियोकर को टीम का कप्तान बनाया गया। रोष में आप स्वयं ही टीम से बाहर हो गए। फलस्वरूप खेल प्रेमियों ने कई विरोध प्रर्दशन किये और 1920 को आप जी को भारतीय

टीम का कप्तान चुना गया। 1923 ई. में बिटठल (जो पी. बालू का छोटा भाई था) उसे कप्तान चुन लिया गया। दोंनो भाईयों ने यूरोपीय टीम के साथ कई मैच खेले और विजय प्राप्त की। बंगलौर के एक समाज शास्त्री ने पी. बालू को डब्लयू.जी. ग्रेस के समान बताया है, जिसने भारतीय टीम का विकास किया और उसे भुलाना नामुमकिन है। 29 जनवरी 1932 को डा. अम्बेदकर जी और महात्मा गांधी में अलग चुनाव प्रणाली की जंग चल रही थी। उस समय पी. बालू ने बाबा साहिब अम्बेदकर जी का समर्थन किया था। पूना पैकट में डा अम्बेदकर साहिब के साथ पी. बालू ने भी हस्ताक्षर किये थे। 1956 ई. को पी. बालू का देहांत हो गया, परन्तु क्रिकेट जगत में उनके योगदान के लिए उन्हें सदैव याद किया जाऐगा।

चौरा चोरीकांड और शहीद रामपत – चौरा चोरी गांव गोरखपुर के चौरा चोरी कांड का नायक रामपत चमार था। यह कांड 2 फरवरी 1922 को पुलिस के अत्याचारों के विरूद्ध थाने में घटा था। पुलिस ने अहीर भगवान दास को गाली गलोच करके लाठियों से पीटा था। इसके विरूद्ध रामपत ने एक सप्ताह तक हडताल करके बाजार बंद करवाये थे। 5 फरवरी 1922 को रामपत के नेतृत्व में 5 हजार चमार समुदाय के लोग 'इन्कलाब जिंदाबाद' के नारे लगाते हुए चौरा चोरी थाने में गए। आंदोलनकारियों ने क्रोध में आकर थाने को आग लगा दी और 23 अंग्रेज पुलिस कर्मचारी आग में झुलस गए। महात्मा गांधी ने पहले तो आंदोलन का साथ दिया परन्तु जब पता चला कि इसका नेतृत्व एक चमार कर रहा है तो उसने अपना आंदोलन वापिस ले लिया और अंग्रजों का साथ दिया। इस कांड में 272 आंदोलनकारियों के चलान काटे गए। 19 को फांसी की सजा दी गई, 14 को आजीवन कारावास और अन्य को 8-8 5-5, 3-3 साल की सजा हुई। रामपत को 19 व्यक्तियों के साथ फांसी की सजा सुनाई गई। 1947 के बाद इस घटना के सबूत मिटाने की नापाक कोशिश की गई।

चौरा चोरी कांड के कुछ क्रांतिवीर – अमर शहीद संपत चमार फांसी, क्रांतिवीर अयोध्या चमार, (आठ साल कारावास), कुल्लू चमार, (पांच साल कारावास), क्रांतिवीर श्री गरीब चमार (5 साल), क्रांतिवीर नोहर चमार (6 साल कठिन कारावास), क्रांतिवीर फलई चमार (5 साल कडी सजा), क्रांतिवीर बिरजा चमार (5 साल), क्रांतिवीर मंडी चमार (5 साल कडी सजा), क्रांतिवीर मेडई चमार (5 साल), क्रांतिवीर मक्खू चमार (3 साल), क्रांतिवीर मिठाई चमार (3 साल), क्रांतिवीर दुर्जन चमार (7 साल), क्रांतिवीर राम प्रसाद (2 मास), क्रांतिवीर सूरज नारायण चमार (1 साल कैद 100 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर सीता राम चमार (9 मास की कैद 150 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर योद्धा सिंह चमार, (3 मास कैद), क्रांतिवीर रघुवीर चमार (4 मास कैद),

क्रांतिवीर राम दुलारे चमार (1 मास कैद, 20 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर पूरन मल्ल (6 मास कैद, 200 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर चिल्लू चमार, (3 मास कैद, 50 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर डब्बल रेदासी (1 साल कैद), क्रांतिवीर भभूत चमार (6 मास कैद, 50 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर अयोध्या चमार (9 मास कैद, 50 रूपये), क्रांतिवीर धूमल चमार (6 मास कैद 5 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर कमले चमार (8 मास सजा), क्रांतिवीर धनपत चमार (1 साल कैद), 50 रूपये जुर्माना, क्रांतिवीर बनवारी लाल (6 साल कैद,10 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर हरदयाल चमार, (1 साल कैद, 50 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर राम लाल चमार (6 मास कैद, 35 रूपये जुर्माना), क्रांतिवीर शिव रत्न चमार (6 मास कैद), क्रांतिवीर घासी चमार (6 मास कैद), क्रांतिवीर दर्शन चमार (6 मास कैद 10 रूपये जुर्माना)

●●●●●●●●●●

रविदासिया धर्म और हरि का निशान

इतिहास इस बात का गवाह है कि किसी कौम को जिंदा रखने के लिए उस कौम का, उस धर्म का इतिहास होना अनिवार्य है। इतिहास बनाने के लिए, इतिहास लिखने के लिए अपने पूर्वजों की विरासत के साथ जुडना आवश्यक है। अपने धर्म का निशान संसार में रखने और बताने के लिए धर्म के निशान साहिब को झूलाना पडता है। बिखरे हुए समाज को एक माला की भांति एक सूत्र में पिरोने के लिए एक निशान साहिब का होना अनिवार्य है। निशान साहिब अपनी एक कौमी पहचान व धार्मिक स्वाभिमान रखता है। निशान साहिब का अर्थ बिखरे हुए समाज को एकत्रित कर अपने गुरूदेव जी की विचारधारा से जोडकर सत्य मार्ग की ओर अग्रसर होना है, सो रविदासिया धर्म का निशान साहिब 'हरि' है। सतगुरू रविदास महाराज जी नामलेवा संगतों (रविदासिया कौम) की जोरदार मांग पर श्री गुरू रविदास साधू संप्रदाय द्वारा 'हरि' के निशान को एक प्रस्ताव पारित करके मान्यता दी गई है। 'हरि' के निशान साहिब को इंगलैंड निवासी संगतों द्वारा रजिस्टर कराया गया है, जो आज विश्व के कोने-कोने में श्री गुरू रविदास धार्मिक स्थलों पर झूल रहे हैं।

The Copyright Act 1957 के एक्ट के अनुसार तिथि 06.03.1987 को रजि. नं. **A48-807/87-Co** में रजिस्टर कराया गया है। सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा को समर्पित संगतें पूरे विश्व में फैली हुई है। 'रविदासिया धर्म' के पैरोकारों की संख्या करीब 20 करोड से अधिक है। हमारे समाज को इस निशान साहिब की आवश्यकता क्यों पडी? क्योंकि 20 करोड

की आबादी वाले समाज को एक सही प्लेटफार्म पर इक्टठा करने के लिए, दर-ब-दर की ठोकरें खा रहे समाज को एक निशान के नीचे एकत्रित करने के लिए, हजारों वर्षों से गुलामों जैसा जीवन बतीत कर रहे समाज को स्वाभिमान से जीने की दिशा दिखाते हुए गुरू रविदास महाराज जी के पावन चरणों से जोडने के लिए, विश्व में कौमी विचारधारायों के समक्ष अपने सतगुरू रहिबर की विचारधारा को रखने हेतु यह अति आवश्यक था, हमारी पहचान दर्शाता अपना निशान साहिब। निशान साहिब 'हरि' का ही क्यों कोई अन्य क्यों नहीं? सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी का संपूर्ण अध्ययन करने के बाद यह परिणाम निकलता है कि हरि समाज की संपूर्ण मुक्ति, एकता व प्रगति का प्रतीक है, हरि के तुल्य विश्व का कोई जीव नहीं। हरि पूर्ण-पारब्रह्म परमेश्वर का सत्य नाम है। सतगुरू रविदास महाराज जी अपनी पावन अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं, 'हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे'। सो सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी को ध्यान केंद्रित करके ऐसे सच्चे परमेश्वर को अपनी कौम का, अपने धर्म का निशान साहिब बनाना अति गर्व की बात है। 'हरि' का अर्थ केवल यह समझ लेना काफी है। हरि से अभिप्राय आजादी है। अपनी कौम व धर्म का निशान ऊँचा रखने हेतु आज डेरा सच्चखंड बल्लां के महापुरूषों व साधू समाज के परोपकारों से हमारे समाज को एक होने के लिए 'हरि' का निशान साहिब मिला है। संगतों के ध्यान हेतु डेरा सच्चखंड बल्लां के महापुरूषों द्वारा 2004 में एक सोविनार करवाया गया, जिसमें 'हरि' के निशान साहिब की रजिस्टर फोटो कापियां छापी गईं हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी हमें हर पल याद कराती है,'सतसंगति मिल रहिए माधो जैसे मधुप मखीरा।' सतगुरू रविदास जी पूरी कौम को एकता का पावन उपदेश दे रहे हैं क्योंकि जिस कौम में एकता होती है, उसका कभी नाश-विनाश नहीं होता। आज सतगुरू रविदास महाराज जी की अपार कृपा से कौम इस विचारधारा से जुड रही है। रविदासिया धर्म के नियमों को मान रही है, अपना रही है और अपने जीवन में प्रवाहित कर रही है। यही कौम की एकता है जो देश-विदेश में सतगुरू रविदास महाराज जी के गुरूधामों पर 'हरि' के कौमी निशान साहिब फहरा रहे हैं। यह एकता का ही प्रमाण है कि आज कौम, धर्म व देश का भविष्य कहे जाने वाले छोटे-छोटे बच्चे अपनी कौम के निशान साहिब 'हरि' के लॉकेट अपने गले में पहन कर सतगुरू जी से सच्ची प्रीति डाल रहे हैं। यह रविदासिया धर्म के पैरोकारों की एकता ही है।

'श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर वाराणसी, (यू.पी)' में आलीशान मंदिर जो आज स्वर्ण मडित किया जा रहा है, उस मंदिर पर आसमां को छू रहा मजीठी रंग मे 'हरि का निशान' संपूर्ण विश्व को यह बात याद दिलाता है -

बेगमपुरा सहर को नाऊ।। दूख अंदोह नहीं तिहि ठाऊ।।

ना तावीस खिराज न मालु।। खाउफ ना खता ना तरसु जवाल।।

यह हमारे समाज की खुशकिस्मती है कि समुद्र से गहरा, सबसे विशाल 'हरि', जो हमें हमारे संत समाज ने रजिस्टर करवा कर हमारे गुरूधामों पर सुशोभित किया है और भटके हुए समाज को मंजिल की ओर अग्रसर किया है। जिस हरि, पारब्रह्म परमेश्वर की कृपा से सम्पूर्ण विश्व के कार्य सम्पूर्ण होते हैं। ऐसे पारब्रह्म ईश्वर की छत्र-छाया में जिस कौम के लोग संगठित होकर जुड बैठेंगे, उस कौम का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

कई बार दुख इस बात का होता है कि कुछ शरारती व स्वार्थी स्वभाव के लोग अपने तुच्छ स्वार्थ हेतु पूरी कौम को बहुत क्षति पहुँचा जाते हैं। हमारा सभी से विनम्र निवेदन है कि सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा के साथ जुड जाएं। आपसी मतभेदों को त्याग कर आपसी प्रेम-प्यार से रविदासिया धर्म के पहरेदार बन जाएं। आने वाला समय इन पैरोकारों व पहरेदारों पर गर्व करेगा और गद्दारों को धिक्कारेगा।

सतगुरू रविदास महाराज जी के प्रकाश में चल रहे डेरा सच्चखंड बल्लां के कुशल नेतृत्व में चलोगे तो मंजिलों का मुँह देख सकोगे। हरि-हरि के जयकारों में हरि-हरि में संम्पूर्ण विश्व को रंग दो, हरि-हरि के निशान चारों ओर फहरा दो क्योंकि मुक्ति का एक ही मार्ग है, 'हरि', एकता का एक ही प्रतीक है 'हरि'। सदैव याद रखो भूल मत जाना। 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज की' हर पल यही समझा रही है -

हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे।। रहाउ।।

●●●●●●●●●●

"अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी"

रविदास जिह ग्रंथ है पढै सुनै मन लाये
सभी पदार्थ मिलेंगे इस से सब वर पाये।।

सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन 'अमृतवाणी' ग्रंथ जिसमें सतगुरू रविदास महाराज जी द्वारा उच्चारण की हुई अमृतवाणी दर्ज है। यह, सम्पूर्ण रविदासिया कौम का पावन धार्मिक ग्रंथ है। इस पावन ग्रंथ में सतगुरू रविदास महाराज जी के 140 शब्द, 40 पद, पैंतीस अक्षरी, वाणी हफतावार, पंद्राह तिथि, बारह मास उपदेश, सांद वाणी, अनमोल वचन, शादी उपदेश, सुहाग उस्तति, मंगलाचार, 231 श्लोक दर्ज हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन उपदेश कुल मानवता का कल्याण कर रहे हैं। इस पावन धार्मिक ग्रंथ की कि

विशेषता यह है कि सतगुरू रविदास जी की उच्चारण की हुई सम्पूर्ण वाणी, जिसमें उनकी विश्व कल्याणकारी विचारधारा झलकती है, वह सारी अमृतवाणी जो प्रमाणित है, इस पावन ग्रंथ में दर्ज है। आज विश्व घृणा, विषय-विकारों आदि में जल रहा है, अज्ञानता की अग्नि में जलकर तडप रहा है, यह अमृतवाणी ग्रंथ सतगुरू रविदास जी के सत्य उपदेशों द्वारा इस संसार में प्रेम-प्यार की शीतल वर्षा करके पूरे विश्व के लोगों को आपसी प्रेम व सद्भावना का कल्याणकारी मार्ग दिखा रहा है। आज सतगुरू रविदास जी का जन्म स्थान मंदिर सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी में स्थापित है, जो सारे विश्व को उज्जवल कर रहा है। सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी को एक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करने का ऐतिहासिक कार्य डेरा श्री 108 संत सरवण दास जी, सच्चखंड बल्लां के महान् महापुरूषों के कुशल नेतृत्व में किया गया। मौजूदा गददी नशीन श्री 108 संत निरंजन दास महाराज जी के पावन प्रतिनिधित्च में आदरणीय श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने भगवान वाल्मीकि तीर्थ स्थान, अमृतसर के गद्दी नशीन श्री 108 संत पूर्ण नाथ जी और अन्य संत समाज को साथ लेकर सतगुरू रविदास महाराज जी के 633वें प्रकाशपर्व पर 30 जनवरी 2010 को जगतगुरू रविदास जी के जन्म स्थान मंदिर सीर-गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू.पी.) में लाखों श्रद्धालुयों की उपस्थिति में 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' को संगतों के सम्मुख भेंट किया, जिसने हमें विश्व की सबसे अमीर विरासत और विश्व की सबसे महान् विचारधारा के साथ जोड दिया। इसके साथ ही 'रविदासिया धर्म' की पहचान और रविदासिया धर्म के 'हरि' के निशान में संगठित होने का भी समस्त संगतों को पावन संदेश दिया गया। सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन अमृतवाणी को संत समाज ने पूर्ण रूप से प्रमाणित कर सतगुरू रविदास जी के धर्म स्थलों में प्रकाशवान किया और संगतों को अमृतवाणी के उपदेशों पर चलने का उपदेश दिया। इस पावन अमृतवाणी को देख-सुनकर एकत्रित 10 लाख से अधिक श्रद्धालुयों के मन में असीम प्रसन्नता, अलग चाव और आनंद ही आनंद अनुभव हो रहा था। चारों ओर सतगुरू रविदास महाराज जी के जयकारों की ध्वनि आसमां में गूँज रही थी, जो संगतों के मन की खुशी को प्रकट कर रही थी। सभी संगतें 'रविदासिया धर्म' के ऐतिहासिक ऐलान से अति प्रसन्न दिखाई दे रहीं थी क्योंकि समूह संगतों को रविदासिया धर्म की गोद में बैठकर 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' पावन ग्रंथ का सुख प्राप्त करने का अधिकार मिल गया था। इस दिन पूरे विश्व में रविदासिया धर्म के पैरोकारों ने अपने अस्तित्व का ऐसा अहसास करा दिया कि सारी दुनिया हैरान रह गई

इतने कम समय में पूरे विश्व में सतगुरू रविदास महाराज जी की रूहानी अमृतवाणी 20-25 हजार से अधिक गुरूघरों में स्थापित हो गई। संगतें अपने ईष्ट को याद कर रहीं हैं। सतगुरू रविदास जी ने अपनी अमृतवाणी में महान् ग्रंथ का जिक्र करते हुए फरमाया है -

रविदास जिह ग्रंथ है पढै सुनै मन लाये
सभी पदार्थ मिलेंगे इससे सब वर पाये।।

सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं कि यह ग्रंथ जो भी जीव एकाग्र मन से ध्यान लगाकर पढेगा, एकाग्र मन से सुनेगा और इसकी शिक्षायों को निजी जीवन में धारण करेगा, उस जीव की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी और उसे सभी पदार्थ मिलेंगे। इसी से सभी प्रकार के वर उसे प्राप्त होंगे।

आज जगतगुरू रविदास महाराज जी पावन अमृतवाणी ग्रंथ रविदासिया धर्म के अनुयायियों का महान् पावन ग्रंथ है, जिसकी अमूल्य वाणी से जुड़कर, अमृतवाणी के सत्य उपदेशों पर चलते हुए सतगुरू रविदास जी की अपार बख्शिश द्वारा हरि के निशान साहिब के तले संगठित होकर विश्व सद्भावना हेतु, सर्व कल्याण हेतु, सत्य के मार्ग पर धर्म का प्रचार करते जाना है।

सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी है - जो तोही मोही का अंतर मिटाकर एक ही माटी से बने सभी बर्तनों का अहसास कराती है और सदा यही याद दिलाती है,'सरबे एक अनेके स्वामी सब घट भोगवे सोई' जीवन को एक हक हलाल की कमाई करने का 'जीहवा तू ओंकार जप, हाथ से कर कार' सत्य मार्ग पर चलने और बेगमपुरा के वासी बनने का अमर संदेश देती है।

अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी ग्रंथ आज सम्पूर्ण रविदासिया कौम का मार्ग दर्शन कर रही है। रविदासिया कौम जिसे संत सरवण दास महाराज जी ने पहचान दी है। उन्होंने गांव बल्लां में 26 फरवरी 1964 ई. में 'डेरा रविदासिया दा' लिखकर रविदासिया धर्म के आगामी संदेश दिए थे। आज हमारा अस्तित्व रविदासिया धर्म, हमारा मिशन 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' का प्रचार व प्रसार करना है क्योंकि इस पावन मिशन से बडा विश्व में अन्य कोई मिशन नहीं है। आज सतगुरू रविदास महाराज जी के मिशन पर अडिग रहना है। डगमगाती विचारधारा को त्याग कर अमृतवाणी के साथ जुडना है और रविदासिया धर्म के अनुयायी बनना है। अमृतवाणी जो कह रही है उसका निडरता से ऐलान करना है।

'कहि रविदास खलास चमारा जो हम सहरी सो मीत हमारा'

●●●●●●●●

'रविदासिया धर्म'

सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी सभी को प्रभु-प्रेम, भक्ति व सत्य का मार्ग दिखाती है। स्वाभिमान, सम्मान व साहसी जीवन जीने का सबक देती है। अमृतवाणी जगतगुरू रविदास जी की सम्मानपूर्वक जीवन जीने का मार्ग प्रदान करती है। सतगुरू रविदास महाराज जी ने अपनी अमृतवाणी में जिस पारब्रह्म परमात्मा, प्रभु हरि का सिमरन किया है, याद किया है, उस प्रभु प्रीतम के अजर-अमर गुणों को भी धारण करने का सत्य उपदेश दिया है। परमात्मा के गुणों का जीव द्वारा मूल्यांकन करना कठिन है। उस प्रभु का सबसे बडा महान् गुण हमें नजर आता है कि वह एक स्वतंत्र विभूति है और उसकी बनाई हुई प्रकृति भी स्वतंत्र है। हरि प्रभु आजादी का प्रतीक है। जो स्वयं किसी शक्ति का दास नहीं और वह अपने बनाये हुए जीवों को भी गुलामी का जीवन जीने से रोकता है। सम्मान, स्वाभिमान व साहस का जीवन जीने का सत्य उपदेश देता है। हमारा समाज शैतान लोगों द्वारा सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकडा हुआ था। सतगुरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में फरमाते हैं कि गुलामी भरा जीवन जीना पाप है -

"पराधीनता पाप है जान लेहु रे मीत
रविदास दास पराधीन सो कौन करै है प्रीत।।
पराधीन कौ दीन क्या पराधीन बेदीन।।
रविदास दास पराधीन कौ सबही समझे हीन"।।

पराधीनता वाला जीवन जीना पाप के समान है। इसलिए पराधीनता से मुक्त होकर जीव को सम्मानपूर्वक स्वाभिमान से अपना जीवन जीना चाहिए। पराये के अधीन रहकर जुल्म सहना पाप है। इस बात को अच्छी तरह समझ लो और जान लो कि गुलामी वाला जीवन जीना पाप है, क्योंकि गुलाम का सभी उत्पीडन करते हैं। उस से कोई प्रीति नहीं करता। जो पराये का दास है उसका अपना कोई धर्म नहीं है। जिसका कोई धर्म नहीं होता, उसे सभी नीच समझते हैं। सतगुरू रविदास जी सम्पूर्ण अमृतवाणी द्वारा समाज को दासता भरा जीवन त्याग कर सम्मानपूर्वक व स्वाभिमान से जीवन जीने का पावन उपदेश श्रवन कराते हैं। सतगुरू रविदास जी को मानने वाला दलित समाज जो सदियों से गुलामी भरा जीवन जी रहा है, सतगुरू रविदास जी महाराज, सतगुरू नामदेव जी, सतगुरू कबीर जी, सतगुरू त्रिलोचन जी, सतगुरू सधना जी, सतगुरू सैन जी और डेरा सच्चखंड बल्लां के महान् महापुरूषों ने उस समाज में जागृति पैदा की है। बाबा साहिब डा. अम्बेदकर जी, बाबू कांशी राम जी,

बाबू मंगू राम जी के मिश्न प्रचार के कारण दलित समाज में जागृति आई, जिससे यह समाज आज जी-जान से अपने मान-सम्मान के लिए हर कुर्बानी देने के लिए तैयार है। जो आज तक किसी दूसरे के धर्म में अपनी कुर्बानियों की कहानियां बनाता आ रहा है। आज यह समाज अमर शहीद संत रामानंद जी के बलिदान से प्रेरणा लेकर अपना अस्तित्व विश्व को दिखाने के लिए मैदान में उतरा है। 30 जनवरी 2010 को सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन जन्म भूमि बनारस से संत निरंजन दास जी और संत समाज के नेतृत्व में करोडों के जनसमूह संगतों की एकतत्रता में मान-सम्मान के मार्ग पर चलते हुए 'रविदासिया धर्म' का ऐलान कर दिया। जबर, जुल्म, क्रूरता और शैतानी शक्तियों के विरोध में सम्पूर्ण विश्व को अमन का पैगाम देने के लिए उतरी सोच का नाम है, 'रविदासिया धर्म'। सतगुरू रविदास महाराज जी के पूरे विश्व में फैले अनुयायियों ने सतगुरू रविदास जी की विचारधारा ''बेगमपुरा सहर को नाओ'' पूरे विश्व में फैलाने के लिए, जन-जागृति के लिए, सतगुरूों के मिशन को घर-घर पहुंचाने के लिए रविदासिया धर्म का झंडा फहराया है। पूरे विश्व में शांति का संदेश देता रविदासिया धर्म सारी मानवता को अमन-शांति का पाठ जगतगुरू रविदास महाराज जी की छत्र-छाया में रह कर पढा रहा है। सतगुरू रविदास जी ने जीवन भर संघर्ष भरी राहों से गुजरे समाज को मान-सम्मान, साहस, स्वाभिमान, मानवीय अधिकार और हर प्रकार की सुख-सुविधाऐं प्रदान कीं। जो समाज आज सुख-सुविधायों का आनंद ले रहा है, यह सब सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन आर्शीवाद की बदौलत है। आज यह शब्द समाज को दिमाग में बिठा लेना चाहिए कि यदि सतगुरू रविदास महाराज जी इस संसार में नहीं आते और अमृतवाणी का उच्चारण नहीं करते तो यह समाज ढूंढे से भी कहीं न मिलता। आज सम्पूर्ण विश्व में सतगुरू रविदास महाराज जी के अनुयायी सतगुरू रविदास जी के मिशन का प्रचार करके सेवायें निभा रहे हैं। आज सभी अनुयायियों का कर्त्तव्य बनता है कि अपने ईष्ट सतगुरू रविदास महाराज जी की मानववादी विचारधारा का प्रचार करने हेतु रविदासिया धर्म का अधिक से अधिक प्रचार किया जाये। गुरू रविदास जी की जन्म भूमि से ऐलान हुआ है, हमारा रहिबर-सतगुरू रविदास जी, हमारा कौमी निशान- हरि, हमारा संबोधन- जय गुरूदेव, हमारा तीर्थ स्थान- श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू.पी), हमारा उदेश्य- सतगुरू रविदास महाराज जी की मानववादी विचारधारा के साथ ही सतगुरू कबीर जी, महाऋर्षि वाल्मीकि जी, सतगुरू नामदेव जी, सतगुरू सधना जी, सतगुरू सैन जी की विचारधारा का प्रचार करना और सभी धर्मों

का सम्मान करना, मानवता से प्रेम करना, सदाचारी जीवन व्यतीत करना। सतगुरू रविदास जी की विचारधारा का प्रचार करते हुए डेरा सच्चखंड बल्लां के महान संत निरंजन दास जी और संत रामानंद जी वियाना (आस्ट्रिया) के गुरू रविदास मंदिर में गए, तो वहां उन पर आक्रमण किया गया, जिसमें संत रामानंद जी शहीद हो गए और संत निरंजन दास महाराज जी गंभीर रूप से घायल हो गए। सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा पर हमला हुआ। आदरणीय श्री 108 संत निरंजन दास महाराज जी के प्रतिनिधित्व में श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी ने हजारों की संख्या में संत समाज व लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में इस हमले का जवाब देने हेतु और संत रामानंद महाराज जी के बलिदान को नतमस्तक होते हुए 30 जनवरी 2010 को रविदासिया धर्म का ऐलान करके संगतों को अपना घर, अपनी विरासत दी। आज पूरी कौम का यह कर्त्तव्य बनता है कि अपने पिता की विरासत को संभाले। आज हम सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा को विश्व में महान् बेगमपुरा शहर की सोच देना चाहते हैं तो स्पष्ट सोच रविदासिया धर्म का ऐलान करना होगा। अपने गुरू रविदास जी की शिक्षा पर अमल करके अपने धर्म का 'हरि' का निशान साहिब झूलाना है। 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' धार्मिक पुस्तक का जाप स्वयं करना और समूह संगतों को कराना है।

जगतगुरू रविदास महाराज जी के समाज ने भारत के विभिन्न प्रांतों में आंदोलन चलाए जो अलग-अलग नामों से प्रसिद्ध हुए। उत्तर प्रदेश में जाटव आंदोलन, मध्यप्रदेश में अहिरवाल आंदोलन, छत्तीसगढ़ में सतनाम आंदोलन, आध्रांप्रदेश और कर्नाटक में मादीगा आंदोलन और पंजाब में आदि-धर्म आंदोलन चलाए गए। भारत के अन्य कई भागों में भी अलग-अलग नामों से आंदोलन चलाऐ गए। रविदासिया धर्म बनने से सभी आंदोलनों की मेहनत सफल हो गई।

जय गुरूदेव।

●●●●●●●●●

"हरि सो हीरा छाडि के"

विश्व का सृजक, पालक और विश्व के विनाशक (जो वस्तु बनी है या जीव पैदा हुआ है उसे अपनी सीमित आयु भोगकर समाप्त होना है) यही हरि का सिद्धांत है। वह पारब्रह्म ईश्वर स्वरूप हरि है, जिसकी बनाई सृष्टि नजर आ रही है। हरि की बनाई प्रकृति में वर्तमान काल में हम जी रहे हैं। हरि जो परमात्मा है, वह स्वयं ही है। इस संसार के अस्तित्व से पूर्व भी हरि था और आज भी हरि ही है और अंततः भी वही रहेगा। हरि एक असीम शक्ति का नाम है, जिसकी कृपा से प्रकृति का पसारा होता है और जिसकी कृपा सभी जीवों पर समान रूप से हो रही है। मालिक हरि जो संसार के कण-कण में विद्यमान् है, जिसके इशारे से साधारण मानव तो क्या कई उच्च व प्रसिद्ध हस्तियों को भी कूच करना पडा। हरि जिसके इशारे के बिना एक पत्ता भी हिल नहीं सकता। हरि एक अनंत-बेअंत शक्ति का नाम है जिसने अनेक बलशाली राजाओं-महाराजाओं को जन्म दिया और उनका अंत किया। हरि कण कण में व्यापक है। प्रत्येक मानव में हरि की ज्योति जगमगा रही है। हर दिल में हरि की ज्योति बस रही है। हर दिल में हरि जी समाए हुए हैं। हरि की असीम शक्ति से ही मानव पांच तत्वों से बनकर संसार में आता है। बचपन, जवानी और बुढापे की अवस्थायों से अंत में मृत्यु के द्वार से होते हुए पुनः उसी हरि की असीम शक्तियों, जिन से वह निर्मित हुआ था, उन्हीं में विलीन हो जाता है। संसार में अब तक अरबों-खरबों लोग आए और अपना पूरा जीवन माया के पीछे भागते हुए व्यर्थ गवां कर अंत में खाली हाथ इस संसार से चले गए। अरबों-खरबों को जन्म देने वाली और अंत करने वाली शक्ति का नाम है 'हरि' जो आदि से अंत तक रहेगी। इस बेअंत शक्ति का अंत पाना नामुमकिन है और सांसारिक जीव की सोच और पहुंच के बाहर है। हरि की महिमा को जानना तभी संभव है, यदि जीव महापुरूषों की संगति करे। हरि नाम का अमूल्य खजाना मिल जाता है, यदि जीव महापुरूषों की संगति कर अनमोल वचनों पर अमल करे। सतगुरू रविदास महाराज जी रविदासिया धर्म के रहिबर हैं, उन्होंने जो अमृतवाणी उच्चारण की है वह आज 'सतगुरू रविदास अमृतवाणी' धार्मिक पुस्तक के रूप में सतगुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी यू.पी. में प्रकाशवान् है, जो आज भूले-भटके समाज को सत्य स्वरूप के मार्ग दिखा रही है। अपनी अमृतवाणी में सतगुरू रविदास जी फरमाते है -

हरि सो हीरा छाडि के करिह आन की आस।।
ते नर दोजक जाहिगें सति भाखै रविदास।।

सतगुरू रविदास महाराज जी अपनी अमृतवाणी में फरमाते हैं, हे जीव! हे मानव! तुम परमात्मा के हरि रूप को छोडकर किसी अन्य की आशा लगाए बैठे हो। हरि प्रमात्मा से दूरी तुम्हें नर्क में धकेल देगी। सतगुरू रविदास जी जीव को सचेत करते हुए समझा रहे हैं - हे जीव! अभी भी समय है संभल जाओ, पहचान कर लो हरि परमात्मा की। सत्य मार्ग पर चलते हुए तुम्हें कम समय में हरि रूपी हीरे की पहचान करनी है। यह हरि के नाम का हीरा संभाल कर रखो, जो तुम्हें नर्क से बचा लेगा और अपने में बसा लेगा। हीरों के समान यह जन्म है जो तुम कौडियों के भाव गवां रहे हो। हरि को छोड कर यदि तुम किसी अन्य की आशा करोगे तो यह अटल सत्य है कि तुम नर्क के भागीदार बनोगे और जो जीव हरि का सिमरन करता है, वह बेगमपुरा का निवासी बनता है। हीरों की खान में से यह हीरा रूपी अमूल्य जन्म तुम्हें मिला है, इसकी संभाल करो। यह मानव जन्म बार-बार नहीं मिलता। इन श्वासों की माला में हरि रूपी मोती को पिरो लो। सतगुरू रविदास महाराज जी हमें बार-बार हरि के नाम से जुडने का मार्ग बता रहे हैं और अन्य से मोह त्याग कर हरि के नाम से जोड रहे हैं। सतगुरू जी अमृतवाणी में फरमा रहे हैं -

तुम्हारे नांव बिसास छाडि है आन की आस
संसार धर्म मेरे मन न धीजै।।

हरि के नाम के बिना सभी इच्छाएं छोड दीं हैं क्योंकि इस सत्य नाम के बिना संसार के झूठे धर्म-कर्म करने में मेरा मन नहीं लगता।

सतगुरू रविदास जी परमात्मा हरि की तुलना सृष्टि के किसी जीव से नहीं करते, न ही हरि रूपी हीरे के समान अन्य कोई खजाना है। हरि जी के साथ सच्ची प्रीति करने और दूसरों से (जो हरि के समान नहीं) दूर रहने का पावन उपदेश दे रहे हैं क्योंकि हरि के बिना अन्य की आशा रखना निष्फल है, जो अपने स्वामी को छोडकर दर-ब-दर घूमते हैं और अंत बाजी हार जाते हैं। केवल हरि के नाम से जुडने वाले ही इस संसार से पार हो पाते हैं। वे भवसागर को पार करेंगे। अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी की जीव को पल-पल समझा रही है -

तुम कहित हो जगत गुरू स्वामी।।
हम कहित कलियुग के गामी।।

इस सांसारिक जीव को सतगुरू रविदास महाराज जी फरमा रहे हैं और समझा रहे हैं कि प्रभु आप स्वयं सारे विश्व के स्वामी हो। आप जी भूले हुए जीवों काम में ग्रस्ति, मोह माया में फंसे जीवों, जिन्हें हरि रूपी हीरे

की पहचान नहीं और पांचों विकारों में फंसे हुए हैं को हरि रूपी हीरे की पहचान करके हरि से सच्ची प्रीति पाने के लिए कह रहे हैं। हरि रूपी हीरा को छोड कर अन्य पर निर्भर होना नर्क में धकेलेगा। हरि को विसार कर काल्पनिक देवी-देवतायों व अवतारों की पूजा करना भाव अन्य पर निर्भर होना नर्क का भागीदार बनाएगा। यह सत्य है कि हरि के समान विश्व में अन्य कोई भी नहीं है। काल्पनिक देवी-देवता, अवतारों की अराधना करना, कर्म-कांडों मे जीवन व्यर्थ करना मूर्खता है। यह सब पारब्रह्म परमात्मा की रचना के प्रतिकूल है और हरि व मानवता विरोधी प्रक्रिया है। जीव के पास अपनी मुक्ति का बस एकमात्र मार्ग है - हरि की बंदगी करना। हरि को त्याग कर जीव के पास केवल भटकना ही रह जाती है और यही भटकन उसे नर्क के द्वार तक ले जाती है। इसी ग्लानि के कारण जीव आत्मा प्रभु-प्रीतम का सामना नहीं कर पाती। जीव इसी पाप के कारण नर्क की अग्नि में जलता है, तडपता है, मुक्ति चाहता है। जो मुक्ति का मार्ग सतगुरू रविदास जी जीव को जीते-जी दिखा रहे हैं परन्तु जीव बुद्धि पर पर्दा पडा होने के कारण, बेसमझी के कारण सतगुरूों के बताये मार्ग पर पैर नहीं रखता।

हरि सो हीरा छाडि के करहि आन की आस।।
ते नर दोजक जाहिंगे सति भाखै रविदास।।

अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी पावन पवित्र ग्रंथ में इस तरह की महिमा समाई हुई है, जैसे समुद्र में नीर होता है। इसका एक-एक अक्षर हरि का सत्य उपदेश दे रहा है। हरि के नाम के बिना अन्य की आशा त्यागने का मार्ग दिखा रहा है -

गौतम नारि उमापति स्वामी
सीस धारणि सहज भग गामी।।

सतगुरू रविदास जी माया के पीछे नंगे पांव भाग रहे जीव को समझाते हुए फरमा रहे हैं, देखो कैसे माया के प्रभाव में गौतम ऋषि, उसकी पत्नी अहल्लिया, पार्वती के पति शिव जी, स्वामी ब्रह्मदेव सभी माया के प्रभाव में थे। इंद्रियों के वश में नाचते थे। यह माया के दूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विषय-विकारों में ग्रस्ति होने के कारण मुक्त नहीं हो पाए।

ब्रहमा खोजत जन्म गंवाया

ब्रह्मा जी ने भी प्रभु हरि को खोजा नहीं परन्तु अपना जन्म गंवाया, जिनके नाम की चर्चा चारों ओर फैल गई। वे भी प्रभु हरि की बंदगी के बिना किनारे नहीं लग पाए। वे भी अन्य की आशा में लगे रहे और भवसागर को पार न

कर पाए। हरि का प्रकाश, ज्योति का नूर ऐसा होता है, जिसकी एक किरन मात्र भी मन पर पडने से जीव प्रकाशवान हो जाता है। इसी सत्य ज्योति से साची प्रीति जोडनी चाहिए। हरि का सिमरन श्वास-श्वास करना चाहिए। हमारी मुक्ति केवल और केवल हरि के द्वार पर ही है। सतगुरू रविदास जी बार-बार याद दिला रहे हैं तुम्हारे पास समय बहुत कम है। इस श्वासों की कश्ती का क्या भरोसा कब मृत्यु के गहरे सागर में डूब जाये। इससे पहले समय को संभाल लो और श्वासों की कश्ती को हरि नाम का चप्पू लगा कर हरि के नाम की महिमा को समझो और भवसागर से पार हो जाओ और मुक्ति प्राप्त करो। हरि और अन्य के बीच का अंतर जान लो। उसे याद करो जो सदैव तुम्हारे अंग संग है। बेकार की पूजा-आराधना में समय व्यर्थ मत करो और माया का मोह त्याग दो। झूठी माया की खातिर तुम हीरों जैसा अमूल्य जन्म गंवा रहे हो। हीरे जैसा जन्म हीरा जैसे हरि के पावन चरणों में समर्पित कर दो तो यह जीवन सफल हो जाए क्योंकि समय बीता जा रहा है। सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में फरमा रहे हैं -

जो दिन आवै सो दिन जाही
करना कूच रहिन थिर नाही।।
संग चलत है हम भी चलना
दूर गवन सिर उपरि मरना।।
क्या तू सोया जागि इयाना
तै जीवन जगि सचि करि जाना।।

सतगुरू रविदास जी जीव को जो प्रभु से कोसों मील की दूरी बनाए बैठा है, अपनी अमृतवाणी द्वारा अमर संदेश दे रहे हैं, समझा रहे हैं कि जो दिन चढता है, वही दिन डूबता जा रहा है। तुम्हारे श्वासों की पूँजी दिन-प्रतिदिन समाप्त होती जा रही है। यह हीरों जैसा जन्म, यह दुर्लभ जन्म कौडियों के भावभाव मत गंवाओ। अज्ञानता की निद्रा में सोकर जीवन व्यर्थ न करो, जाग जाओ, तुम्हारे संगी-साथी जा रहे हैं। तुम भी यहां चिर स्थाई नहीं हो, एक दिन तुम्हें चले जाना है, तुम्हें भी हंसती-खेलती दुनिया को छोडकर जाना पडेगा। तुम्हारे सभी भ्रम पल में दूर हो जायेंगे। हरि-हरि के नाम का जाप कर लो, अन्य की आशा त्याग दो। ये जो थोड़ी सी श्वासों की पूंजी है, इसे किसी लेखे में लगा दो।

"सु कुछ विचारियो ताबे मेरो मन थिरु है रहियो।
हरि रंग लागो ताबै मेरो बरन पलयि भायो"।।

जब हरि के सत्य नाम की विचार करें, जब हरि जी का ध्यान करें तो मन की अस्थिरता समाप्त हो जाती है, भटकना समाप्त हो जाती है। मन स्थिर हो जाता है और स्थिरता आ जाती है। इधर-उधर की भटकन छोडकर मन शांत स्वभाव में हो जाता है। जब हरि का मजीठी रंग मन पर चढता है तो फिर अन्य सब फीके रंग भाव अन्य की आशा समाप्त हो जाती है। जब हरि की ज्योति जगमगाती है तो सभी झूठे दिखावे, अंध विश्वास, मन का अंधेरा समाप्त हो जाते हैं। हरि का जाप ही ऐसा सत्य है जो सब कुछ निखार व नितार देता है -

अबरन बरन कथै जिन कोई
घट घट बियासियो रहियो हरि सोई।।

संसारी जीव अबरन-बरन, ऊंच-नीच, आदि-बेकार की मान्यतायों में जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। कण-कण में बसे हरि को याद नहीं कर रहे। जब हरि रूपी परमात्मा ने प्रकृति की रचना में कोई भेदभाव नहीं किया, तो ये जीव किस प्रकार के भेदभाव में फंसे हुए हैं।

मैं आपनो मनि हरि सो जोरियो
हरि सो जोरि सभन से तोरियो।।

जीव को सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में समझा रहे हैं कि अपना मन हरि से जोड लो, अन्य सभी विषय-विकारों से मुँह मोड लो। प्रभु हरि के नाम के बिना संसार के सभी पासारे काल्पनिक हैं, झूठे हैं। यदि मुक्ति चाहिए तो मन को हरि की महिमा में डुबो कर उसका गुणगान करो। हरि को समझ कर हरि को अमल में लाओ और जीवन सफल करो।

कहि रविदास विचार के राखो हरि से प्रीति।।

●●●●●●●●●

"एक बेनती हरि सियो"

'सरब कर्म को त्याग कर, हरि गुर जप दिन रैण
बांझ नीर जिम मीन को, आवत नाही चैन।।

' अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' पावन ग्रंथ में सतगुरू रविदास जी उपदेश देते हैं कि हे जीव! तुम संसार के झूठे कर्म-कांड व आडम्बरों को त्याग दो और आठों पहर प्रभु को याद करो, उठते-बेठते प्रभु का सिमरन करो। तुम हरि की शरण में जाकर हरि से ऐसी प्रीति जोडो जैसी प्रीति मछली की जल के संग होती है। जैसे मछली जल के बिना नहीं रह पाती, तुम भी प्रभु संग ऐसी प्रीति बना लो कि तेरा जीवन प्रभु के बिना एक पल भी असंभव है। हरि का सिमरन भवसागर से पार करता है।

'हरि का सिमरन कीजै, कहि रविदास अमी रस पीजै।।'

हरि का सिमरन करने से ब्रहम रस पिया जा सकता है। हरि की बंदगी करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है। हरि की कृपा से ही जीव को ब्रहम ज्ञान प्राप्त होता है। जो जीव हरि का सिमरन करता है, हरि की जो बंदगी करता है, वह जीव जीते-जी मुक्ति को प्राप्त करता है। यह सतगुरू रविदास महाराज जी की वाणी कहती है

"जीवित मुकंदे मरत मुकंदे
ता कै सेवक कू सदा आनंदे"।। रहाउ।।

जो जीव अपने अंतिम श्वासों तक हरि का सिमरन करता है, हरि को याद करता है, हरि की बंदगी करता है, हर पल उसका विचार करता है और पल भर भी उसे हृदय से विसारता नहीं है, उस जीव पर हरि की अपार बख्शिश हो जाती है, जीव को सदैव आनंद की प्राप्ति हो जाती है। वह जीव अपने जीवन काल में ही मुक्ति को प्राप्त कर लेता है और घोर आनंद की अवस्था में पहुंच जाता है। जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में उपदेश देते हैं -

"हरि हरि तुल ना प्राणिया कहि रविदास बिचार"

हे अंधकार में खोये हुए जीव! हरि के तुल्य संसार की कोई वस्तु नहीं है। कोई शक्ति उस प्रभु के समान नहीं है। यही एक अटल महान सत्य है जिसे सतगुरू रविदास जी खोजकर समाज को उपदेश द्वारा समझा रहे हैं-

"कहे रविदास भज हरि नाम
प्रभु सो ध्यान सफल सब काम"।।

सृष्टि के स्वामी प्रभु हरि का नाम दुख-चिंताओं को नष्ट कर देता है, सुखमय अमृत की वर्षा करता है। हरि प्रभु का नाम जपने वालों के सभी कार्य सफल हो जाते हैं। जो सारे संसार के जीवों के कार्य सफल करता है, वह केवल

हरि है और उसका ध्यान एकाग्र मन से करना चाहिए।
सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में फरमाते हैं कि-

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलासपति
तास सम तुलि नही आन कोऊ।।
एक ही एक अनेक हाई विसथरियो
आन रे आन भरपूर सोऊ।। रहाउ।।

सतगुरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में फरमाते हैं कि प्रभु परमात्मा हरि का नाम जपो। उसका नाम जपो जिसके समान संसार का कोई अन्य जीव नहीं। हरि का नाम जपो जिसकी समानता विष्णु, ब्रह्म, शिव जी आदि भी नहीं कर पाये। एक हरि ही है जो इस संसार के कण-कण में विद्यमान है, बसा हुआ है, उस हरि का ध्यान करो। तुम अन्य की झूठी आशा त्याग कर परमात्मा के प्रकाश में आ जाओ, जो सभी जीवों में समान रूप से जगमगा रही है। जीवन में मुक्ति का एकमात्र मार्ग है हरि की बंदगी और तुम झूठे कर्म-कांडों को त्याग कर उसका सिमरन करो।

"आपन बापै नाहि किसी को
भवन को हरि राजा।।"

वह हरि रूपी प्रमात्मा किसी भी इंसान से अलग नहीं है। सब में समान रूप में बसा हुआ है। हर प्राणी प्रेम भक्ति से प्रीति करके हरि को पा सकता है। हरि किसी की निजी संपति नहीं है। वह तो सारी सृष्टि का सच्चा स्वामी है, सारी दुनिया का पालनहार है, पिता है। 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' आज सभी का मार्गदर्शन कर रही है। सतगुरू रविदास जी अपनी वाणी में बार-बार यही हरि की महिमा कर रहे हैं, जिसके साथ हमें गहरी प्रीति जोडने की प्रेरणा दे रहे हैं। वह हरि भाव पूर्ण परमात्मा ही है, जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है, जो हमारे रोम-रोम में बसा हुआ है। हमें विशेष रूप से याद रखना चाहिए कि हरि का सिमरन करना है। सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी पर अमल करते हुए सतगुरू जी के पावन उपदेशों को अपने जीवन में अपनाना है। उन्हें अपने हृदय में बसा कर अपनी सोच को हरि के साथ जोडकर अटल सच्चाई को सत्य मान कर चलना होगा कि सतगुरू जी की अमृतवाणी में हरि का अर्थ पारब्रह्म परमेश्वर है ना कि कोई अन्य शक्ति। सतगुरू रविदास जी जैसे पूर्ण ब्रहमज्ञानी, महात्मा, पूर्ण पारब्रह्म परमेश्वर हरि की आराधना कर सकते हो अन्य किसी और की नहीं क्योंकि हरि को विसार कर संसार में अन्य कोई मुक्ति का किनारा नहीं है। सतगुरू रविदास महाराज जी अपनी अमृतवाणी में राम की पूजा करते हैं और साथ ही अमृतवाणी में स्पष्ट भी करते हैं कि मैं जिस राम की पूजा कर रहा हूँ, *जहं*

जिसकी उपासना कर रह हूं, जिसके चरणों से जुडा हुआ हूँ वह मेरे रोम-रोम में बसा हुआ राम है न कि राजा दशरथ का पुत्र 'रामचंद्र'। मेरे राम और राजा राम में बहुत अंतर है। मेरे राम ने जिस सृष्टि की रचना की है, उस सृन्टि का हिस्सा हैं राजा रामचंद्र। मेरा राम तो सर्व-व्यापक है जो आदि से अंत तक रहेगा। (हम आज तक पढते आ रहे हैं कि सिंधू घाटी की सभ्यता भारतीय मूल निवासियों की सभ्यता थी जिसका विस्तार पूरे विश्व को मात दे रहा था। जिसकी प्रगति देखकर बडी-बडी सभ्यताऐं दांतो तले उंगलियां चबा रही थी। इस महान् मूल निवासी सभ्यता को विदेशी आर्य लोगों ने छल-कपट की नीतियों द्वारा समाप्त कर दिया, तबाह कर दिया और अनेक जातियों में बांट दिया।) सतगुरू रविदास जी की वाणी हमें हरि के संग जोडती है। हरि से भाव सत्य से है। सत्य को विसारना स्वयं को धोखा देना है। चंवर पुराण में स्पष्ट शब्दों में लिखा मिलता है, चमार जाति का शासन हजारों वर्ष पृथ्वी पर रहा। जिस जाति का जिक्र सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में कर रहे हैं-

मेरी जाति कुट बांडला ढोर ढवंता
नितहि बनारसी आस पासा।।
अब बिप्र प्रधान तिहि करहि डंडवत
तेरे नाम सरणाय रविदास दासा।।

सतगुरू रविदास महाराज जी फरमा रहे है कि मेरी जाति कुट बांडला नीच समाज की जाति है। वर्ण व्यवस्था के अनुसार नीच समझी जाने वाली जाति है। मेरी जाति के लोग मरे हुए पशु उठाते हैं परन्तु हे प्रभु तुम्हारे सत्य नाम की महिमा है, जो आज बिप्र लोग भी मुझे डंडवत प्रणाम करते हैं, मेरे ज्ञान के समक्ष झुकते हैं। यह सब सतनाम की कृपा है। सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में बार-बार कहते हैं कि हरि का सिमरन ही मुक्ति का मार्ग है। हरि की समझ आनंद की प्राप्ति है। आनंद शक्ति का अहसास है। हरि का सिमरन जीव के मन की गैर मानवीय विचारधारा, ऊँच-नीच के भेदभाव आदि कई प्रकार की भटकन को समाप्त कर देता है और हरि का सिमरन करने से जीव हरि का ही स्वरूप हो जाता है क्योंकि हरि प्रतीक है स्वतंत्रता का। जब जीव हरि और अन्य के बीच का अंतर जान लेता है तो अन्य के ठहरने का कोई स्थान नहीं रहता। बाबा साहिब डा. भीम राव अम्बेदकर जी इन शब्दों को अपने अर्थ में कह रहे हैं 'धर्म और गुलामी एक साथ नहीं चलते'। धर्म को समझने के लिए हरि से जुडना होगा और गुलामी समाप्त करने के लिए अन्य की आशा का त्याग करना होगा। धर्म के अर्थ को समझकर सारे समाज के हित को आगे लाना होगा। हरि संग सच्ची प्रीति पाकर अपने गुरूओं की विचारधारा से जुड़कर दूसरों को विसार कर रविदासिया धर्म का झंडा बुलंद करना होगा। अमृतवाणी में सतगुरू रविदास जी कहते हैं -

जहं जाउ वहां तेरी पूजा
तुम सा देव अवर नहि दूजा।।
मैं अपनो मन हरि सो जोरियो
हरि सो जोरि सबन से तोरियो।।

सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में फरमा रहे हैं कि मैं राम की बंदगी करता हूँ। वह राम दशरथ पुत्र राजा रामचंद्र नहीं है। मेरे राम तो प्रकृति के कण-कण में बसे हुए हैं, सर्वव्यापक हैं और सदैव मेरे अंग-संग हैं। मेरे राम मेरे रोम-रोम में बसे हुए हैं।

नाहि अकास नाहि धरणी, पवनपुर घट चंदा
नाहि अब राम कृष्ण गुण भाई, बोलत है मुछंदा।।
नाहि अब बेद कतेब पुरननि, संनि सहिज रे भाई
नाहि अब मैं तै, तै मै नहीं का सिउ कहो बताई।।

हरि प्रभु पारब्रह्म परमात्मा केवल आकाश नही, न केवल पृथ्वी है, न केवल वायु है, न केवल चंद्रमा है, वह तो सर्वव्यापक है। अब न मैं राम-कृष्ण का गुणगान करता हूँ, न ही मुझे बेद-कतेब पढने की आवश्यकता है। 'कहि रविदास हरि सर्वव्यापक' घट-घट में बसे हरि को सिमर कर सत्य की प्राप्ति होती है। झूठ से मुक्ति मिलती है। हरि को समझने के बाद कोई अन्य मान्य नहीं रहता। मेरा-तेरा, तेरा-मेरा का भेद समाप्त हो जाता है। सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी द्वारा समझा रहे हैं कि उसका सिमरन करो जो सहायक होना है, भाव सभी अंतर मिटा कर याद रखो -

'तोहि मोहि अंतर कैसा'
'नाहि अब मैं तै तै मै नाहि'।
कर्म अकर्म बिचारिए संका सुनि बेद पुराण
संसा सद हृदय बसै कउन हिरै अभिमान।।

वेदों-पुराणों को पढ़कर मन में शंका उत्पन्न होती है कि कौन सा कर्म किया जाये और कौन सा नहीं। यह कर्म-कुकर्म, जाति-पाति पर आधारित है। वेदों-शास्त्रों को पढने से मन में कई प्रकार की शंका पैदा होती है। इसलिए सतगुरू रविदास जी कहते हैं -

'नाहि अब बेद कतेब पुराननि, सुन सहिज भाई।।
हरि बिन कोई पतित पावन आसिह ध्यावै रे
हम आपूज्य पूज्य भये हरि ते नाम अनुपम गावै रे।।

हरि के बिना कोई भी जीव पवित्र नहीं है। हरि के बिना किसी अन्य वस्तु की पूजा नहीं की जा सकती। यदि इस संसार में कोई पूजा योग्य है तो वह केवल हरि ही है, हरि के बिना अन्य कोई नहीं।

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे
हरि सिमरत जन गए निसतर तरे।।

अमृतवाणी में सतगुरू रविदास जी याद दिला रहे हैं कि हर पल हरि का सिमरन करने से जीव मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। हरि का सिमरन करने से कई जीव इस संसार रूपी भवसागर से पार हुए तथा सदैव पार होते रहेंगे। हरि को याद करके हरि से प्रीति करनी चाहिए। विषय-विकारों, झूठे आडम्बरों, कर्म-कांडों का त्याग करना चाहिए। प्रभु के समक्ष मुक्ति के लिए प्रार्थना करनी है। अपने गुरू का झंडा उठाकर चलना है।

कहै रविदास इक बेनती हरि सिउ
पैज राखो राजा राम मेरी।।

आज हमारे समाज को यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि मुक्ति का केवल एकमात्र मार्ग 'हरि' है। इसलिए हरि के अर्थ को समझ कर हरि को याद रखना चाहिए। विचार कर चलना चाहिए न कि किसी अज्ञानता के वश में आकर हरि विरोधी विचारों को प्रोत्साहित करना है। यह मानव जन्म दुर्लभ है और इसी जन्म में सत्य को जान कर झूठ का विनाश करना है। यह जन्म बार-बार नहीं मिलेगा यदि इस जन्म में कपट व झूठ के पीछे लगे रहे तो कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकेंगे। हम पीछे पढ चुके हैं कि यह जन्म हीरों की भांति अमूल्य है और यह हीरों जैसा जन्म हीरे जैसे प्रभु प्रीतम के पावन चरणों में अर्पित करें। आईए सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी से जुडकर अपने गुरू की विचारधारा को विश्व की सबसे महान व विशाल विचारधारा साबित करें। याद रखें जब हम हरि संग जुडेंगे तो सत्य के साथ जुडेंगे। जो कौमें सत्य के साथ जुड जाती हैं वे कौमें अपने पूर्वजों का सपना साकार कर देती हैं और शीघ्र ही अपने पूर्वजों की विरासत से जुडकर अपना स्वराज्य कायम कर लेती हैं। बस आवश्यकता है संगठित होकर सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी पढने और उस पर अमल करने की। आज आवश्यकता है एक आवाज होकर गूंजने की, हाथ में हरि के निशान साहिब लेकर चलने और मन में बेगमपुरा का सपना साकार करने की चाहत लेकर चलने की।

●●●●●●●●●●

"चल मन हरि चटसाल पढ़ाऊं"

सतगुरू रविदास महाराज जी का आगमन भारतीय मूल निवासी समाज, गौरवशाली विरासत वाली, स्वाभिमानी चमार जाति में हुआ। जिस समाज में आप जी का आगमन हुआ, उस समाज को मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया था। इंसान या समाज के विकास में विद्या का बहुत महत्व रहा है। मूल अधिकारों में विद्या प्राप्ति का अधिकार होता है, जो हमारे समाज के लोगों से समकालीन शासक शक्तियों ने छीन लिया था। सतगुरू रविदास महाराज जी ने 'अमृतवाणी' जो कि सतगुरू रविदास जी के वचनों का पावन ग्रंथ है और सम्पूर्ण विश्व का मार्ग दर्शन कर रहा है, में सतगुरू रविदास महाराज जी ने फरमाया है -

माधव अविद्या हित कीन।।
विवेक दीप मलीन।। रहाउ।।

हजारों वर्ष विद्या से वंचित रहा यह समाज अज्ञानता को ही अपना आभूषण समझ बैठा रहा। अज्ञानता के इस अंधकार को अपना हित समझ रहा है। इसी अज्ञानता के कारण सोच-विचार की शक्ति, सत्य को जानने की इच्छा शक्ति नष्ट हो गई है। विद्या के बिना यह समाज हजारों वर्ष गुलामी की जंजीरों में जकडा रहा। इस समाज की दुर्दशा दूसरों के लिए हास्यप्रद थी।

दारिद देख सब को हंसै ऐसी दसा हमारी।।
असट सदा सिधि कर तलै सब कृपा तुम्हारी।।

यह समाज जिसमें मैं पैदा हुआ हूँ, उसे मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है। मानवीय अधिकारों से वंचित भाव दास बनाकर रखा गया है। हमारी ऐसी गरीबी की दर्दनाक दशा पर हर कोई हंसता है परन्तु मेरे परमात्मा! तेरी पूजा करने से अब मैं अठारह सिद्धियों का स्वामी बन गया हूँ, यह सब तृम्हारी कृपा से ही है। सतगुरू रविदास जी ने यह वाणी उस समय उच्चारण की जिस समय बिप्र प्रधान सोच ने हमारे समाज से विद्या और भक्ति के अधिकार छीन लिए थे। सतगुरू रविदास जी ने समाज को जगाया और समझाया -

पराधीनता पाप है जान लेहु रे मीत
रविदास दास पराधीन से कौन करै है प्रीत।।
पराधीन का दीन क्या पराधीन बेदीन
रविदास दास पराधीन को सब ही समझे हीन।।

जिस समाज की गुलामी को तोडना होता है, सब से पहले उसे गुलामी का अहसास कराना आवश्यक होता है। गुलामी को समाप्त करने के लिए सबसे

पहले शस्त्र विद्या अनिवार्य है। विद्या का अधिकार अछूत समाज से छीना हुआ था। अछूत समाज को संस्कृत भाषा पढने की सख्त मनाही थी। पुस्तक 'गुरूमुखी अक्षर भगत (गुरू) रविदास जी ने बनाए' के लेखक गुरचरण सिंह वैद लिखते हैं

1. गुरूबानी द्वारा 'भगत (गुरू) रविदास जी ने गुरूमुखी अक्षर बनाए' सिद्ध होना उनकी वाणी से पूर्ण रूप से जाना जा सकता है। आप जी लिखते हैं,"नाना ख्यान पुराण बेद बिध चौंतीस अक्खर माही"। इस का भावार्थ है कि वास्तव में अक्षर चौंतीस ही हैं। पंडित ने ज्ञान को कठिन करने के लिए देवनागरी के अक्षर कच्ची छाछ की भांति बढाकर 52 कर दिए हैं। इससे सिद्ध हो गया है कि पहले चौंतीस अक्षर गुरूमुखी के आवश्यकता के अनुसार जो बताए गए हैं और संकेत दिए गए हैं, वे भगत (गुरू) रविदास जी की ही देन हैं। श्री गुरू नानक देव जी ने और श्री गुरू अंगद देव जी ने नहीं बनाए हैं।

2. अछूत वर्ग के लिए संस्कृति भाषा पढ़ने और पढ़ाने का पूर्ण रूप से प्रतिबंध था। अछूत समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए गुरू रविदास जी ने गुरूमुखी अक्षर बनाए ताकि मानवीय अधिकारों से वंचित समाज विद्या प्राप्त करके गुलामी की जंजीरे तोडकर स्वाभिमान से जीवन जी सके और विकसित हो सके। इसी संदर्भ में सतगुरू रविदास जी ने समाज को विद्यावान बनाने के लिए गुरूमुखी की रचना की और मानवीय अधिकारों से वंचित समाज को डंके की चोट पर खोया हुआ अधिकार व सम्मान दिलाया। सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी में दर्ज है आप जी के द्वारा उच्चारण की हुई 'पैंतीस अक्षरी'। सतगुरू रविदास जी द्वारा रचित पैंतीस अक्षरी निम्नलिखित है -

ੳ, ਅ, ੲ, ਸ, ਹ, ਕ, ਖ, ਗ, ਘ, ਙ, ਚ, ਛ, ਜ, ਝ, ਞ, ਟ, ਠ, ਡ, ਢ, ਣ, ਤ, ਥ, ਦ, ਧ, ਨ, ਪ, ਫ, ਬ, ਭ, ਮ, ਯ, ਰ, ਲ, ਵ, ੜ,

सतगुरू रविदास महाराज जी ने समाज को ज्ञानवान बनाने के लिए पैंतीस अक्षरों की रचना की जो हमारे पास मौजूद है। संगतों के ज्ञान हेतु भारत और पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व लाहौर की अदालत ने यह फैसला लिया था कि गुरूमुखी की रचना सतगुरू रविदास महाराज जी ने की है।

"नाना ख्यान पुरान बेद बिधि चउतीस अक्खर माही"

सतगुरू रविदास महाराज जी ने पैंतीस अक्षरों की रचना करने के उपरांत अज्ञानी समाज को ज्ञान देने हेतु पाठशालाएं खोलीं, जिन में उस समय के गुरू जी के सेवक, अन्य सभी श्रद्धालुजन गुरू जी से अति प्रभावित साधू संत महापुरूष पाठशाला द्वारा ज्ञान वितरित करने का कार्य करने लगे। स्मरण रहे

कि सतगुरू रविदास जी के 52 राजा-रानियां सेवक रहे और उन्होंने विद्या के पसार हेतु कितना कार्य किया होगा। सतगुरू रविदास जी की प्रेरणा से ही ये पाठशालाऐं खोली गईं जिनके द्वारा विद्या रूपी प्रसाद संगतों में वितरित किया गया। सभी जीवों को आपस में मिल-जुल कर रहने का पावन उपदेश दिया गया।

सति संगति मिल रहियै माधो
जैसे मधुप मखीरा।।

सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी समाज को विद्या प्राप्त कर ज्ञानवान होकर मिल-जुल कर रहने का पावन उपदेश देती है। जैसे शहद की मधुमक्खियां एक छत्ते के संग मिल-जुल कर रहतीं हैं उसी प्रकार समाज को संगठित होकर अपने अधिकारों की रक्षा करने की प्रेरणा और विद्या प्राप्ति के लिए सजग होने का मार्ग दिखा रहे हैं क्योंकि विद्या के बिना हमारी दुर्दशा बनी रहेगी।

सति विद्या के पढे प्राप्त करे सदा ज्ञान
रविदास कहै बिन विद्या नरके जान अजान।।

ज्ञान के बिना मानव नर्क भोग रहा है। विद्या प्राप्त करके अपने दुखी जीवन को सुखी कर सकता है। सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी द्वारा जीव को और पूरे विश्व को समझा रहे हैं।

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ।। टेक।।
गुरू की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै।
तो सहज समाधि लगाउ। 1।
प्रेम पाई सुरति लेखनि करिहो।
ररा ममा लिखि आके दिखउ। 2।
यह बिधि मुकति भयो सनदायिक।
रिदै बिदारि प्रकाश दिखाउ। 3।
कागद कंवल मति मसि करि निरमल।
बिन रसना निध दिन गुण गाउ। 4।
कहै रविदास राम जपि भाई।
संत साखि के बहुरि ना आउ। 5।

चलो मन तुम्हें हरि का नाम जपाने वाली पाठशाला में पढाऊँ। जिस पाठशाला में श्रेष्ठ मार्ग से भटकने वालों के लिए गुरू के उपदेश रूपी छडी है। प्रभु को मिलाने वाले ज्ञान का अक्षर पढाया जाता है। यदि जीव ज्ञान का अक्षर

भूल भी जाता है तो गुरू जी की कृपा से जीव की सहज समाधि लग जाती है। इस पाठशाला में पढने के लिए प्रेम की छडी और ध्यान की कलम द्वारा सर्व-व्यापक राम लिखा जाता है। इस पाठशाला में पढने वालों के हृदय में प्रकाश हो जाता है। हृदय को कलम और बुद्धि को स्याही बनाकर जिहवा के बिना ही दिन-रात प्रभु का गुणगान किया जाता है। संत इसका प्रमाण हैं। प्रभु का सिमरन करके जीव मुक्त हो जाता है। सतगुरू रविदास जी ने सबसे पहले हमें विद्या प्राप्ति का अधिकार दिलाकर पैंतीस अक्षरी वर्णमाला की रचना करके समाज में अधिक से अधिक ज्ञानवान होने का मार्ग दर्शन किया। विद्या प्राप्ति करके समाज को मधुमक्खियों की भांति संगठित होने का पावन उपदेश देते हैं क्योंकि ऐकता के बिना कोई भी अधिकार सजीव नहीं रहता। सतगुरू रविदास जी सति-संगति में मिल-जुल कर रहने का पावन उपदेश देते हैं और संत महापुरूषों के पावन चरण-कमलों से जुडने का पावन उपदेश देते हैं।

'हरि सिमरै सोई संत बिचारो'

सतगुरू रविदास महाराज जी के मिश्न को जन-जन तक पहुँचाने हेतु डेरा सच्चखंड बल्लां के कार्य से पूरा संसार भली-भांति अवगत है। वियाना शहर में प्रचार करते हुए शहादत का जाम पीने वाले अमर शहीद संत रामानंद जी डेरा सच्चखंड बल्लां से ही थे। इस डेरे से ही गुरू रविदास जी की पावन संगतों को जुड बैठने का महान् उपदेश मिलता है। ऐसे महान संत महापुरूषों की संगति करने की प्रेरणा, जिन की पाठशाला में सत्य रूपी ज्ञान की प्राप्ति होती है। अज्ञान समाज ज्ञानवान हो रहा है। हरि की पाठशाला में सतगुरू जी पढने का उपदेश दे रहे हैं। हरि का अर्थ है समानता व स्वतंत्रता। हरि मुक्ति का मार्ग है।

●●●●●●●●●●●

सतगुरू रविदास जी की 'अमृतवाणी' में हरि की महिमा

सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में सतगुरू अज्ञानता के अंधकार में डूबे समाज को हरि का सिमरन करने का बार-बार उपदेश दे रहे हैं। जहां हरि से जुडने का मार्ग दर्शन कर रहे हैं वहीं कर्म-कांडों, गैर मानवीय शक्तियों से दूर रहने का उपदेश दे रहे हैं। आईए 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी की' में हरि का भावार्थ समझने का प्रयास करें। अर्थ को समझकर अपने हरि से सच्ची प्रीति जोडें -

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे।।
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे।। रहाउ।।

परमात्मा का हरि हरि नाम जपने से सांसारिक जीव मुक्त हुए हैं। वे हरि का नाम जप कर अब भी मुक्त हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। परमात्मा का हरि नाम जीव के हृदय को उज्जवल करने वाला है। परमात्मा का श्वास-श्वास हरि नाम जपने से जीव संसार के न पार होने वाले भवसागर को पार कर सकते हैं।

आपन बापै नाहि किसी को भावन को हरि राजा।।
मोह पटल सब जगत बियापियो भगत नहीं संतापा।।

वह हरि परमात्मा जी स्वयं किसी के बाप की सम्पत्ति नहीं हैं। आप जी तो हरि प्रकाश रूपी राजा जी केवल प्रेम-भक्ति करने वालों के हैं। मोह रूपी पर्दा सारे संसार में फैला हुआ है परन्तु मोह रूपी पर्दा परमात्मा के नाम जपने वाले भक्तों को दुख नहीं देता।

हरि हरि हरि ना जपहि रसना।।
अवर सब त्यागि बचन रसना।। रहाउ।।

हे जीव! ऐसे सुखों के समुद्र परमात्मा का हरि हरि नाम रसना से क्यों नहीं जपते? तुम संसार की झूठी रचना और वचनों को रसना से त्याग कर सिमरन करो, तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा।

कहि रविदास इक बेनती हरि सिउ
पैज राखो राजा राम मेरी।।

हरि रूपी परमात्मा के समक्ष निवेदन है कि हे! सच्चे पातशाह आप मेरी लाज बचाना जी।

नाम तेरो आरती मजुन मुरारे।।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे।। रहाउ।।

सतगुरू रविदास जी परमात्मा की आरती करते हुए कहते हैं तुम्हारा नाम

जपना ही तुम्हारी सच्ची आरती है। आप जी का नाम जपना ही आपको स्नान कराना है। हरि जी आप जी के नाम के बिना संसार के सभी पासारे काल्पनिक हैं।

कहै रविदास नाम तेरो आरती
सति नाम है हरि भोग तुहारे।।

सतगुरू रविदास जी फरमाते हैं कि हे! परमात्मा आप जी का नाम जपना ही मेरे लिए आप जी की सच्ची आरती है और सतनाम का ही आप जी को भोग लगाता हूं।

नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै।।
कहि रविदास सुनहो रे संतहो हरि जीओ ते सभै सरै।।

सतगुरू नामदेव जी, सतगुरू कबीर जी, सतगुरू त्रिलोचन जी, सतगुरू सधना जी, सतगुरू सैन जी परमात्मा का पवित्र नाम जप कर इस भवसागर से पार हुए हैं और जिन्होंने संसार में एकता, सदभावना स्थापित करने के लिए एक लहर चलाई, जिनके सामाजिक, क्रांतिकारी व परमार्थी विचारों के समक्ष राजा-महाराजाओं व कटटर पंथियों को भी झुकना पडा, उन महान् महापुरूषों से शिक्षा लेकर हरि का मार्ग अपना कर कई जीव सांसारिक भवसागर पार कर गए।

हरि जपत तेउ जना पदम कवला सपति
तास सम तुलि नहीं आन कोउ।।
एक ही एक अनेक होई बिसथारियो
आन रे आन भरपूरि सोउ।। रहाउ।।

जो जीव परमात्मा के नाम को जपते हैं, उनकी समानता विष्णु, शिव और अन्य कोई भी नहीं कर सकता। वह हरि एक है। एक से अनेक रूप धारण करके संसार के कण-कण में बसता है। जीव को सर्व-व्यापक प्रभु का सिमरन करना चाहिए और मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

हरि सो हीरा छाडि के करहि आन की आस।।
ते नर दोजख जाहिंगे सत भाखै रीवदास।।

हरि के हीरा रूपी नाम को छोडकर जो जीव मुक्ति के लिए कोई अन्य आशा रखता है, गुरू रविदास जी फरमाते हैं कि यह अटल सच्चाई है कि वह जीव नर्क में जाएगा।

सब में हरि है हरि में सब है हरि अपनो जिनि जाना।।
साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना।।

सभी जीवों में हरि परमात्मा बसता है। उसकी सभी ओर ज्योति जगमगा रही है। हरि सभी में विद्यमान है। इस भेद को केवल उसी ने जाना है जिसने परमात्मा को जान लिया है। उस हरि के समान अन्य कोई दूसरा गवाह या हस्ती नहीं है। हरि को जानने वाला संसार में उच्च है।

अब कछ मरम बिचारां हो हरि।

आदि अंत ओसान राम बिन कोई न करै निसतारा हो हरि ।। टेक।।

हरि जी का पावन सिमरन करके मैं अब वास्तविक रहस्य भाव ज्ञान के भेद को विचार पाया हूं। सृष्टि के आदि से अंत तक केवल आप जी नाम के बिना कोई मुक्ति नहीं दे सकता।

कहि रविदास उदास ताहि तैं कहा उपाय अब कीजै।।

भै बूडत भयभीत भक्ति जन करहि अभलंबन दीजै हो हरि।।

सतगुरू रविदास जी वाणी में फरमा रहे हैं कि कलयुग के प्रकोप से बचने के लिए अब जीव क्या उपाय करे? हे हरि जी प्रभु! संसार के भवसागर में डूब रहे भयभीत जीवों को आप कृपा करके सहारा देकर पार करें।

कहि रविदास छूटि सब आस तब हरि ताहि के पास।।

आत्मा थिर भई तबाही निधि पाई।।

जब जीव की सभी कामनाऐं समाप्त हो जाती हैं, तब जीव हरि में लीन होकर स्थिर हो जाता है। उस समय सर्वोच्च निधि की प्राप्ति हो जाती है।

थावर

सु कुछ बिचारियो ताथे मेरो मन थिर है रहियो।

हरि रंग लागो ताथै मेरो बरन पटिल भयो।। टेक।।

हरि के नाम का कुछ विचार किया तो उस समय मेरा मन स्थिर हो गया। जब मुझे हरि के नाम का मजीठी रंग लग गया तो मेरे मन का झूठा रंग बदल गया।

मैं अपनो मन हरि सो जोरियो।

हरि सो जोरि सबन से तोरियो।

सब पर हरि तुम्हारी आसा।

मन क्रम बचन कहै रविदासा।

हे प्रभु जी मैंनें अपना मन आप जी से जोड लिया है। आप जी से जोडकर सबसे तोड लिया है। हर समय मेरे मन में आप जी के दर्शनों की अभिलाषा रहती है। यह मैं मन, वचन और कर्म करके ही कहता हूँ।

मैं हृदय हरि बैठियो हरि सो पै सरयो ना ऐको काज।

भव भगति रविदास दे प्रतिपाल करो माहि आज।

आप जी के नाम के बिना मैं संसार की बाजी हार चुका हूँ। मेरा एक भी कार्य पूर्ण नहीं हुआ। अपनी प्रेम-भक्ति बख्शिश करके आज ही मेरा कल्याण करें।

कहि रविदास प्रकाश परम पद क जप तप ब्रत पूजा।

एक अनेक एक हरि कहे कौन बिधि दूजा।

सतगुरू रविदास जी उच्चारण करते हैं कि जिस समय जीव के हृदय में हरि का प्रकाश हो जाता है तो उस समय जीव परम पद को प्राप्त कर लेता है।

हरि का सिमरन करने से जीव को जप-तप और पूजा-पाठ की अन्य विधियां करने की आवश्यकता नहीं रहती। प्रभु एक से अनेक रूप धारण कर संसार में बसता है।

''थोथी काया थोथी माया।

थोथा हरि बिन जन्म गंवाया।

थोथा पंडित थोथी वाणी।

थोथी हरि बिन सभै कहानी।''

हरि के सत्य नाम के बिना यह शरीर झूठा है, यह माया भी झूठी है। जीव प्रभु के नाम के बिना बेकार में जन्म गंवा रहा है। सच्चे नाम के बिना पंडित भी झूठा है और पंडित की वाणी भी झूठी है। हरि बिना सभी कहानियां झूठी हैं। जहां हरि रूपी सत्य है वही वास्तव में सत्य है।

तीर्थ बरत करिह बहु तेरे, कथा बसत बहु सानै।

कहि रविदास मिलियो गुरू पूरे जिहि अंतर हरि मिलानै।

जीव बहुत से तीर्थों पर स्नान करते हैं और कथाओं की व्याख्या करते हैं। जब जीव को पूर्ण गुरू मिल जाता है तो गुरू भीतर से ही जीव को प्रभु से मिला देता है।

'तां थै पतित नहीं को पावन हरि तज आन न ध्याया रे।

हम अपूजि पूजि भये हरि थै नाम अनुपम गाया रे। टेक।

उस प्रभु से बडा पतित पावन भाव पापियों का कल्याण करने वाला अन्य कोई नहीं है। इस लिए प्रभु के बिना किसी अन्य की उपासना क्यों करे? हे भाई! हम सांसारिक जीव भी पूजा योग्य नहीं थे परन्तु पूजनीय हो गए। इस लिए जीव तुम प्रभु के पवित्र नाम का गुणगान करो।

'जब लग अंग पंक नहिं परसै तो जल कहा पखालै।

मन मलीन विषिया रस लंपट तों हरि नाम संभालै'।

जब तक अंगो को पाप रूपी कीचड नहीं छूता तब तक प्रभु के नाम रूपी जल में उसे धोने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार जब जीव का मन विषय-विकारों से ग्रस्त होकर मलीन होता है तभी मन को प्रभु के नाम सिमरन द्वारा शुद्ध किया जा सकता है।

चलि मन हरि चटसाल पढाऊ

गुरू की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै

तो सहज समाधि लगाऊं।।

अपने मन को हरि का नाम जपने वाली पाठशाला में पढाने का उपदेश दे रहे हैं, जिस पाठशाला में श्रेष्ठ मार्ग से भटकने से रोकने वाली गुरू के उपदेश रूपी छडी है। हरि को मिलाने वाले ज्ञान का अक्षर भी पढाया जाता है। यदि जीव ज्ञान अक्षर भूल भी जाता है तो गुरू की कृपा से सहज समाधि लग जाती है।

हरि सिमरै सोई संत बिचारो,

अवर जन्म बेकाम राम बिन

कोटि जन्म सो उपरि बारौ।। टेक।।

जो संत हरि का सिमरन करते हैं, वे पूर्ण संत हैं, श्रेष्ठ हैं। प्रभु जी के पवित्र नाम के बिना जीव का जन्म निष्फल है। इसलिए करोडों जन्म संत महापुरूषों से वार देने चाहिए।

हो बनजारो राम को हरि जु को टाडों लादिया जायि रे।

राम नाम धन पायो ता ते सहज करूं व्योपार रे।। टेक।।

यदि राम नाम का व्यापार करने वाला व्यापारी है तो मेरे पास आये, मेरे साथ प्रभु के राम नाम का व्यापार कर ले। मेरा टांडा हरि के नाम से लदा हुआ है। मैं संसार में चल अवस्था में व्यापार करता हूँ जो कि संसार में भेदभाव से परे नवम् द्वार से ऊपर उठकर दशम द्वार पहुँच कर प्राप्त होती है।

हरि अर्पण करि भोज ना कीनो, कथा कीरत नही जानी

राम भगति बिन मुक्ति ना पावै, अमर जीव गराबै प्राणी।।

जिस जीव ने हरि को अपना जीवन अर्पण नहीं किया और प्रभु की महिमा नहीं जानी, उसे प्रभु की प्रेम भक्ति के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती। इसलिए अमर जीव प्रभु के नाम के बिना योनि-चक्र में भटकता रहता है।

हृदय सुमिरन करूं नैन अवलोकनो

स्वर्णा हरि कथा पूरि राखूं।।

मैं हृदय में आप जी का सिमरन करता हूँ, आंखों से आप जी के पावन दर्शन करता हूँ, कानों द्वारा पवित्र वाणी श्रवण करके आनंद भरपूर रहता हूँ।

माला नाम सबै जग डहको झूठो भेक बनंहि।

झूठे ते साचि तब होंयहो हरि की सरण जब ऐहौ।

अज्ञानता के अंधकार के कारण जीव झूठे भ्रमों में भटक रहा है और गले में माला डालकर हरि की प्राप्ति के लिए तरह-तरह के कपटी भेस बनाए हुए है। जब जीव प्रभु की शरण लेता है, उस समय झूठ को त्याग देता है और सत्य के साथ जुड जाता है।

शिव सनकादिक पार ना पावै मैं बपुरे की कोण गिनी है।

जा की प्रीत निरंतर हरि सो कहि रविदास ताकी सदा बनी है।

शिवजी, सनकादिक चारों भाई उस हरि की महिमा नहीं जान सकते। प्रभु के गुणों को प्रभु की कृपा से ही जाना जा सकता है। जिस जीव की निरंतर प्रीति उस प्रभु प्रीतम हरि के साथ रहती है, उस जीव की सदैव प्रभु संग लगन लगी रहती है।

जन रविदास त्यागी जग आसा

लहो ओट हरि चरणन की।

सतगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि हे जीव ! तू संसार की झूठी आशा को त्याग कर प्रभु चरणों-कंवलों का आश्रय लेकर अपना जीवन सफल कर लो।

भरि भरि देवै शरति कलाली,

दरिय दरिया पीना रे,

पीवत पीवत आपा जग भूला,

हरि रस माहि बरौना रे।

गुरू रूपी साकी दशम द्वार में ध्यान लगाकर भर-भर कर प्रभु के नाम के प्याले पिला रहा है, दरिया के समान अमृत के प्याले जीव पी रहा है। ऐसा अमृत पीने से जीव संसार को भूल जाता है। प्रभु के नाम में लीन हो जाता है।

सेत भयो तन थर थर कंपहि

हरि सिमरन नही कीना।

जीव को सतगरू जी कहते हैं कि प्रभु का सिमरन करो। जीव अपनी जवानी अहंकार में गंवा देता है और अंत बुढापे में शरीर कांपता है, मन एकाग्र नहीं हो पाता। बजुर्ग अवस्था में प्रभु का सिमरन नहीं होता।

बिन विसवास बांझ सति जायसै

हरि कारनि कियो रासी।

जैसे बांझ स्त्री को संतान पैदा होने का विश्वास नहीं हो सकता। इसी प्रकार हरि के नाम का सिमरन जपने के बिना जीव संसार के भवसागर से पार होने का विश्वास नहीं हो सकता।

पांडे! हरि विच अंतर डाढा

हे कर्म-कांडों में फंसे पंडित! तुम्हारे कर्म-कांडी भक्ति और हरि की वास्तविक भक्ति में बहुत अंतर है। जीव प्रभु प्रेम के बिना सिर मुंडवा कर, सेवा पूजा करने आदि के भ्रम बंधनों में बंध जाता है।

कहि रविदास हरि सर्व व्यापक

सर्व चिंतामणि सर्व प्रतिपालक।

हरि सर्व व्यापक है और मन इच्छित फल देने वाला हे। वही सब जीवों का पालन करता है और सभी जीवों का रक्षक वही है।

तन मन आत्म बारि सदा हरि गाईए।

भक्त जन रविदास तुम सरना आईए।

सतगुरू रविदास जी फरमाते हैं कि जीवों को अपना तन मन हरि के समक्ष कुर्बान करके सदैव हरि के गुणगान करना चाहिए। सतगुरू रविदास जी फरमाते हैं हे जीव! तुम प्रभु की शरण में रहो।

कथना कथै ना हरि मिलै पावै खोजन नूर

कहै रविदास विचार कै रहो भगवान हजूर।

नाम निशान प्राप्ते जो गावते रहिके गीत।
रविदास कहै सत्संग में अवय पद सतगुरू दीत।
नाम ध्याये देव मुनि करता पुरूष आगंम।
सीस दान कर हरि मिलै तू ना जान सहंम।
साहिब दीन दयाल सदा साई मनो पुकार।
कहै रविदास प्रीति भरि मन मे राख विचार।

सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में हरि से साची प्रीत करने का जीव को सत्य उपदेश दे रहे हैं। हरि नाम रूपी ऐसा अमृत रस पीने को कह रहे हैं, जिसे पीने के बाद कुछ भी पीना शेष नहीं रहता। जैसे पैंतीस अक्षरी में उच्चारण करते हैं -

हरि का सिमरन कीजै।
कहि रविदास अमी रस पीजै।
हरि से प्रीत करो मन मेरे जैसे चंद चकोरा।
बालक प्रीति खीर से बादल घटा से मोरा।

'अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी की' में हमने सतगुरू रविदास महाराज जी के पावन सत्य उपदेश देखे हैं, पढे हैं और श्रवण किये हैं। हरि से ऐसी प्रीति लगा लो जैसी चंद्रमा की चकोर के साथ होती है। सतगुरू रविदास महाराज जी समाज को हरि से जुडने की प्रेरणा दे रहे हैं। विश्व की यह सच्चाई है। इस विश्व के एक ही स्वामी भाव हरि की बदौलत सभी जीव जीवित है। यह हरि घट घट में विद्यमान् है। गुरू जी कह रहे है कि हरि की भक्ति करने वालों के समान यह देवी-देवता नहीं हैं। हमें हरि के पवित्र नाम से जुड जाना चाहिए। यह हरि नाम ही है जिसको सतगुरू रविदास जी बार-बार कह रहे हैं हरि को समझ कर, जान कर, विचार कर, अपने मन में उतार कर ही मुक्ति मिल जाऐगी। हरि से जुड जाना ही 'एक' से जुडना है। जब तक हम 'एक' से नहीं जुडेंगे, हमारी असीम शक्ति एक नहीं हो सकती। जब तक हम एक नहीं होंगे, तब तक न तो सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक आधार बन पाएगा, न ही हम अपना कुछ संवार पाएंगे। आज हमारे 'रविदासिया धर्म' का ऐलान हो चुका है। रविदासिया धर्म का निशान साहिब भी 'हरि' है। हमारा धार्मिक ग्रंथ 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' है। हमने 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' में हरि की महिमा जानी है। आओ समाज के कल्याण हेतु, विश्व की भलाई के लिए अपने गुरूओं के मिश्न के साथ जुडें ताकि विश्व के लोग सतगुरू रविदास महाराज जी के अनुयायियों को जान सकें और मानववादी 'रविदासिया धर्म' को अपना कर अपना जीवन सफल कर सकें। ●●●●●●●●●●

"शादी उपदेश"

साहिब सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन रसना से उच्चारण की गई लावां की विधि यह 'शादी उपदेश' शीर्षक के अंतर्गत जीव रूपी स्त्री का प्रभु प्रीतम के साथ, परमेश्वर पति से मिलन के विषय में ज्ञान देती है। जीव रूपी आत्मा का जब प्रभु प्रीतम से मिलन हो जाता है तो रूहानी आनंद की प्राप्ति होती है। आनंदमय 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' ग्रंथ में दर्ज 'शादी उपदेश' पढकर समझने का प्रयास करें।

पहिलडी लांव हरि दर्शन गुरां दा जावे दूर बुलाई।।
दीया मेल हरि दया पार के गुज्जी रमझ चलाई।।

पहली लांव में सतगुरू जी कहते हैं कि हरि स्वरूप गुरू के दर्शन करने से दुख दूर हो जाते हैं। जब प्रभु दया करके मिलाप करा देते हैं तो उस समय गहरी रमझ भी समझ में आ जाती है भाव ज्ञान हो जाता है। आगे सतगुरू जी कहते हैं कि प्रभु के नाम से मन स्थिर हो जाता है।

अनहद शब्द सुनै मन थिर, कर मिट गए सरब अंधेसे।
कृपा सिंध गुरू मिलिया पूरा, लिव लागी हरि भेसे।

हरि के नाम में मन स्थिर हो जाता है, अनहद शब्द सुनाई देते हैं, जिससे सभी प्रकार की शंकाएं समाप्त हो जाती हैं। हरि की कृपा से पूरे गुरू से मिलन हो जाता है। जीव की सच्ची लगन लग जाती है।

दूजडी लांव प्रेम प्रीती सुरत शब्द मिलाई।
सतगुरू कीती परम प्रीती, दरगाह में सुख पाई।

जब जीव हरि से प्रेम करता है तो उसका शब्द और ध्यान से मिलन हो जाता है। सतगुरू से सच्ची प्रीति करने से जीव रूपी स्त्री को प्रभु पति की दरगाह में सुख की प्राप्ति होती है।

सतगुरू शरण हरि वडभागी सहिंसे सगल गुआये।।
सतगुरू दाता प्रभु संग राता निस दिन हरि लिव लाये।।

सतगुरू की शरण में रहने से उच्च भाग्यों वाला जीव सभी भ्रमों को समाप्त कर लेता है। सतगुरू ऐसा दाता है जो हर रोज प्रभु हरि से ध्यान जोड़ देता है।

तीजडी लांव अवरन दोष ते, रहित भया मन मेरा।
हरि घटि के विच एक समाना सो घरि पाया डेरा।।

सतगुरू की शरण में मन अवरन दोष से रहित हो जाता है। हरि सर्व-व्यापक है। मैंने उसे अपने भीतर ही देख लिया है। जिस जीव का मन एकाग्र होकर उसके दर्शनों की अभिलाषा करता है, उस पर हरि की असीम कृपा हो जाती है।

मंगल के मंगल नित गावां, इहो अमृतधारा।।
हरि हरि संग लिव जुडी जुडंदी साचा इह सहारा।।

प्रभु के प्रेम में मंगल से मंगलमय गुण गाता हूँ, यही मेरे भीतर प्रभु की अमृतधारा है। हरि हरि से ध्यान जोडने से सच्चा सुहाग प्राप्त होता है।

चौथडी लांव रत्न हरि जाना सुख संपति घर आये।।
आसा मनसा सतगुरू पूरे, जय जय शब्द अलायि।।

जब जीव हरि के सत्य नाम को जान लेता है, उस आलौकिक रत्न को जान लेता है तो उसे सभी खजाने मिल जाते हैं। सारी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। जीव सतगुरू के पावन शब्द का अभ्यास करता हरि की जय-जयकार करता है।

हरि हरि नाम ध्यावो सदा मन प्रेम कर।।
लोभ मोह अहंकार दूत यम दूर हरि।।

जीव को सदैव हरि के पावन नाम का सिमरन करना चाहिए। हरि के नाम को जपने से लोभ, मोह, अहंकार, दूत-यमदूत आदि विकारों से मुक्ति मिलती है।

कहि रविदास पुकारे, जपयो नाम दोये।
हरि कारज सो एक, सदा सुख मानो दोये।

सतगुरू रविदास जी पुकार कर कहते हैं, पति-पत्नी भाव दोनों को ही हरि का नाम जपना चाहिए। हरि नाम जपने से सामान्य कार्य भी विशेष व श्रेष्ठ कार्य बन जाते हैं। इस कार्य से दोनों सुख का अनुभव करते हैं।

साध संग प्रताप, सदा सुख पाईए,
संतन के प्रताप, नाम हरि ध्याइए।।

संतों की संगति के प्रताप से जीव सदैव सुख को प्राप्त करता है। संतों की संगति करके हरि का नाम सिमरन करता है। इस लिए पति-पत्नी को संतों की संगति करने का पावन उपदेश दे रहे हैं।

रलमिल सखियां, मंगल गाया तीसरा।।
सदा जपो हरि नाम, ना कबहूं बीसरा।।

सखी-सहेलियों ने मिलजुल कर तीसरा मंगलाचार गाया। सदा हरि का नाम

जपने वाला जीव हरि को कभी नहीं भूलता।

बिन हरि नाम ना सार, कछहू संसार है।
हरि का नाम ध्यावै, भवि निधि पार है।

प्रभु के नाम के बिना जीव की संसार में कोई सार नहीं लेता। हरि का नाम जपने से जीव भवसागरों से पार हो जाता है। पति-पत्नी दोनों को हरि का पवित्र नाम जपने का उपदेश देते हैं।

मंगलाचार आनंद, सुखी सुख गाया।।
कारज भया सुहेला, हरि हरि ध्याया।।

चौथा मंगलाचार गाने से अदभुत आनंद मिलता है, आनंद प्राप्ति होती है। हरि हरि नाम जपने से जीव के सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

जन रविदास पियास, सदा गुर के नाम की।
हरि संग रहे प्रीति, ओट इक नाम की।।

सतगुरू रविदास जी फरमाते हैं कि जीव के मन में सदैव सतगुरू जी के नाम की प्यास बनी रहनी चाहिए। जीव को हरि से सच्ची प्रीति करके नाम का आश्रय लेना चाहिए।

'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' में सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतमय प्रवच्नों की वर्षा द्वारा संगतों को निहाल करते हैं। 'शादी उपदेश' सतगुरू जी की पावन वाणी इसी पवित्र ग्रंथ में दर्ज है। सतगुरू जी की वाणी समाज को दिशा देती है। आज विवाह समारोह में सतगुरू की शरण में उनके प्रिय शिष्य सच्ची वाणी का आनंद लेते हुए अपने जीवन की खुशी विवाहित जीवन की यात्रा का शुभारम्भ करते हैं। विवाहित जीवन को सुखमय बनाने के लिए सतगुरू जी के पावन उपदेशों पर अमल करके सतगुरूों के दर्शाये मार्ग पर चलना चाहिए। सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी 'हरि संग रहे प्रीति' ऐसी प्रीति पाकर हरि हरि नाम का सिमरन करते हुए अपना जीवन सफल करना चाहिए।

●●●●●●●●●●

"अमृतवाणी में उच्चारण की आरती में 'हरि' का महत्व"

'अमृतवाणी सतगुरू रविदास महाराज जी की' पावन वाणी गुरू रविदास गुरूघरों में सुबह-शाम चलती है। सुबह-शाम संगतें अपने कष्टों के निवारण हेतु गुरू रविदास जी के पावन चरणों में बैठकर प्रार्थना करतीं हैं। सतगुरू रविदास जी की आनंदमय अमृतवाणी का आनंद लेती हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी की उच्चारण की हुई वाणी संगतें शांत व एकाग्र मन से श्रवण करती हैं। गुरू जी की पावन आरती पढ़ने से मन में एकाग्रता आती है, मन शांत होता है। सतगुरू रविदास महाराज जी की आरती में हरि की महिमा का गुणगान है। आरती में हरि का जिक्र होता है। इसलिए सतगुरू रविदास जी की आरती को समझना, मानना, और अपने जीवन में धारण करना अति आवश्यक हो जाता है। यह धारणा हमें बाह्य कर्म-कांडो से तोडकर हरि से मिलाती है। सतगुरू रविदास जी की आरती के भावार्थों को जानना हमारे लिए अति आवश्यक है। आईए सतगुरूों की आरती पढ़ें और उनके अर्थ को समझ कर अपना जीवन सफल करें-

आरती 1) *आरती कहां लेकर जोवे। सेवक दास अचंभो होवे। टेक।*
बावन कंचन दीप धरावै। जड बैराग रे दृष्टि ना आवै। 1।
कोटि भानु जाकी सोभा रोमै। कहा आरती अग्नि होमै। 2।
पंच तात यह तिरगुणी माया। जो देखै सो सकल उपाया। 3।
कहि रविदास देखा हम मांहि सकल जोति रोम सम नांहि। 4।

जगतगुरू रविदास महाराज जी प्रभु की सच्ची आरती का गुणगान करते हैं कि उस प्रभु की ज्योति के प्रकाश के समान करोडों सूर्यों का प्रकाश भी नहीं टिक सकता। हे प्रभु! आप जी के नाम जपने रूपी आरती के बिना मैं संसार में अन्य कोई सत्य आरती नहीं देखता। आप के नाम के बिना मुझे आप के दास के लिए सभी आडम्बर आश्चर्यजनक है। भले ही जीव आरती के लिए स्वर्ण दीपक जलाये परन्तु सच्चे वैराग्य के बिना उस प्रभु के दर्शन नहीं होते। जिस प्रभु की आरती की शोभा करोडों सूर्यों से भी कहीं अधिक प्रकाश कर रही है, फिर ऐसी आरती के लिए अग्नि जला कर यज्ञ करने की क्या आवश्यकता? भाव कोई आवश्यकता नहीं है। इस संसार में पांच तत्वों जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश और तीन गुणों सत, रज और तप से बना है। जो जीव दिखाई दे रहा है, उस में प्रभु समाया हुआ है। मैंने प्रभु को अपने भीतर से अनुभव किया है। उस प्रभु की ज्योति के एक रोम के प्रकाश के समान संपूर्ण विश्व का प्रकाश भी कम है।

आरती 2) *संत उतारै आरती देव सिरोमनीये*
उर अंतर तहां पैसि बिन रसना भणिये। टेक।
मनसा मंदिर महि धूप धूपाईए।
प्रेम प्रीति की माल राम चढाईए। 1 ।
चहुं दिसि दिबला बालि जगमग है। रहियो रे।
जोति जोत सम जाति जोत मिल रहियो। रे। 2 ।
तन मन आत्म बारि सदा हरि गाईए।
भगत जन रविदास तुम सरना आईए। 3 ।

जगतगुरू रविदास महाराज जी जीवों को प्रभु का सिमरन करने का उपदेश देते हैं। प्रभु का नाम जपने रूपी आरती संत जन गाते हैं। हे सबसे बडे प्रभु जी संत आप जी का नाम जपने रूपी श्रेष्ठ आरती का गायन करते हैं। हृदय के भीतर बस रहे प्रभु का नाम संत जन रसना से उच्चारण किए बगैर ही हृदय में गायन करते हैं। अपने सुंदर मन रूपी मंदिर में प्रभु मिलन की आशा का ही धूप जलाते हैं और सच्ची प्रीति रूपी माला परमात्मा के समक्ष चढाते हैं। चारों दिशायों भाव पूरा संसार प्रभु नाम रूपी दीपक से जगमगा रहा है। उस प्रभु के नाम रूपी ज्योति को अपने भीतर जगाकर उस प्रभु की ज्योति से मिलकर भाव आत्मा रूपी ज्योति उस प्रभु रूपी ज्योति का अंश है जो उससे मिलकर उसी का रूप हो जाती है। हे जीव अपना तन मन प्रभु पर कुर्बान करके सदैव ही उसका गुणगान करना चाहिए। गुरू रविदास जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मैं दास आपकी पावन शरण में आया हूँ।

आरती 3)
गगन मंडल में आरती कीजै नाद बिंद इके मेक करीजै।
सुसमन इंदू अमृत कुंभ धरावै मनसा माला फूल चढावै।
घीण अखंडा सोहे बाती त्रिजुटि जोत सोमुख मन धरि लीजै।
पवन साधना थाल सजीजै तामै माहि खिन दहिने खिन बामै लाहि।
सहस कंवल सिंहासन राजै अनहद झांजन नित ही बाजै।
इह बिंद आरती साची सेवा परम पुरखि अलख अभेवा।
कहि रविदास गुरदेव बतावै ऐसी आरती पार लंघावै।

सतगुरू रविदास जी आरती में फरमाते हैं कि दशम् द्वार रूपी गगन मंडल में ध्यान टिकाकर प्रभु की सच्ची आरती करो, जहां प्रभु का अनहद नाद और जीव की उत्पति के अंश बिंद एक हो जाते हैं। दशम् द्वार रूपी सुखमना नाडी में प्रभु के पावन अमृत का कुंभ भरा हुआ है। जहां प्रभु के नाम रूपी पुष्पमाला चढ़ाई जाती है। जहां प्रभु नाम का दीपक बनाकर प्रभु के नाम का घी डालकर प्रेम रूपी बाती दीपक में डाली जाती है और त्रिकुटि में प्रभु के नाम की ज्योति निरंतर जगमगा रही है। दशम् द्वार पर श्वासों को टिकाने रूपी साधना के लिए

थाली सजाई जाती है। जहां चारों ओर से ध्यान हटाकर केवल प्रभु के पवित्र नाम की ओर केंद्रित किया जाता है। उस दशमू द्वार में सूर्य और चंद्रमा से कई गुणा अधिक प्रकाश हो रहा है। जहां किसी भी शंख के बिना अनहद नाद सुनाई देता है। सहस्रदल कमल में प्रभु परमात्मा का सिंहासन है, जहां प्रभु के नाम के अनहद बाजे बज रहे हैं। इस प्रकार आरती करना ही वास्तव में प्रभु की सच्ची आरती है। परम पिता परमात्मा अलख व भेद रहित प्रभु की सच्ची सेवा है। सतगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि प्रभु की ऐसी सच्ची आरती करने से जीव संसार रूपी भवसागर से पार हो जाता है।

आरती 4)

आरती करत हरषै मन मेरो आवत चित तुव रूप घनेरो ।टेक।
अजर अमर अडोल अभेस निरगुण रहित रूप नांहि रेखा।
चेतन सत चित घन आनंदा निरविकार तेज अमित अभेदा। 1 ।
अनुभ अजनमा सर्वज्ञय अनंता अभेद अदेश अविगत सुछंदा।
नाम की बाती धीण अखंड इक ही जोत जलै ब्रह्मंडा। 2।
अनत बार ताहि ध्यान लगावा मुनि जुनि पै पार नांहि पावा।।
मन बच क्रम रविदास ध्यावा घंटाझालर मनहि बजावा। 3 ।

हे प्रभु जी! आप जी का नाम जपने रूपी सच्ची आरती करके मरा मन आनंद भरपूर हो रहा है, जिससे मेरे हृदय में आप जी के अनेक रूप अनुभव हो रहे हैं। प्रभु कभी वृद्ध नहीं होता, सदैव अमर है। कभी डोलता नहीं, निरगुण है। जिसका कोई रंग-रूप नहीं। हे प्रभु! आप चेतन सतगुरू आनंद भरपूर, विकार रहित, ना मिटने वाले और अभेद हो। आप अनूप, जन्म रहित, सब कुछ करने वाले अनंत, अदृष्ट, अविनाशी व निर्मल स्वरूप हो। आप जी की सच्ची आरती के लिए आप के पवित्र नाम का घी दीपक में डाला जाता है। आप जी के नाम की ज्योति जलाई जाती है जो पूरे ब्रह्मण्ड में जगमगा रही है। मुनि-जन अनेकों बार ध्यान लगाते हैं परन्तु आप के आदि-अंत को नहीं जान सकते। मन, वचन और कर्म करके आप जी का ध्यान लगाने रूपी सच्ची आरती करता हूँ जिस से मुझे अपने भीतर ही अनहद नाद सुनाई देता है।

नाम तेरो आरती मजन मुरारे।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे। रहाउ।
नाम तेरो आसनो नाम तेरा उरसा
नाम तेरा केसरो ले छिटकारे।
नाम तेरा अंभला नाम तेरो चंदनो।
घसि जपै नाम ले तुझहि को चारे।। 1।
नाम तेरा दीवा नाम तेरो बाती
नाम तेरो तेल ले माहि पासारे।।

नाम तेरे की जोत लगाई
भयो उजियारो भवन सगलारे।। 2।।
नाम तेरो तागा नाम फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे।।
तेरो किया तुझहि किया अरपउ
नाम तेरा तू ही चवर ढोलारे।। 3।।
दस अठा अठसठे चारे खाणी
इहै वरतणि है सगल संसारे।।
कहि रविदास नाम तेरो आरती
सतिनाम है हरि भोग तुहारे।। 4।।

हे परमात्मा जी तेरा नाम जपना ही तेरी सच्ची आरती है। आप जी का नाम जपना ही आप जी को स्नान कराना है। आप जी के नाम के बिना संसार के सभी पासारे झूठे हैं। आप जी का सच्चा नाम जपना ही आप जी की आरती के लिए आसन लगाना है। आप जी का नाम जपना ही केसर रगड़ने वाला उरसा है भाव केसर रगड़ने वाली शिला है। आप जी के नाम का जाप ही केसर छिडकना है। आप जी का नाम ही जल है, आप जी का नाम जपना ही चंदन है। आप जी का नाम ही चंदन घिसा कर आप जी को तिलक चढाना है। आप जी का नाम ही आरती के लिए दीपक है। आप जी का नाम ही दीपक की बाती है। आप जी का नाम ही तेल है। आप जी के सत्य नाम की ज्योति जगाई है जिससे सब खंड-ब्रह्मण्डों में नाम का प्रकाश हो रहा हे। आप जी का नाम ही धागा है और आप जी का नाम ही पुष्प माला है। आप जी के नाम के बिना पूर्ण वनस्पति के अठारह भार अपवित्र हैं। हे प्रभु! हरि जी आप जी द्वारा बनाई सृष्टि में से आप जी को मैं क्या अर्पित करूं? आप जी का नाम जपकर ही मैं आप पर से चवर झूलाता हूं। अठारह पुराणों, अठसठ तीर्थों और चारों खाणियों (अंडज,जेरज,सेतज,उत्भुज) में सारा संसार चल रहा है। हे परमात्मा आप जी का नाम जपना ही मेरे लिए आप जी की सच्ची आरती है। सतनाम का ही मैं आप जी को भोग लगाता हूँ।

सतगुरू रविदास महाराज जी की आरती में हमने देखा, पढ़ा और समझा है कि वह आरती जो गुरू रविदास जी ने की है, समाज को करने के लिए प्रेरित किया है वे हरि रूपी प्रभु की भांति ही स्वच्छ, पवित्र और शुद्ध है। वह हमें कर्म-कांडों से मुक्त करके हरि से जोडती है। हम सतगुरू रविदास जी की पूरी वाणी में देखते हैं कि महाराज जी हमें हरि से जुडने का पावन उपदेश देते हैं। अपनी आरती में गुरू जी कहते हैं -

तन मन आत्म बारि सदा हरि गाईऐ।

भणत जन रविदास तुम सरना आईऐ।

जीव को अपना मन तन प्रभु हरि के समक्ष कुर्बान करके सदैव उसका गुणगान करना चाहिए। यदि जीव किसी भी शरण में जाता है तो एक परमात्मा हरि ही है जो पूर्ण कृपा व सहारा देता है। सतगुरू रविदास जी से पहले आरती का प्राचीन रूप कर्म-कांड पर आधारित था। सतगुरू रविदास महाराज जी ने इस कर्म-कांडी आरती का प्राचीन रूप बदल कर ऐसा रूप प्रस्तुत किया जो संगत मे अति प्रिय व प्रचलित हुआ। सतगुरू रविदास महाराज जी परम संत थे, उनकी पवित्र रसना से निकले स्वर सत्य ही हैं-

नाम तेरो आरती मजन मुरारे।।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे।। रहाउ।।

सतगुरू रविदास जी की आरती हम सुबह-शाम अति श्रद्धाभाव से पढते हैं क्योंकि यह आरती मुक्ति का राग है। हम उगते सूर्य और ढलते सूर्य भाव सुबह-शाम आरती का जाप करते हैं। हम अनेकों बार पढते हैं 'हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे'। हमारा समाज हरि से जुडा हुआ है। हमें पूरी तरह से जान लेना चाहिए कि हमारी मुक्ति का मार्ग केवल 'हरि' है। हरि से जुडना और अन्य सभी देवी-देवताओं व अन्य सभी प्रकार की करामाती शक्तियों से मुक्त होकर परमात्मा के नाम का आश्रय लेना है। आरती में शब्द 'सतनाम' भी आया है। यह पावन पवित्र शब्द सतगुरू रविदास महाराज जी द्वारा प्रभु-परमात्मा की महिमा, प्रशंसा के रूप में पावन अमृतवाणी में सबसे प्रथम दर्ज हुआ। सतनाम का उपयोग गुरू जी ने हरि के लिए किया है। हमें संपूर्ण आरती में आये पारब्रहम परमेश्वर प्रभु की महिमा भरे विचारों से जुडकर कर्म-कांडों से दूर रहना चाहिए। 'हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे' के अर्थ को समझ कर सतगुरू रविदास महाराज जी की विचारधारा का मुख्य केन्द्र बिंदु हरि से जुडकर हरि की शरण में आकर मुक्त होना समाज के लिए सम्मान व गर्व की बात है। हमने विश्व पर हरि का झंडा भी झूलाना है और हरि का रंग भी चढाना है। दुख सुख की घडी में सतगुरू रविदास जी की उच्चारण की हुई अमृतवाणी में से आरती गाते हुए आनंद अवस्था में रहना है। हर पल याद रहे-

नाम तेरो आरती मजन मुरारे ।।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पासारे।।

●●●●●●●●●●

सतगुरू नामदेव महाराज जी जो हरि का सिमरन कर हरि का ही रूप हो

महाऋषि भगवान् वाल्मीकि जी के जीवन में 'हरि' की महिमा

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि।।
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि।।1।।
रे चित चेति चेत अचेत।। काहे न बालमीकहि देख।।
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।।1।।रहाउ।।
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु।।
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस।।2।।
अजामुल पिंगुला लुभत कुंचरू गए हरि कै पास।।
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास।।3।।

जगतगुरू रविदास महाराज जी हरि के पावन नाम की महिमा करते हुए फरमाते हैं कि महाऋषि भगवान् वाल्मीकि जी हरि का सिमरन करके हरि का ही रूप हो गए। सभी जीवों को उनके बताए मार्ग पर चलकर हरि का सिमरन करना चाहिए। भले ही जीव ऊँची समझी जाने वाली जाति का हो और छः कर्म (शिक्षा प्राप्त करना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान करना और कराना) करता हो, परन्तु यदि उस जीव के हृदय में हरि की भक्ति नहीं है और उसे हरि चरण कँवलों की कथा नहीं भाती, तो वह जीव चंडाल के समान है। हे अचेत चित तुम उस हरि को सदैव अपने हृदय में याद करो और ब्रह्मज्ञानी महाऋषि वाल्मीकि जी के जीवन से प्रेरणा क्यों नहीं लेते जिनका जन्म उस जाति में हुआ जिसको शूद्र समझा जाता था, परन्तु वे उस हरि की भक्ति कर किस पद पर पहुँच गए, अर्थात् अमर होकर हरि का ही रूप हो गए। महाऋषि वाल्मीकि जी ने लोभ रूपी कुत्ते एवं अन्य विकारों पर विजय प्राप्त की हुई थी और जिनके जाने पर पाण्डवों का यज्ञ संपूर्ण हुआ था, उस समय कृष्ण जी और सभी पाण्डवों ने महाऋषि वाल्मीकि जी के चरण धोकर चरणामृत पिया और सम्मान किया। लोगों ने महाऋषि वाल्मीकि जी की महिमा क्या करनी है? उनकी महिमा तो तीन लोक (मात लोक, पाताल लोक और आकाश लोक) में हो रही है। खण्डों-ब्रह्मण्डों में उनकी जय-जयकार होती है। भाव जीव हरि का सिमरन करके हरि का ही रूप हो जाता है।

हरि के नाम का सिमरन श्रेष्ठ धर्म

''हरि हरि करत मिटै सब भरमा
हरि को नाम लै ऊत्तम धरमा।।''

गए, जिन्होंने इस संसार को कल्याणकारी उपदेश दिया कि हरि का सिमरन करने से जीव के सभी प्रकार के भ्रमों का नाश हो जाता है और हरि का नाम सिमरन ही इस संसार में श्रेष्ठ धर्म है।

हरि का सिमरन दुखों का निवारण

ऐसा गिआनु विचारु मना।।
हरि की न सिमरहु दुख भंजना।।

सतगुरू कबीर जी महाराज फरमाते हैं कि हे जीव! तुम अपने मन में ऐसे हरि का विचार करो, जो हरि का नाम सभी दुखों की निवृति करता है।

●●●●●●●●●●

“हरि हरि नाम जपदिया कदी ना आवे हार”

जगतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी में पारब्रह्म प्रभु प्रीतम के पवित्र नाम की अनंत महिमा समाई हुई है। अक्षर-अक्षर सच्चे स्वामी की महिमा-प्रशंसा से भरपूर है। हम सतगुरू रविदास महाराज जी की वाणी में बार-बार ‘हरि पूर्ण मुक्ति दाता’ का जिक्र देखते हैं। सतगुरू जीव को अर्थात् हमारे समाज को बार-बार कह रहे हैं-

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाकै।।
चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताकै।।
हरि हरि हरि न जपहि रसना।।
अवर सभ तिआगि बचन रचना।।1।। रहाउ।।

गुरू जी अज्ञानता के निद्रा में सोये हुए समाज को समझा रहे हैं, भटके हुए संसार को मार्ग दिखा रहे हैं कि सुखों के समुद्र परमात्मा का सिमरन करो जिसके अधीन सुरतरि कल्प वृक्ष, मन वांछित फल देने वाली मणि, चिंतामणि, मनोकामना पूरी करने वाली कामधेनु गाय है। चार पदार्थ काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष आठ बडी सिद्धियां और नौ खजाने उसी परमात्मा हरि जी की हथेली पर हैं। जो जीव उस प्रभु का सिमरन करता है, उसके वश में यह सब कुछ आ जाता है। उसके इर्द-गिर्द यह सब कुछ घूमता फिरता है, यह है उस परमात्मा के नाम की महिमा। जीव को समझाते हुए सतगुरू जी कह रहे हैं कि तुम ऐसे सुखों के समुद्र हरि हरि का नाम रसना से क्यों नहीं जपते? तुम संसार की झूठी रसना के वचनों को त्याग कर प्रभु का सिमरन करो। अंनत गुणों के

स्वामी प्रभु अपने भक्तों के सभी कार्य संवारता है।

हृदय हरि हरि रही को सिमरो बारे बारे।।
दुसता संग त्याग कर संतां संग प्यार।।

हृदय को हरि हरि प्रभु के रंग में रंग कर हरि हरि का सिमरन करते रहना चाहिए। हृदय को हरि प्रभु के योग्य बना लो। मन मंदिर में हरि की ज्योति का प्रकाश होना आवश्यक है। सतगुरू रविदास जी हमें उपदेश दे रहे हैं कि हरि हरि को सदैव हृदय में स्मरण करने से प्रभु हम पर दयालु होते हैं। हरि को सदैव याद करके दुष्ट जनों का त्याग करो। हरि के प्रिय संत जनों संग प्रेम की प्रीति जोड लो। संतों की संगति में मगन होकर मुक्ति को प्राप्त कर पायोगे। संतों की संगति करो जो हरि से मिलाते हैं।

हरि सिमरै सोई संत बिचारो,
अवर जनम बेकाम राम बिन,
कोटि जनम से उपरि बारो।।

जो संत हरि के सिमरन का सत्य उपदेश देता है, वही सच्चा संत है। जो संत प्रभु का सिमरन करता है, वही श्रेष्ठ विचारों का स्वामी है क्योंकि प्रभु के नाम के बिना जीव का जन्म विफल हो जाता है। यह जन्म सफल करना है, तो अपना जन्म संतो के पावन चरणों में भेंट करना होगा। यदि करोडों जन्म भी मिलें तों संतो की शरण में ही रहना चाहिए। संत हरि परमेश्वर का मार्ग दिखाते हैं।

“करि भगत मिलै हरि धाम”

सतगुरू रविदास जी उपदेश दे रहे हैं कि हरि को याद करना केवल एकमात्र मुक्ति का मार्ग है, मुक्ति का आधार है। पापों की मैल, लोभ की दौड को पीछे छोड कर हरि की भक्ति करो और हरि की भक्ति करने वाले हरि धाम सत्य गृह के वासी बनते हैं।

गुरू हरि मैला भेद कझि कहियो आप सुजान।
निहचै कर गुरू चरण भुज होवत है कल्याण।।

सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में उपदेश देते हैं कि गुरू जो हरि का नाम जप कर अपने सेवकों को हरि का जाप कराता है, हरि रूपी सत्य को जान कर पूरे संसार को समझाने चल पडा है। ऐसे गुरू के चरणों में सिर झुकाने से कल्याण होता है। हरि का सिमरन करने वाला हरि की गोद में बैठा गुरू भी हरि का ही रूप हो जाता है। हे जीव! यदि तुमने हरि को देखना है, तो गुरू के दिए ज्ञान को जीवन में अपना लो और हरि का नाम जपो।

सरब कर्म को त्याग कर
हरि गुरू जप दिन रैन।

सारे संसारिक कर्मों को त्याग कर, कर्म-कांड, पूजा-भक्ति का त्याग कर

दो और दिन-रात, आठों पहर हरि का सिमरन करो। श्वास-श्वास पर हरि हरि की माला चलती रहनी चाहिए। एक गुरू की वाणी को मन में हृदय में बसा कर रखना चाहिए।

कहि रविदास भज हरि नाम
प्रभु सो ध्यान सफल सब काम।

हरि का सिमरन करने से हरि हरि नाम जपने से सभी कार्य सफल हो जाते हैं। हरि सदैव अपने सेवकों के कार्य स्वयं संवारता है।

"हरि हरि नाम ध्यावो सदा मन प्रेम कर
लोभ मोह अहंकार दूत यम दूर हरि।
सच शील संतोख सदा दृढ़ कीजिऐ
अमृत हरि का नाम प्रेम कर पीजिऐ"।

सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी मार्ग दर्शन कर रही है, भटके हुए जीव को, अंधकार में डूबे समाज को वहम-भ्रमों, विष्य-विकार रूपी अंधेरे में गुम हुए मन में हरि का प्रकाश करने का संदेश दे रही है। हरि हरि का नाम जपने से सदा सदा के लिए मन प्रेम का पुजारी हो जाता है। लोभ, मोह, अहंकार आदि विषय-विकारों का कोई महत्व नहीं रहता, जब हरि का वास होता है। हरि का नाम जपने से मन में सत्य, सहनशीलता, संतोष भाव और दृढ हो जाता है। हरि अनेकों गुणों की रहिमत है। यह 'हरि के नाम' का अमृत प्रेमपूर्वक पीयो। ऐसा अमृत विषय-विकार रूपी जहर को समाप्त कर देता है।

बिन हरि नाम न धार कुछह संसार है
हरि का नाम ध्यावै भवि निध पार है।

यह संसार की सारी रचना हरि की बनाई रचना है। हरि के बिना इस संसार की रचना में, पालन-पोषण में कोई दखल नहीं दे सकता। हरि के नाम के बिना संसार में कुछ भी नहीं है। हरि का नाम जपने से भवसागर को पार किया जा सकता है।

मंगल महा सो मंगल हरि हरि नाम है।
आठ पहर मुख जपो, इहि शुभ काम है।

जितना हो सके हरि हरि का नाम जपना चाहिए। केवल हरि का नाम है जिसे दिन रात आठों पहर जपना चाहिए। आठों पहर हरि का नाम जुबान पर रहना चाहिए। इससे बडा शुभ कोई कार्य नहीं है।

हरि पूर्ण परमात्मा निरधन अपार।
सरब व्यापी प्रभु है तू ना कभी विसार।।

सर्व-व्यापक प्रभु 'हरि' का सिमरन करो। यदि मुक्ति चाहते हो तो सदा याद रखो, उठते-बैठते हरि की धुन बजती रहती है। कोई भी काम करो, तूंबे की तार की भांति हरि हरि बजती रहे। बस हरि प्रभु को पल के लिए भी मन

से विसारो मत। हरि के नाम की महिमा अमृतवाणी में भरी हुई है।

हरि जपत तेउ जना पदम कवलास पति
तास सम तुलि नहीं आन कोउ।।
एक ही एक अनेक होय बिसथरिया
आन रे आन भरपूर सोउ।।

हरि का सत्य नाम इतना शक्तिशाली है कि जो जीव हरि का नाम जपता है। उसकी समानता विष्णु, शिव व अन्य देवी-देवता भी नहीं कर सकते। वह प्रभु एक से अनेकों रूप में बिराजमान है। ऐसे शक्तिशाली हरि का नाम जप लो जो भवसागर से पार कर देता है। विष्य-विकारों की समझ दे देता है। सही-गलत, उचित-अनुचित का मार्ग दिखाई देने लगता है, जब सत्य नाम मन में बस जाता है और अन्य सभी झूठे पासारे समाप्त हो जाते हैं। हरि का मजीठी रंग इस प्रकार चढ जाता है जो कभी भी नहीं उतरता। यह हरि का मजीठी रंग हरि हरि के जपने से ही चढ़ता है और महापुरूषों की संगति करने से प्राप्त होता है।

जो दिन आवहि सो दिन जाहि
करना कूच रहनु थिर नाहि।।
संग चलत है हम भी चलना
दूर गवन सिर उपरि मरना।।
क्या तू सोया जाग इयाना
तै जीवन जगि सच करि जाना।।

जो दिन आ रहा है वह डूबता जा रहा है। जीव की भी संसार में दिन-प्रतिदिन आयु घटती जा रही है। सभी ने संसार को छोड जाना है। यह संसार स्थिर रहने वाला नहीं है। संगी साथी संसार से जा रहे हैं। हमें भी एक दिन इस संसार से चले जाना है। मृत्यु सदा सिर पर खडी रहती है। सांसारिक जीव अज्ञानता रूपी निद्रा में सोया हुआ इस संसार को सत्य समझ रहा है, जो वास्तव में नाशवान है। इसलिए -

कर बंदगी छाडि मैं मेरा
हृदय नाम समारि सवेरा।।

हे जीव! इस नाशवान संसार को त्याग दो, झूठी आशा मत रखो। मैं मरी के अहंकार को त्याग दो और हरि प्रभु की बंदगी करो, अमृत समय में उठकर हृदय में हरि का पवित्र नाम का सिमरन करो क्योंकि -

हरि हरि नाम जपदियां कदी ना आवै हार।।

हरि हरि के नाम के बिना संसार का जीव हार जाता है। सतगुरू रविदास जी अपनी अमृतवाणी में उपदेश दे रहे हैं कि इस समय को व्यर्थ मत करो, यह बहुमूल्य है। यदि तुम जीवन की बाजी जीतना चाहते हो तो हरि हरि नाम

का सिमरन करो। जिसके सत्य नाम की कृपा से जीवन में कभी पराजय नहीं मिलेगी। अपना तन मन हरि को समर्पित करके हरि के नाम के गहरे सागर में तैरना है तो हरि के नाम का सिमरन करो।

हरि को याद करना, हरि की आराधना करना, हरि प्रभु का सिमरन एकमात्र हमारी मुक्ति का मार्ग है। इस मार्ग पर चलकर हम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इस मार्ग से हटकर मुक्ति तो क्या हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। पारब्रह्म प्रभु परमेश्वर जिसे जगत्गुरू रविदास महाराज जी ने अपनी पावन अमृतवाणी में 'हरि' नाम से याद किया और श्वास-श्वास सिमरन किया है। आज हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने रहिबर पिता सतगुरू रविदास महाराज जी की शिक्षा पर स्वयं चलकर और दूसरों को भी गुरू जी के बताए हुए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें। जब तक हम स्वयं अमृतवाणी को अपने जीवन में नहीं अपनाते, तब तक हमारा जीवन व्यर्थ है। यह सच हमें मान लेना चाहिए। हमारी मुक्ति का आधार हरि नाम है। सच्चे नाम के बिना हमारी मुक्ति, हमारे समाज का कल्याण नहीं है।

●●●●●●●●●●

"हरि दुखों का निवारन"

सतगुरू रविदास महाराज जी अपनी अमृतवाणी में मानव को सच्चे प्रभु के सच्चे नाम की शरण में जाने का सत्य मार्ग दिखा रहे हैं। संसार में जी रहे जीव अपनी इच्छायों, मनोकामनायों के प्रभाव में आकर प्रभु के नाम से दूरी बनाकर अति कष्ट-पीड़ा से ग्रस्ति हो जाता है। हम नजर उठाकर देखते हैं कि इस संसार में असंख्य लोग हैं, जो दुखों से घिरे हुए हैं। गरीब हों या अमीर, राजा हो या रंक सभी दुखी हैं। हर कोई चाहता हे कि मेरे जीवन में सुख हो। कोई भी ऐसा जीव नहीं जो चाहता हो कि मेरे जीवन में सुख न हो। भगवान बुद्ध जी ने कहा है कि दुख है, दुख का कारण है। दुखों का कारण तलाश करके उसे समाप्त करो, दुख स्वयं समाप्त हो जाऐंगे। आदि से लेकर अंत तक जीव दुखों से निजात नहीं पा सकेगा। यह अटल सच्चाई है कि अमृत के साथ जहर भी होता है। सुख का आनंद लेने वाले जीव को दुख की पीड़ा भी सहनी पड़ती है। विश्व भर में आज तक कोई ऐसा जीव नहीं है जिसने जीवन में केवल सुख ही सुख पाया हो। दुखों से मुक्ति हर जीव चाहता है परन्तु दुखों से मुक्ति कैसे प्राप्त हो, यह कोई नहीं सोच रहा। दुख दूर करने की एक ऐसी दवाई सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी में देकर गए हैं जिससे जीव को दुखों से मुक्ति मिल सकती है। दुख हमारी इच्छाओं से मिलते हैं, दुख विकारों से मिलते हैं और सुख सतगुरू की कृपा से सब्र-संतोष में मिलते हैं।

जोब बस राखै इंद्रियां सुख दुख समझि समान।।
सोउ अमृत पद पाईगो कहि रविदास बखान।।

जो जीव अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हैं। अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखते हैं, वे सुखी जीवन जीते हैं। जो इंद्रियों पर काबू पाकर संयम का जीवन व्यतीत करके सुख-दुख को एक समान समझ कर चलते हैं और सुख-दुख में प्रभु का हरि का नाम जपते हैं, वे परमपद प्राप्त कर लेते हैं।

काम क्रोध मे जन्म गंवायो
साध संगति मिलि राम ना गयो।।

सुखों का सागर हरि का नाम है। हरि के नाम बिन सभी पदार्थ झूठे हैं। हरि का नाम विसार कर कभी भी सुख नहीं मिलता। जीव प्रभु को भूलकर काम, क्रोध आदि विषय-विकारों में जन्म गंवा लेता है, पूरी जिन्दगी रोता है, दुखों पर रोता है परन्तु संतों की संगति में सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। उसने हरि नाम की महिमा नहीं गाई जिसमें सदीवी आनंद मिलता है। प्रभु के सच्चे नाम के बिना दुख ही दुख हैं। सभी सुख तो प्रभु की सच्ची शरण में हैं। जीव प्रभु की बंदगी के कारण ही सुख का अनुभव करता है। हरि का नाम जपो, जो सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी में फरमा रहे है।

राखउ कंध उसारहु नीवां
साढे तीन हाथ तेरी सीवां।।

जब जीव माया के पीछे भागता है, अच्छे-बुरे का अंतर नहीं करता, धन दौलत के अंबार लगाना चाहता है, कभी-कभी तो लगा भी लेता है, पूर्ण विश्व का स्वामी बनना चाहता है, सारा जीवन प्रभु को विसार कर ऐसे ही भागता रहता है परन्तु अंत में जब मृत्यु आती है तो चाहे वह जीव कितना भी धनी-बलवान क्यों न हो भाव कोई भी हो, केवल साढे तीन हाथ धरती ही उसे नसीब होती है। सतगुरू रविदास जी जीव को समझा रहे हैं कि हे जीव! समय रहते हुए तुम संभल जाओ क्योंकि बाद में बीता हुआ समय वापिस नहीं आएगा।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है
देखे देखे सुनै बोले दउरियो फिरत है।।
जब कुछ पावै तब गरब करति है
माया गई तब रोवन लगत है।

पांच तत्वों से बना हुआ जीव अपने संसार में आने के मूल मनोरथ को भूल हरि के नाम को भूलकर मोह-माया में फंसा हुआ है। माया के प्रभाव में रहता है। माया को देखकर अति प्रसन्न होता है। माया के प्रति सुनना व जानना उसे आंनद देता है। जब जीव माया प्राप्त कर लेता है तो माया का अहंकार करने लगता है। जब माया हाथ से निकल जाती है तो अति दुखी होता है, व्याकुल

हो जाता है। दुख-सुख एक समान हैं। सुख में भी प्रभु को याद करना चाहिए और दुख में उस प्रभु हरि के चरणों में प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि वही कष्ट निवारक है। उसकी कृपा से ही सभी प्रकार के दुखों का अंत हो जाता है और प्रभु ऐसे सुख देता है कि आनंद ही आनंद रहता है। सदा याद रहे कि अमृतवाणी कह रही है-

इह जग दुख की खेतरी, इह जानत सभ कोय।।
ज्ञानी काटहि हरि नाम सों, मुरक काटहि रोय।।

यह संसार दुखों की खेती है। इस बात को हर कोई जानता है। ज्ञानी जीव प्रभु के नाम का सहारा लेकर हरि नाम को जप कर अपने दुखों को समाप्त कर लेता है और मूर्ख इंसान दुख को देखकर रोने लगता है। सुख और दुख दोनों उस प्रभु के हैं। यदि हम सुख चाहते हैं तो दुख को भी समझ कर उससे मुक्त होना होगा। दुख का निवारन वह प्रभु हरि है और हरि ही सब सुखों का समंदर है। हरि का सिमरन करते हुए सुख-दुख में अमृतवाणी का जाप करना चाहिए। सतगुरू जी के सत्य ज्ञान में स्वयं को डुबो लेना चाहिए। सतगुरू रविदास महाराज जी का सत्य ज्ञान ही हमारी मुक्ति का द्वार है।

●●●●●●●●●●

"हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे"

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे,
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे।।
हरि के नाम कबीर उजागर,
जन्म जन्म के काटे कागर।।
निमत नामदेउ दूध पिआईया,
तउ जग जन्म संकट नही आया।।
जन रविदास राम रंग राता,
इउ गुर प्रसाद नरक नहीं जाता।।

सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं कि हरि का नाम जपने से जीव पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है। सतगुरू रविदास महाराज जी सांसारिक जीवों को समझा रहे हैं कि हरि का नाम जपो। प्रभु का सच्चा नाम जपने से ही मुक्ति मिलती है। हरि का नाम जपकर पहले भी सांसारिक जीव मुक्त हुए हैं और आगे से भी मुक्त होते रहेंगें, भाव आदि से अंत तक एक सच्चा नाम ही है जिसको जप कर भवसागर को पार किया जा सकता है। यह सच्चा नाम ऐसा नाम है जिसके हृदय में जाप होता हे, वह हृदय उज्जवल हो जाता है। प्रभु का श्वास-श्वास सिमरन करके सांसारिक भवसागर जिसे

कभी पार नहीं किया जा सकता, उसे पार किया जा सकता है। परमात्मा का सत्य नाम जपकर विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त की जा सकती है। सतगुरू रविदास महाराज जी महान परम संत कबीर जी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि देखो हरि का पवित्र नाम जप कर संत कबीर जी इस संसार में प्रसिद्ध हुए हैं। इन संत महापुरूषों ने स्वयं तो मुक्ति को प्राप्त किया ही और साथ में सांसारिक जीवों को एकता, मानवता, समानता और आपसी सद्भावना का पावन उपदेश भी दिया। साथ ही सतगुरू रविदास महाराज जी जीवों का सतगुरू नामदेव जी का उदाहरण देते हुए समझा रहे हैं कि देखो जब नामदेव जी ने सिमरन करके सिमरन, एकता, प्रेम-प्यार से प्रभु को याद किया तो नामदेव जी के जन्म-मरण के बंधन कट गए। परमात्मा को प्रेम वश होकर भक्तों के कार्य संवारने पडते हैं। हमें सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि जहां प्रेम है, जहां भक्ति है, जहां अदब है, सम्मान है, वहीं प्रभु अपने प्रिय भक्तों की बाजू पकड कर भवसागर से पार करता है। अपने सेवकों की हर प्रार्थना स्वीकार करता है। प्रार्थना प्रेम-प्रीति और सच्चे दिल से की जानी चाहिए। इस प्रकार जब यह जीव परमात्मा के रंग में रंगा जाता है, तो जीव पर प्रभु की असीम कृपा हो जाती है। जीव गुरू की कृपा से नर्क से मुक्त हो जाता है। जीव जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर हरि प्रभु की कृपा से प्रभु परमात्मा में लीन होकर अभेद हो जाता है। हमें सतगुरू रविदास महाराज जी की अमृतवाणी याद दिला रही है, समझा रही है कि सतगुरू कबीर जी, सतगुरू नामदेव जी प्रभु-परमात्मा के सत्य नाम का सिमरन करके मुक्त हो गए हैं और असंख्य सांसारिक जीव हरि का नाम जपकर मुक्त हो गए हैं। जिन्होंने उन महापुरूषों के वचनों पर अमल करके उनके दर्शाये मार्ग पर चलकर सच्चे प्रभु -परमात्मा का सच्चा नाम जपकर हरि की अपार कृपा से मुक्ति को प्राप्त कर लिया।

●●●●●●●●●●

"हरि सिमरै सोई संत विचारो"

सतगुरू रविदास महाराज जी अमृतवाणी में फरमाते हैं 'हरि नाम' की महिमा अनंत है। हरि की बनाई सृष्टि में हर जीव को अधिकार है 'हरि हरि नाम जपना'। इस ससांर में भूले-भटके जीव को सत्य मार्ग पर चलाने के लिए हरि की सच्ची पूजा, विषय-विकारों से रहित होकर सत्य मार्ग पर लाने का कार्य परमात्मा के महान संत करते हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी जीव को साधू-संतो की संगति करने का सत्य उपदेश दे रहे हैं।

हरि हरि सोई संत विचारो

अवर जन्म बेकाम राम बिन

कोट जन्म सो उपरि बारो।। टेक।।

सतगुरू रविदास महाराज जी ने संतो की संगति करने का पावन उपदेश दिया है। जो संत प्रभु का, हरि का सिमरन करते हैं, उन संतों के पावन चरण कमलों से जीव को सैंकड़ों जन्म कुर्बान कर देने चाहिए। मनुष्य जन्म जीव को संतों की संगति में गुजार देना चाहिए। संतों की सच्ची संगति करके जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों व झूठे आडम्बरों से मुक्त हो जाता है। संतों की संगति करके जीव पापों से मुक्त हो जाता है।

कहि रविदास राम जपि भाई,

संत साखि दे बहुरि न आऊ।

संत इस बात की गवाही देते हैं कि जो जीव सच्चे मन से प्रभु का सिमरन करता है, हरि का ध्यान करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। वह कभी पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता।

संत तुझी तनु संगति प्राण

सतगुरू ज्ञान जानै संत देवा देव।।

संत ची संगति संत कथा रस।।

संत प्रेम माझे दीजै देवा देव।। रहाउ।।

संत आचरण संत चो मार्ग संत ओलग ओल्गणी।।

अउर इक मागह भगति चितामणि।।

जाणि लखावह असंत पापी सणि।।

रविदास भणै जो जाणै सो जाण

संत अनंतहि अंतर नाहि।।

सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी में फरमाते हैं कि हे परमात्मा! संत आप के शरीर हैं, संतों की संगति ही आप जी के प्राण हैं। सतगुरू ज्ञान काल से ही जाना जाता है। संत देवों के पूजनीय हैं, परमात्मा स्वरूप हैं। हे देवों के देव हरि जी, मुझे संतों की संगति, संतों की कथा का आनंद, संतों से प्रेम करने का दान दें। संतों जैसा आचरण और संतों वाला श्रेष्ठ मार्ग प्रदान करें। मुझे मन वांछित फल देने वाली नाम रूपी भक्ति दें परन्तु कभी भी ऐसे जीवों का जो संतो के विरूद्ध हैं, के दर्शन मत करवाऐं जी। ये सांसारिक लोग संतों को जो चाहे समझें, परन्तु सच्चाई यह है कि संत और पारब्रह्म में कोई भेद नहीं है। संत संसार में परमात्मा का ही सच्चा रूप हैं।

साध संगति बिना भउ नहीं उपजै

भाव बिन भगति नहि होये तेरी।।

सच्चे प्रभु प्रीतम जी संतो की संगति करने का इतना महत्त्व है कि संतों की संगति के बिना आप जी के प्रति प्रेम भावना उत्पन्न नहीं होती और प्रेम के

बिना आप जी के पवित्र नाम की भक्ति नहीं होती।

मिलत पियारो प्रान नाथ कवन भगति ते,

साध संगति पाई परम गते।। रहाउ।।

सांसों से प्रिय परमात्मा कौन सी भक्ति से प्राप्त होता है? संतो की संगति करके जीव सबसे श्रेष्ठ अवस्था अर्थात् प्रभु रूपी परम पद मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

संतों संग निवास कर, सांत भयो तिन चीत।।

उत्पति करै आप सभि करे पालना नीत।।

सतगुरू रविदास महाराज जी जीव को संतों की संगति करने का पावन उपदेश दे रहे हैं क्योंकि संतों की संगति करके जीव को मुक्ति मिल सकती है। संत-महापुरूष परमात्मा का सच्चा नाम जपाते हैं, हरि की कथा सुनाते हैं।

कथा कहै अर अर्थ बिचारै

आप तरै औरन को तारै।।

संत महापुरूषों की संगति करके जीव मुक्त हो जाता है क्योंकि वे प्रभु के सच्चे नाम की कथा करते हैं, अर्थ विचारते हैं। प्रभु का नाम सिमरन करके स्वयं तो पार हुए ही हैं और संगतों को भी पार कर देते हैं। संगतों को भी हरि से जोडकर भवसागर से पार कर देते हैं।

"बहुत जन्म बिछुरै थे माधव"

जन्मों के बिछडे हुए जीवो को संत महापुरूष प्रभु से मिला देते हैं। संतों की संगति करके जीव हरि के नाम के भंडार को पा लेते हैं। जन्मों-जन्म की भटकन संतों की शरण में आकर समाप्त हो जाती है।

साधू की जो लेहि ओट

तेरे मिटहि पाप सब कोटि कोटि

कहि रविदास जो जपै नाम

तिस जाति न जन्म न योनि काम।।

सतगुरू रविदास जी जीव को समझाते हुए अमृतवाणी में फरमाते हैं कि जो जीव संतों का ओट आसरा भाव शरण लेता हैं, संतों के कहे वचनों पर चलता है, उसके करोड़ों-करोड़ों पापों का नाश हो जाता है। जो जीव इस संसार में प्रभु का सत्य नाम जपता है वह जाति, जन्म, योनि-चक्रों से मुक्त हो जाता है भाव जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। सतगुरू जी संतों की संगति करने का सत्य उपदेश संगतों को देते हैं। सतगुरू रविदास जी जीव को संतों की संगति करने की प्रेरणा देते हैं और सत्य मार्ग दिखा रहे हैं। संतो के विपरीत मार्ग पर चलने से रोक रहे हैं। संत महापुरूषों की आलोचना करने से मना कर रहे हैं। संतो के उपदेश यदि मानकर चलोगे तो जीते जी मुक्त हो जाओगे क्योंकि संत सच्चे और अंत तक की अवस्था का नाम है। जीव इस

अवस्था की निंदा करता है, जिसे सतगुरू रविदास जी अमृतवाणी द्वारा रोकते हैं।

साध का निंदक कैसे तरै।।
सरपर जानहु नरक ही परै।। रहाउ।।

संतों की निंदा करने वाला जीव कभी भी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता, और कभी भी भवसागर को पार नहीं कर सकता। संतों के निंदक निःसदेंह नर्क में जाऐंगे क्योंकि संतों की निंदा प्रभु की निंदा है। संत हरि का रूप हैं। संत महात्मा प्रभु अवतार हैं। संतों की निंदा करने वाला कई योनि-चक्रों में घूमता रहता है। यह सत्य उपदेश सुनकर समझकर कुछ निंदक संतों की निंदा करते हैं। संतों पर हमला करते हैं, जैसे संत निरंजन दास जी और संत रामानंद जी पर हमला किया गया। जिसमें संत निरंजन दास जी गंभीर रूप से घायल हो गए और संत रामानंद जी शहीद हो गए। संत रामानंद जी सतगुरू रविदास जी की अमृतवाणी का प्रचार कर रहे थे, सत्य का प्रचार कर रहे थे परन्तु कुछ संत-दोखी और मानव विरोधी विचारों के लोगों ने संतों पर अति कायरता पूर्ण हमला किया जिसकी संपूर्ण विश्व में आलोचना की गई। संत रामानंद जी डेरा सच्चखंड बल्लां के महान संत बाबा पिप्पल दास जी, महान सतगुरू स्वामी सरवण दास जी, संत हरी दास जी, संत गरीब दास जी और वर्तमान गददी नशीन संत निरंजन दास महाराज जी के दर्शाये मार्ग पर चलकर सतगुरू रविदास महाराज जी की विश्व-व्यापक विचारधारा का प्रसार और प्रचार कर रहे थे। पूरी बिखरी हुई रविदासिया कौम को एक माला में पिरोने का कार्य कर रहे थे। दुखी पीड़ित कौम, अज्ञान कौम के लोगों को ज्ञान का प्रकाश दे रहे थे। समाज में आत्म-सम्मान जगाने के लिए सतगुरू रविदास जी के जन्म अस्थान को स्वर्ण मंडित करने का कार्य आरंभ कर रहे थे परन्तु मानव विरोधियों को यह रास नहीं आया। उन्होंने महान् परोपकारी संतों पर गोलियों-छुरियों से हमला किया, जो संत विश्व को प्रेम की भाषा, फूलों जैसी कोमलता देते थे, मानव विरोधियों ने गुरू रविदास जी के पावन मिश्न को रोकने का असफल प्रयास किया। ऐसे निंदको के लिए निःसंदेह यह जहान नर्क से भी बदतर होगा और आगे भी उन्हें नर्क ही मिलेगा। आज हमारे संपूर्ण समाज ने सतगुरू रविदास महाराज जी की पावन अमृतवाणी पर अमल करके अपना जीवन सफल करना है। संतों की संगति करते हुए मुक्त होना है, हरि के सत्य रूप संतो प्रवचनों पर अमल करके मुक्ति प्राप्त करनी है।

जब लग नदी न समुंद समावै तब लग बडै हंकारा।।
जब मन मिलियो राम सागर सो तब यह मिटी पुकारा।।

जब तक नदी अपने अहंकार में बहती रहती है, वह समुद्र में नहीं मिल पाती, तब तक वह खूब वेग के साथ बहती है। बड़ा शोर मचाती है, बाढ लाती

है, मिट्टी खोदती है परन्तु जब समुद्र में मिलती है तो समुद्र का ही रूप हो जाती है। जब जीव मन का अहंकार त्याग कर परमात्मा के द्वार पर जाता है, तब वह परमात्मा का ही रूप हो जाता है। उसकी सारी पुकार समाप्त हो जाती है।

हरि गुरू साध समान चित नित आगाम तत मूल।।
इन बिच अंतर जिन परौ करवत सहन कबूल।।

आज परमात्मा से जोडने के लिए संत महापुरूष हमें अपने प्रवचनों की पावन वर्षा कर रहे हैं। आज संत सत्य के अंत को जान गए, हमें सच्चाई के मार्ग पर चला रहे हैं। आज संत जो हरि हरि का नाम जपा रहे हैं। सतगुरू रविदास महाराज जी की विश्व-व्यापक विचारधारा को फैलाने के लिए 'रविदासिया धर्म' का प्रचार कर रहे हैं तथा हरि के झंडे झुला रहे हैं और 'अमृतवाणी सतगुरू रविदास जी की' के जाप करवा रहे हैं। आज संपूर्ण समाज को रविदासिया धर्म का प्रचार करते हुए सतगुरू रविदास जी की विचारधारा को समझकर सूझ-बूझ से संत और असंत में अंतर जानना होगा। सतगुरू रविदास जी की विचारधारा का विकास कर रहे संत महापुरूषों और सतगुरू रविदास मिश्न में अटकलें पैदा कर रही रूकावट को समझ कर अंतर जान कर ही हम किसी मंजिल पर पहुँच सकते हैं। संत दे रहे हैं 'बेगमपुरा की मंजिल', दूसरा वही सदियों पुरानी 'गुलामी' का मार्ग। फैसला समाज ने करना है। देखना कहीं निर्णय लेने में देरी मत कर देना। आईए डेरा सच्चखंड बल्लां के महान् महापुरूषों के चरणों से जुडकर रविदासिया धर्म के सच्चे अनुयायी बन कर रविदासिया धर्म का प्रचार करें।

जय गुरूदेव।

डेरा सच्चखण्ड बल्लां द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ (ਗੁਟਕਾ) ਪੰਜਾਬੀ
2. जगतगुरु रविदास अमृतवाणी (गुटका)
3. ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ (ਗੁਟਕਾ) (ਨਿਤਨੇਮ)
4. जगतगुरु रविदास अमृतवाणी (गुटका) (नितनेम)
5. ਸੁਖਸਾਗਰ (ਪੰਜਾਬੀ)
6. श्री गुरु रविदास अमृत वाणी —संत रामा नंद जी
7. श्री गुरु रविदास दर्शन एवं मीरा पदावली —संत रामा नंद जी
8. ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ (ਸਟੀਕ ਤੇ ਸੰਖੇਪ ਜੀਵਨ) -ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ
9. जगत्गुरु रविदास अमृत वाणी (स्टीक एवं संक्षिप्त जीवन) हिन्दी -संत सुरिन्दर दास बावा जी
10. नितनेमअमृत वाणी जगतगुरु रविदास जी (स्टीक)हिन्दी -संत सुरिन्दर दास बावा जी
11. ਨਿਤਨੇਮ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਬਾਣੀ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ (ਸਟੀਕ) ਪੰਜਾਬੀ -ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ
12. जगत्गुरु रविदास महाराज जी की पावन जीवन कथाएँ -संत सुरिन्दर दास बावा जी
13. अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी सटीक -संत सुरिन्दर दास बावा जी
14. ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਜੀਵਨ -ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ
15. ਗੁਰੂ ਉਪਦੇਸ਼ —ਕਵੀ ਤੋਤਾ ਰਾਮ ਪੰਛੀ (ਮੁਕੇਰੀਆਂ)
16. ਜਨਮ ਸਾਖੀ 'ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ' ਅਰਥਾਤ ਤਵਾਰੀਖ਼ ,,
17. ਸੰਤ ਉਸਤਤ —ਕਵੀ ਕਰਮ ਚੰਦ ਪ੍ਰੇਮੀ (ਆਬਾਦੀ)
18. ਮਹਿਮਾ ਦਰਬਾਰ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ,,
19. ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ — ਗਿਆਨੀ ਬਿਸ਼ਨਾ ਰਾਮ ਵਿਰਦੀ
20. ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਗਾਥਾ —ਸ਼੍ਰੀ ਕਾਂਸ਼ੀ ਰਾਮ ਕਲੇਰ (ਜੰਡੂ ਸਿੰਘਾ)
21. ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਚਮਤਕਾਰ —ਸ਼੍ਰੀ ਚਰਨ ਸਿੰਘ ਸਫ਼ਰੀ
22. ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸਰੋਤ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਬਾਣੀ —ਸ਼੍ਰੀ ਅਮਰ ਨਾਥ ਕੌਸਤਵ
23. ਪਾਵਨ ਗਾਥਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ —ਡਾ. ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ ਸਾਬਰ
24. ਸਗਲ ਭਵਨ ਕੇ ਨਾਇਕਾ —ਡਾ. ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਕਲਸੀਆ
25. ਅਮਰ ਜੋਤਾਂ —ਕਵੀ ਭਗਤ ਰਾਮ ਦੀਵਾਨਾ
26. ਵਿਦੇਸ਼ ਯਾਤਰਾ (ਭਾਗ-1) —ਸ਼੍ਰੀ ਅਜੀਤ ਕੁਮਾਰ ਕੰਵਲ (ਯੂ. ਕੇ.)
27. ਵਿਦੇਸ਼ ਯਾਤਰਾ (ਭਾਗ-2) —ਸ਼੍ਰੀ ਅਜੀਤ ਕੁਮਾਰ ਕੰਵਲ (ਯੂ. ਕੇ.)
28. **The Holy Hymns and Miracles of Guru Ravidass Ji** -Mr. Satpal Jassi & Mr. Chain Ram Suman
29. **Miracles of Jagatguru Ravidass Ji** -Mr. Chain Ram Suman
30. ਇਹੁ ਜਨਮ ਤੁਮ੍ਹਾਰੇ ਲੇਖੇ —ਡਾ. ਕੁਲਵੰਤ ਕੌਰ
31. ਸਤਿ ਭਾਖੈ ਰਵਿਦਾਸ — ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰਦੇਵ ਸਿੰਘ
32. सटीक-श्री गुरू रविदास जी -संत वीर सिंह हितकारी, संत सुंदर दास शास्त्री
33. ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਸੰਪ੍ਰਦਾਇ ਸੰਤ ਤੇ ਸਾਧਨਾ ਸਥੱਲ —ਸ਼੍ਰੀ ਸੋਮਨਾਥ ਭਾਰਤੀ
34. रविदासिया धर्म एवं डेरा सच्चखण्ड बल्लां -सिरी राम अर्श

डेरा सच्चखण्ड बल्लां का e-mail पता
sachkhandballan@yahoo.co.in

बेगमपुरा शहर पत्रिका का e-mail पता
begumpurashaher@yahoo.com

बेगमपुरा शहर पत्रिका की
(Internet Service)
www.begumpurashaher.net.